

रिद्धि
Riddhi
The Wealth

विनायका
GANESH

सिद्धि
Siddhi
The Prosperity

प्रतिमा कलानिधि

ALBUM OF HINDU ICONOGRAPHY

आलेखक
पद्मश्री प्रभाशंकर ओ. सोमपुरा
शिल्पविशारद

Padmashri PRABHASHANKAR O. SOMPURA
Shilpavisharad

प्रकाशक :
स्व श्री. बलवतराय प्रभाशकर सोमपुरा और बधुओ
३, पथिक सोसायटी, अहमदाबाद – १३

PUBLISHERS
THE LATE SHRI BALWANTRAI PRABHASHANKAR SOMPURA & BROTHERS
3, PATHIK SOCIETY, AHMEDABAD - 13

प्रकाशक ·
श्री प्रभाशकर ओ सोमपुरा, ३, पथिक सोसायटी,
अहमदावाद – १३.

मुद्रक .
श्री र देसाई, धी बुक सेंटर प्रा. लि.
१०३, छठा रास्ता, सायन (पूर्व), बम्बई – ४०० ०२२

आमुख

भारत मे स्थापत्य-कला का विकास सदा से धार्मिक भावनाओ के साथ सयुक्त रहा है। यद्यपि मूर्ति-पूजा की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे विद्वानो मे काफी मतभेद है, तथापि वेदो मे हमे इस प्रथा का उल्लेख मिलता है। ध्यानस्थ एकाग्रता की सफलता के लिए मूर्ति को एक उपयोगी युक्ति माना गया। भक्तिमार्ग मे पूजा के लिए मूर्ति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व के रूप मे स्वीकार किया गया। प्राचीन काल मे निराकार लिंगोपासना की प्रथा प्रचलित थी, और इस प्रथा के प्रमाण हमे विश्व मे सर्वत्र मिलते हैं। अतरीक्षीय (कॉस्मिक) पुरुष और प्रकृति को सृजन के सार्वभौम आदि-कारणो के रूप मे जाना जाता है। लिंग पुरुष का द्योतक बना, और शक्ति प्रतीक बनी प्रकृति की। आदम और ईव के प्रतीको के रूप मे इन दोनो की पूजा सारे यूरोप के अतिरिक्त मध्य पूर्व मे भी की जाती थी।

वैदिक काल मे यज्ञ-समारोह बलि और स्तुतियो के बिना अधूरे रहते थे। स्तुतियाँ सूर्य, वरुण, यम, इन्द्र और सोम जैसे दृश्य देवताओ को ध्यान मे रखकर की जाती थी। बाद मे अन्य देवताओ की कल्पना कर, उन्हें दृश्य देवताओ से श्रेष्ठतर माना गया। ये देवता थे सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, परीरक्षक विष्णु और ध्वसक शिव। इन नये देवताओ को, उनकी बल-क्षमता के आधार पर, प्रतीकात्मक सिर और भुजाएँ प्रदान की गयी। साधक, साध्य और साधना की त्रयी को भक्त, मोक्ष और प्रतिमा की त्रयी के सदृश माना गया, तथा इन देवताओ को प्रतिष्ठित करने के लिए मदिरो का निर्माण किया गया है।

विश्व के अन्य भागो, जैसे यूरोप, मध्य पूर्व, अरब, मिस्र, बेबीलोन, ईरान, इराक आदि, मे अनेक ऐसी प्रतिमाओ की पूजा की जाती थी, जो स्थानीय भावानुभूतियो की प्रतीक मानी जा सकती हैं। पर मुहम्मद के अतिर्भाव तथा इस्लाम के जन्म के बाद इन प्रतिमाओ पर प्रतिबध लग गये।

भारत मे हमे स्थापत्य-कला की दो विशिष्ट प्रादेशिक शैलियाँ देखने को मिलती हैं उत्तरी, पश्चिमी और पूर्वी भारत मे नागर शैली और तमिल नाडू मे द्रविड शैली।

परम्परागत स्थापत्य-कला पर जो ग्रथ लिखे गये, जैसे वास्तु-शास्त्र आदि, वे सब प्राचीन ऋषियो और मुनियो की कृतियाँ थी। पर, गुप्त-काल से पूर्व, इनमे से किसी भी ग्रथ का अस्तित्व नही था। बाद मे, बहुत कम ग्रथ लिखे गये। नवी और दसवी सदियो तक जितने निर्माण हुए, उनमे इन ग्रथो मे वर्णित नियमो का ही पालन किया गया। ये नियम बारहवी और तेरहवी सदियो मे रचित ग्रथो मे वर्णित नियमो से भिन्न थे।

जिस प्रकार स्थापत्य-कला के व्यापक नियम निश्चित थे, उसी प्रकार प्रतिमा-निर्माण के लिए भी नियमावलियाँ निर्धारित थी, जिन मे स्थानीय विभिन्नताओ के अनुरूप परिवर्तन सभव थे। अनेक सर्वोत्कृष्ट प्रतिमाओ का निर्माण गुप्तकाल मे ही हुआ। उनके अतिरिक्त बारहवी सदी मे भुवनेश्वर, खजुराहो, आबू पर्वत, मोढेरा के मन्दिरो मे प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ तथा होयशल शैली की प्रतिमाएँ भी अत्युत्तम हैं। इन प्रतिमाओ के सौन्दर्य और शिल्प-कौशल पर उन पदार्थो का प्रभाव भी पडा है, जिनसे उनका निर्माण हुआ। सगमरमर से निर्मित प्रतिमाओ मे जटिल विस्तारांकन विशेष रूप से सभव है। तमिल नाडू मे प्राप्त प्रतिमाओ की विलगता और विशिष्टता भी स्पष्ट है।

भारतीय स्थापत्य-कला का परम्परागत ज्ञान गुरुद्वारा शिष्यो तक वाचन या शिक्षण द्वारा पहुँचाया जाता था। तदन्तर, यह ज्ञान पैतृक बनकर, कलाकुशलता द्वारा निर्मित अनेक मदिरो के निर्माण का आधार बना। पर, आगे चलकर शिल्पियो ने मूल ग्रथो का अध्ययन त्याग कर, इस पैतृक ज्ञान पर ही अधिकाधिक अवलम्बित रहना आरभ कर दिया। इसके परिणामस्वरूप, उस ज्ञान का महत्व क्रमश कम होने लगा, जिसे वाचन द्वारा शिष्यो तक पहुँचाया जाता था। उसके अर्थ शिल्पियो को भ्रम मे डालने लगे, तथा उसकी अर्थगर्भता की उपेक्षा होने लगी। हस्तलिखित मूल ग्रथो को पारिवारिक तिजोरियो मे सुरक्षित रखा जाने लगा, तथा उन्हें भी पारिवारिक सम्पति की नाईं अनेक उत्तराधिकारियो मे विभाजित किया जाने लगा। इस प्रकार, खडित होकर, ये ग्रथ तितर-बितर हो गये। अनेक शिल्पियो ने उनकी नकल करते समय सावधानी नही बरती, और इस प्रकार नकल किये गये ग्रथ अनेक त्रुटियो और अशुद्धियो से भरे हैं।

पन्द्रहवी सदी मे, मेवाड के राणा कुभ ने उस काल मे अनाहिलपुर पटना मे रहने वाले तथा भारद्वज-गोत्र के सोमपुरा परिवार के प्रख्यात शिल्पी खेत तथा उनके पुत्र मण्डन को मेवाड मे आकर रहने-बसने तथा अपने लिए अनेकानेक चैत्य और कीर्ति-स्तम्भ निर्मित करने के लिए आमन्त्रित किया। सूत्रधार (शिल्पी) मण्डन असाधारण सस्कृत विद्वान और भवन-निर्माता थे। उन्होने ही इधर-उधर बिखरे और अव्यवस्थित, स्थापत्य-कला से सबधित प्राचीन ग्रथो का सम्पादन कर उनके नये सस्करण तैयार किये। इस प्रकार, उन्होंने वास्तु-शास्त्र को पुनरुज्जीवित कर, उसके अनेक उत्तम ग्रथो की रचना की। उनकी रचनाओ मे प्रमुख हैं वास्तु-मडन, प्रासाद-मडन, वास्तुसार, राज-वल्लभ, रूपमडन, देवता मूर्ति प्रकरण, आदि। उनके छोटे भाई नाथजी ने वास्तु-मजरी की रचना की, तथा उनके पुत्र ने भी कुछ रचनाएँ की। आधुनिक काल मे, प्राय पचास वर्ष पूर्व, अम्बारामजी तथा उनके पुत्र जगन्नाथभाई ने भी कुछ रचनाओ को प्रकाशित करने का प्रयास किया था, पर सफलता मुख्य रूप से मेरे वरिष्ठ मित्र श्री नर्मदाशकरभाई को मिली। उनकी शिल्प-रत्नाकर नामक कृति स्थापत्य-कला के मूलभूत सिद्धातो का परिचय देती है, और कला के प्रसार मे सहायक होगी।

मडन के काल से, भारतीय शिल्पी ने स्थापत्य-कला के सैद्धातिक ग्रथो पर आश्रित रहने के स्थान पर सृजनात्मक ग्रथो पर आश्रित रहना अधिक पसद किया। इसका मुख्य कारण यह था कि सैद्धातिक ग्रथ सस्कृत मे थे, और इसलिए उनमे वर्णित जानकारी या तो लुप्त हो गयी थी, या विस्मृत।

पिछले ४५ वर्षों से इस ग्रथो के लेखक को, विश्वकर्मा के आशीर्वाद से कला और स्थापत्य-कला के सस्कृत मे लिखे गये प्राचीन और मौलिक ग्रथो को पुन प्रकाश मे लाने, और उन्हें सरल अनुवादों तथा चित्रो के साथ प्रकाशित करने की प्रेरणा मिलती रही है। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप, उसने १९६० (विक्रम सवत् २०१६) मे विश्वकर्मा रचित 'दीपार्णव' का सम्पादन किया। १९६७ मे उसने 'क्षीरार्णव'

का सम्पादन पूरा किया। इसके बाद, नम्बर आया इन कृतियो का प्रसादमजरी, वेध-वास्तु-प्रभाकर, जिन-दर्शन-शिल्प, प्रसाद-तिलक, दुर्ग-विधान, भारतीय-शिल्प-सहिता, वास्तु-सार, वास्तु-कला-निधि, प्रासाद-कला-निधि, वास्तु-निघुट (शब्दकोश) आदि। अन्य कृतियों पर कार्य निरन्तर हो रहा है। 'वृक्षार्णव' को छोडकर वास्तु-विद्या और वास्तु-शास्त्र के सम्पादन का कार्य जारी है।

भगवान की अनुकम्पा से, इन प्रकाशनो के माध्यम से मैं अपने सीमित साधनो द्वारा महान विद्वान मडन के कार्य की परम्परा को आगे बढाकर प्रयास कर रहा हूँ कि इस प्राचीन ज्ञान को नवजीवन मिले।

स्थापत्य-कला के अपने पैतृक व्यवसाय को अपना कर, मेरे पूर्वजो ने भूतकाल मे अनेक चैत्यो और स्मारको का निर्माण किया था। पैतृक धन के रूप मे अनेक हस्तलिखित ग्रथ हमारे परिवार मे सुरक्षित हैं। मेरे प्रपितामह श्री रामजीभाई ने सेठ मोती शाह की इच्छाओ का पालन तथा अपने बुद्धि-कौशल का उपयोग करते हुए, शत्रुजय के पवित्र पर्वत की दो चोटियो के बीच फैली एक घाटी को भरकर, उस विशाल विस्तार पर अनेक मदिरो तथा 'देवकुलिकाओ' की शृखलाओ का निर्माण किया। उनकी स्मृति मे दुर्ग के एक द्वार का नाम 'रामपोल' रखा गया।

निराधर शैली के मदिरो की अभिकल्पना का ज्ञान तो शिल्पियो के पास सुरक्षित है, पर वे साधार शैली के मदिरो के निर्माण की कला को भूल गये हैं, क्योकि पिछले ६०० वर्षों मे इस शैली के किसी मदिर का निर्माण नही हुआ। भगवान की कृपा से इस निर्माण-शैली का विशेष ज्ञान हमारे परीवार मे सुरक्षित रहा, तथा सरदार वल्लभभाई पटेल के आदेशानुसार, मैं सोमनाथ मे श्री सोमनाथ साधार महा-प्रासाद का निर्माण करने मे सफल हो पाया। यद्यपि इस निर्माण-शैली की पूरी जानकारी मुझे प्राप्त थी, तथापि इस कठिन कार्य को सम्पन्न करने के लिए मुझे काफी मानसिक परिश्रम करना पडा।

५५-६० के व्यावसायिक अनुभव के कारण मैं गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, मालवा, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आध्र, राजस्थान, केरल तथा बगाल आदि स्थानो मे अनेक मदिरो का निर्माण करने मे सफल हुआ। उन सब मदिरो के योजना-चित्रो, उत्थापनो तथा अन्य वितरणो का इस ग्रथ मे समावेश किया गया है। उनके प्रकाशन का उद्देश्य इस कारण किया जा रहा है कि यह जानकारी शिल्पियो के पास अक्षुण्ण रह सके, और उनका मार्ग-दर्शन करती रहे। पूरी विषयसूची इस प्रकार है

१ प्रतिमा—ताल-मन, प्रमण, आयुध, अलकार आभूषण।

२ त्रि-पुरुष-ब्रह्मा, विष्णु तथा उनकी अवस्थितियाँ और सयोजित अवस्थितियाँ।

३ देवी-स्वरूप-७-मातृकाएँ, महालक्ष्मी, अन्नपूर्णा, त्रिपुर-सुन्दरी आदि, ४५ देवियाँ तथा १२ गौरियाँ।

४ अन्य देवगण-गणेश, पचमुख विश्वकर्मा, हनुमत, नवग्रह, दस दिशाएँ, कार्तिकस्वामी, द्वादश आदित्य (सूर्य)।

५ शिवलिंग, बाणलिंग, मुखलिंग, दस प्रकार की योनियाँ, जलाधार, ब्रह्मशिला, ऋषभ्।

६ देवागना-४० कलिंग अप्सराएँ, १६ ऋषिगण, पितृपरिकार-विभाग, यक्ष, किन्नर, गाधर्व, विद्याधर, व्याल लाछन।

७ जैन-विभाग-मूर्ति-विभाग, परिवार-विभाग, १४ स्वप्न, ८ मगल, घटाकर्ण, भैरव, मणिभद्र, अष्टप्रतिहार।

इस पुस्तक की रचना मे मैं अपने स्वर्गीय ज्येष्ठतम पुत्र बलवतराय, चिरजीव विनोदराय, चिरजीव हर्षदराय, सबसे छोटे पुत्र धनवत-राय, पौत्र चन्द्रकात, परिवार के अन्य सदस्यो, स्वर्गीय चदूलाल भगवानजी, तथा अपने भतीजे स्वर्गीय भगवानजी मगनलाल के सहयोग के प्रति आभारी हूँ।

यद्यपि यह कहना अशिष्टता प्रतीत हो सकती है, तथापि मैं अपने पुत्र चिरजीव धनवतराय को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उसने अग्रेजी और हिन्दी के अनेक ग्रथो का अध्ययन कर, उनके सदर्भ मुझे उपलब्ध किये।

पुस्तक मे रह गयी त्रुटियो के लिए विद्वज्जन, कला-प्रेमी तथा स्थापत्य-कलाकार मित्र मुझे क्षमा करेंगे, कारण कला का क्षत्र असीमित है, और उसके विषय मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

मैं विशेष रूप से श्री करमशीभाई सोमैया तथा श्री शातिलालभाई सोमैया का कृतज्ञ हूँ। दोनो ही साहित्य, कला और धार्मिक जीवन के प्रेमी तथा प्रख्यात उद्योगपति हैं। इन दोनो के कारण ही इस पुस्तक का प्रकाशन उनके ही प्रेस मे सभव हो सका।

मैं प्रमुख सम्पादक डॉक्टर जी एस कोशे, प्रेस के जनरल मैनेजर श्री डी डी करकरिया तथा प्रोडक्शन मैनेजर श्री वी एच पुजार को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ।

श्री ग्वालियर रेयॉन ग्रेशाम (नागदी) श्री बिर्लाजी के तरफसे श्री मडेलियाजीने मुझे आर्थिक प्रोत्साहन दिया। मैं उनका आभारी हूँ।

ग्रथ के बडे और सुदर ब्लॉको को समय पर तथा सफाई से बनाने के लिए मैं गज्जर प्रोसेस स्टूडियो, अहमदाबाद को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥
श्री शुभ भवतु श्री कल्याणमस्तु श्रीरस्तु ॥

महाशिवरात्री,
माघ व १४, शनिवार

विक्रम सम्वत् २०३२
दि २८ फरवरी १९७५

पद्मश्री प्रभाशंकर ओ सोमपुरा
शिल्पविशारद

PREFACE

In India the development of the art of architecture has always been associated with religious sentiments While there are differences of opinion among scholars about the origins of image worship, mention of this practice occurs even in the Vedas The image was found to be a useful device to achieve success in meditative concentration It became a most important element of worship in the Bhakti Marga In ancient times there had existed formless phallic worship, and evidence of this practice occurs all over the world The cosmic Purusha and Prakriti are the universal causes of creation Purusha represented by the Linga and Prakriti represented by Shakti were objects of worship all over Europe and the Middle East in the form of a symbolic Adam and Eve

In Vedic times the ceremony of the yagya was accompanied by Stuties and Sacrifice The Stuties were offered to visible deities such as Surya, Varuna, Yama, Indra and Soma In later times other gods were established, Brahma the creator, Vishnu the preserver, Shiva the destroyer, and the earlier visible deities became subordinate These new gods received symbolic heads and arms numbered according to their powers, at the same time the number of such gods went on increasing The religious trinity consisting of the devotee (Sadhaka), goal (Sadhya), and the means (Sadhana) now corresponded to the trinity of Bhakta, Moksha and Pratima Temples were constructed to house these divinities

In other areas of the world such as Europe, Middle East, Arabia, Egypt, Babylon, Iran, Iraq, etc , various images reflecting local sentiments existed and were prayed to It is only after the coming of Mohammed and the birth of Islam that images were banned

In India we can distinguish mainly two regional styles of architecture, the Nagara style in Northern, Western and Eastern India, the Dravida style in Tamil Nadu

The books on traditional architecture, namely, the *Vastu Shastras*, were the creations of ancient Rishis and Munis, but none of these survived before the Gupta period Subsequent to this few texts were written The constructions erected upto the 9th and 10th centuries A D follow the rules laid down in these texts These rules show differences from the texts of the 12th and 13th centuries

Just as there were comprehensive rules for architecture, so also there existed codes governing the making of images, which were of course subject to local variations Some of the finest images belong to the Gupta period, while those of 12th century temples at Bhuvaneshwara, Khajuraho, Mount Abu, Modhera and the Hoysala school are also excellent

Much of the beauty and workmanship is influenced by the materials used Thus marble permits much more intricate detailing The images found in Tamil Nadu are very distinctive

The traditional knowledge of Indian architecture was transmitted by being recited and taught In later ages this knowledge became hereditary and formed the basis for the numerous temples constructed so skillfully But subsequently the Shilpi began to depend more and more on this hereditary knowledge and to neglect study of the original texts As a result, these recitative texts became of secondary importance, their meanings became confused and their real significance ignored The original handwritten texts remained frequently locked up in family chests, and by being distributed as family property among numerous heirs, they became split up and dispersed Some of the Shilpis copied them out carelessly and thus many mistakes crept in

In the 15th century A D Rana Kumbha of Mewar invited the noted Shilpi Kheta and his son Mandana, belonging to the Sompura family of Bharadwaja gotra, then living at Anahilpur, Patna, to come and settle in Mewar and construct for him numerous monuments Sutradhara (architect) Mandana was an outstanding Sanskrit scholar and builder and it was he who began the work of editing the ancient scattered and confused texts on architecture into new editions By this means he produced numerous fine works and revived the science of Vastu Shastra. Among his works are "Vastu Mandana", "Prasad Mandana", "Vastusara", "Rajavallabha," "Rupamandana", "Devata Murti Prakaran", etc His younger brother Nathji wrote "Vastu Manjari", while his sons also wrote some texts In recent times some 50 years ago, Ambaramji and his son Jagannathbhai attempted to publish some texts, but it was chiefly my elderly friend Shri Narmadashankerbhai who succeeded in writing his "Shilparatnakar", a fundamental book on architecture, which served the cause of art

Since the times of Mandana, the Indian Shilpi has devoted himself more to creative works rather than to works of theory, mainly because these were in Sanskrit, and hence much of this knowledge has been either lost or forgotten

During the last 45 years the author of this work, with the blessings of Visvakarma, and motivated with a desire to revive the ancient and original works in Sanskrit on art and architecture, has published these with simple translations and illustrations He was thus able to edit in 1960 (Vikram Samvat 2016) the "Diparnava" of Visvakarma Then came in 1967 the "Kshirarnava", to be followed by "Prasad Manjari", "Vedha Vastu Prabhakar", "Jina Darshana—Shilpa", "Prasada-Tilaka", "Durga Vidhan", "Bharatiya Shilpa Samhita", "Vastusara", "Vastu Kala Nidhi", "Prasada Kala Nidhi", "Vastu Nighunta" (Shabdakosha) etc , and work on other texts is continuing Except for the "Vrikshamava", work of editing the Vastu Vidya and the Vastu Shastra is in progress

By these publications I am, by God's grace, trying to continue the work of that great scholar Mandana with my limited means and hope thereby to revive this ancient knowledge

My ancestors, following their hereditary profession of architecture, had in the past created many monuments Many hand-written texts form part of our family heritage My great-grand-father Ramjibhai had, as per the wishes of Sheth Moti Shah, filled up a valley situated between two peaks of holy Shatrunjaya and thus created a wide expanse, and has upon this erected numerous temples, and series of 'Devkulikas' according to his genius In his memory one of the gates of the fort was named Rampol

Knowledge of the design of the Nirandhara type of temples had been preserved with the Shilpis but that of the Sandhara type had been forgotten because no such temple had been built during the last 600 years By the grace of God, special knowledge of this kind of structure was preserved in our family, and upon the instructions of Sardar Vallabhbhai Patel I was able to construct Shri Somnath Sandhara Mahaprasada at Somnath Even though this structural knowledge was with me, yet it required a great mental effort to accomplish the difficult task

With my professional experience of 55-60 years I have been able to construct temples at various places such as Gujarat, Saurashtra, Maharashtra, Madhya Pradesh, Malwa, Uttar Pradesh, Karnataka, Andhra, Rajasthan, Kerala, Bengal Their plans, elevations and details have been used in this book I publish them so that this architectural knowledge may remain preserved for the whole class of Shilpis and serve as a guide to them Its contents are —

1 Pratima-Tal-Mana, Praman, Ayudha, Alankar, Abhushana
2 Tri-purusha-Brahma, Vishnu and Shiva, their different aspects and their combined aspect.
3 Devi Swarup-7-Matrikas, Mahalaxmi, Annapurna, Tripura-Sundari, etc , 45-Devis, and the 12 Gauris
4 Other deities—Ganesh, 5-Mukha Visvakarma, Hanumant, Navagraha, the 10 directions Karttikaswami, Dvadash Aditya (Surya)
5 Shivalinga, Banlinga, Mukhalinga, 10-types of Yoni Jaladhara, Brahmashila, Rishabha
6 Devangana—40 Kalinga Apsaras, 16 Rishis, Pittru Parikar-Vibhaga, Yaksha, Kinnara, Gandharvas, Vidyadharas, Vyal Lanchhan
7 Jain Vibhaga—Murti Vibhaga, Parikara Vibhaga, 14-Swapna, 8-Mangala, Ghantakarna, Bhairava, Manibhadra, Ashtaprathara.

I wish here to acknowledge and thank for their contributions my late eldest son Balwantrai, Chiranjivi Vinodrai, Chiranjivi Harshadrai, youngest son Dhanvantrai, grandson Chandrakant, and other members of my family, late Chandulal Bhagwanji, and my nephew late Bhagwanji Maganlal

Even though it may appear immodest to do so, yet I wish to express my thanks to my son Chiranjivi Dhanvantrai for studying numerous works in English and Hindi and providing their references

Scholars art-lovers and architect friends will no doubt excuse the many faults of this book, for art is infinite and so much more can be written on it

I am especially grateful to Shri Karamshibhai Somaiya and Shri Shantilalbhai Somaiya, both of whom are lovers of literature, art and religious life, and are noted industrialists, for having made possible the publication of this book in their press

I am grateful to Shri V S Pramar, Dipl -Ing (Munich), Reader in Architecture, Department of Architecture, M S University of Baroda, for rendering the preface into English so competently

I also wish to thank the Editor-in-Chief, Dr G S Koshe, the General Manager, Shri D D Karkaria, and the Production Manager, Shri B H Pujar

The large and beautiful blocks for this work were made punctually and neatly by Gajjar Process Studio, Ahmedabad, and for this also I thank them

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥
श्री शुभं भवतु । श्री कल्याणमस्तु । श्रीरस्तु ॥

PADMASHRI PRABHASHANKAR O SOMPURA,
Shilpa-Visharad

Vikram Samvat 2032,
1976 A D

प्रतिमा तालमान

आयुध

हस्तमुद्रा

आसन

शरीरमुद्रा

देववाहन

मुकुट के प्रभेद

आभूषण

Measurement of Images

Weapons

Poses of Hands

Asanas

Position of Bodies

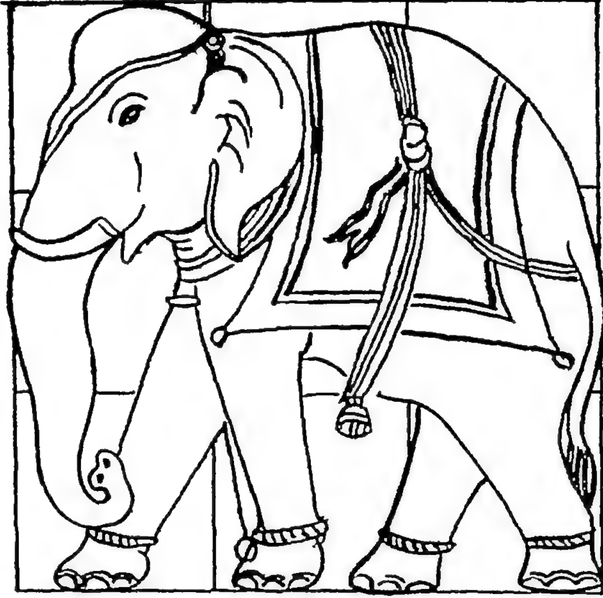
Vehicles of Gods

Diadems

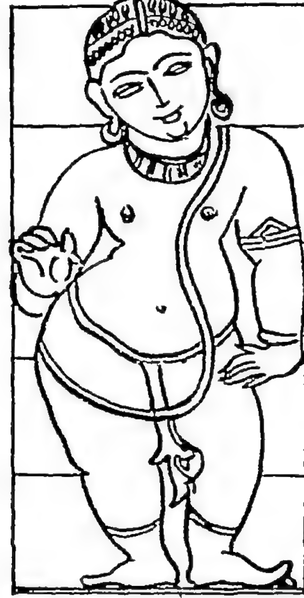
Ornaments

प्रतिमा तालमान Measurement of Images

ELEPHANT 3 TALA



CHILD HEIGHT 5 TALA



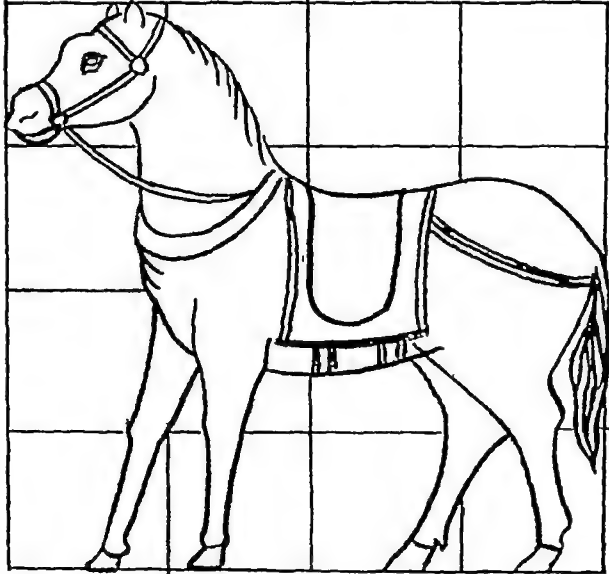
ताल परिमाण



BIRD 2 TALA

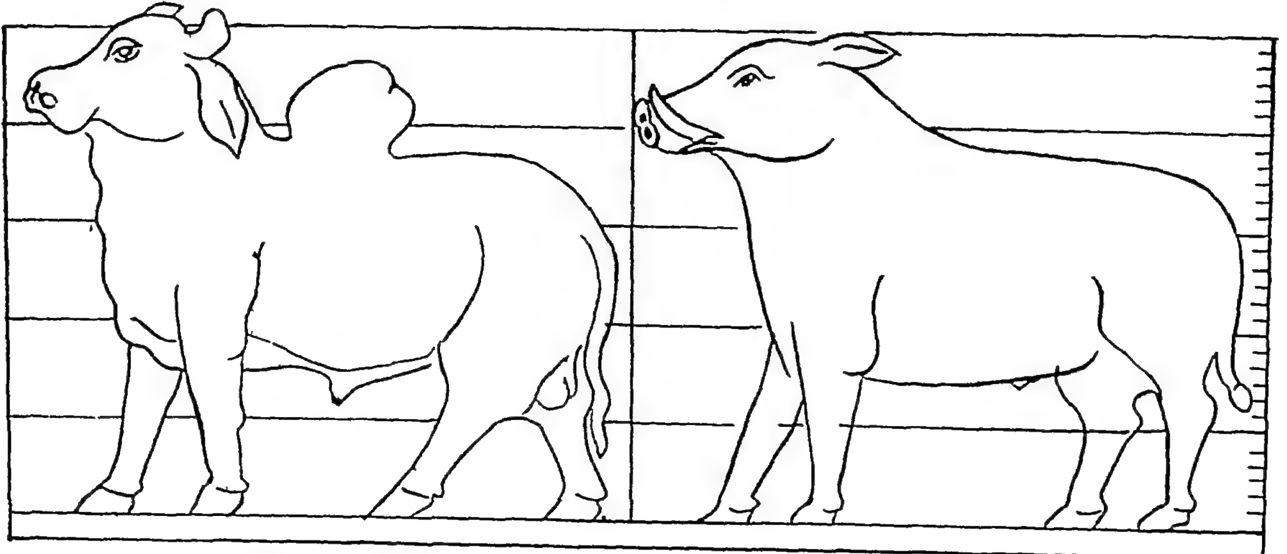
GRASA I TALA

हस २ ताल ग्रास १ ताल



HORSE 4 TALA

अश्व ४ ताल



OX 5 TALA

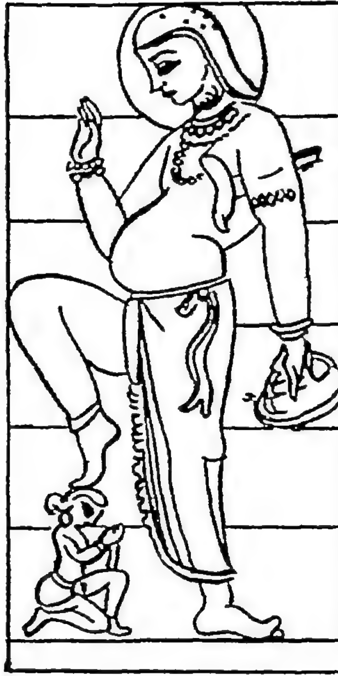
वृषभ ५ ताल

HOG 5 TALA

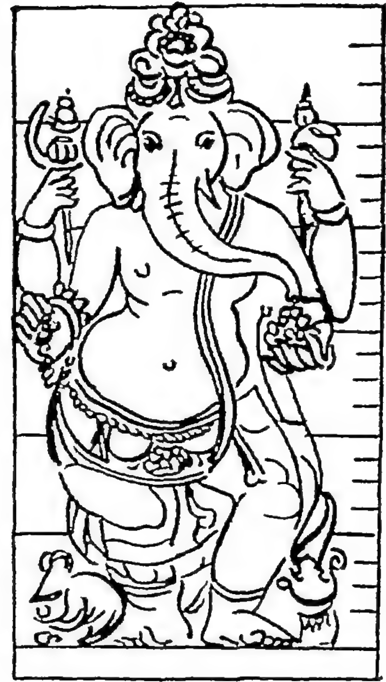
वराह ५ ताल



VARAH
वराह

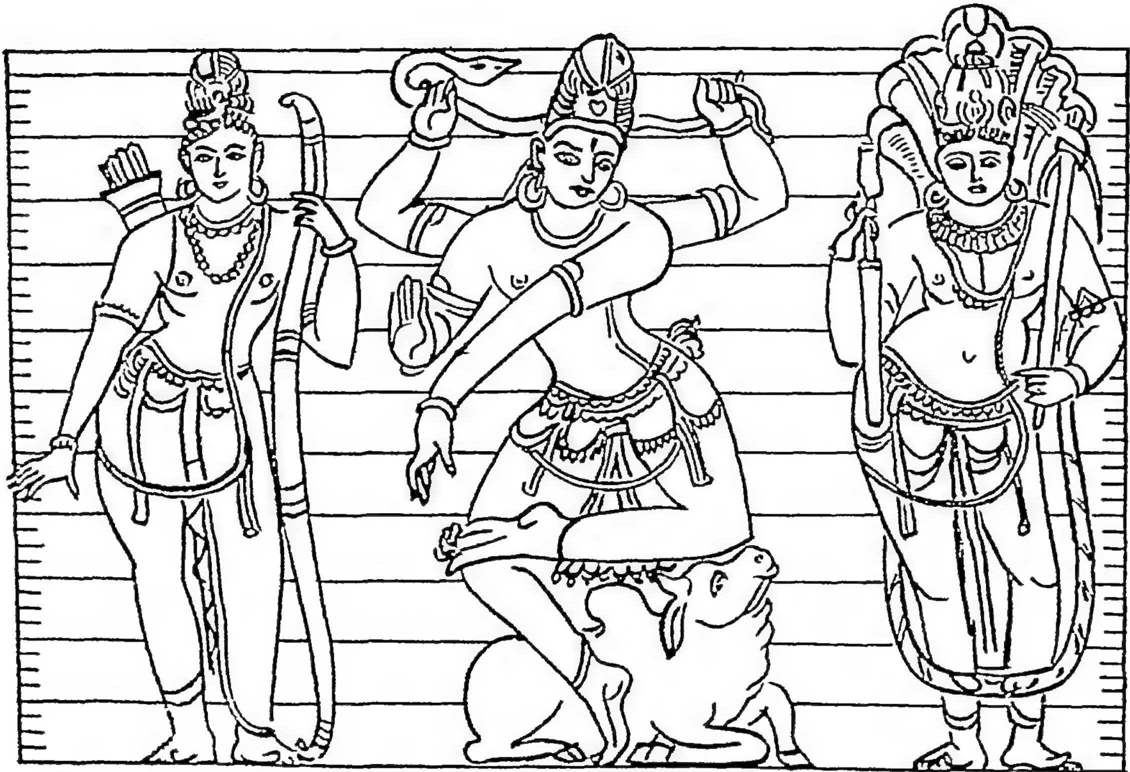


VAMAN
वामन



GANESH
गणेश

१० ताल 10 TAL



10 TALA SRI RAM - 10 TALA RUDRA 10 TALA BALRAM

श्री राम रुद्र बलराम

11 TALA KARTIKEY
11 TALA HANUMANT
11 TALA BHUT

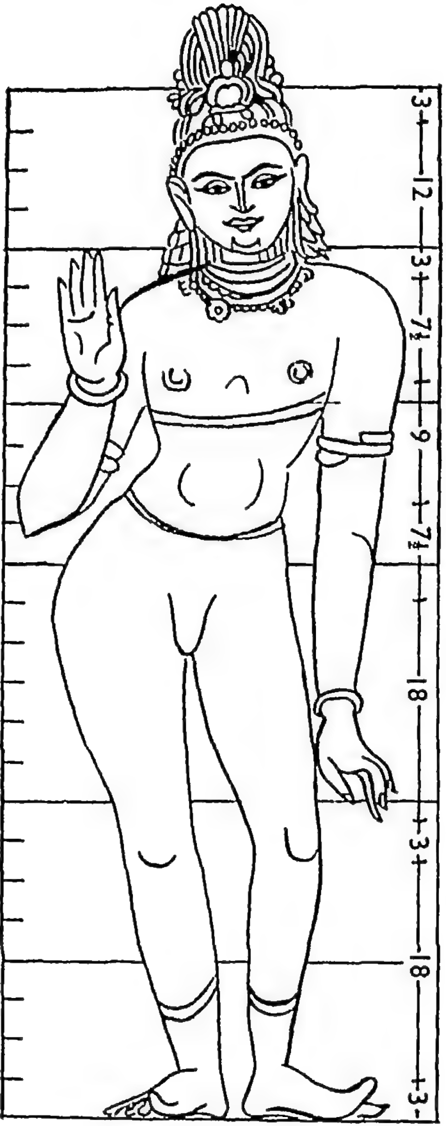
ग्यारह तालमान के कार्तिकेय हनुमन्त और भूत

12 TALA VAITAL
वेताल
१२ ताल

13 TALA RAXAS
राक्षस
१३ ताल

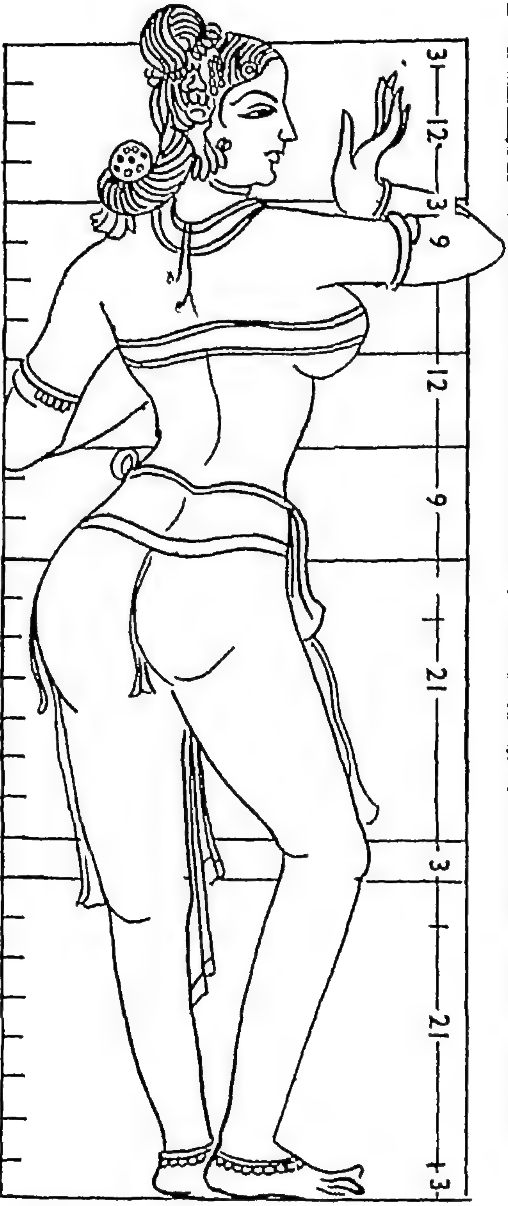
14 TALA DAITYA
दैत्य
१४ ताल

15 BHRAGU RISHI
भृगु ऋषी
१५ ताल



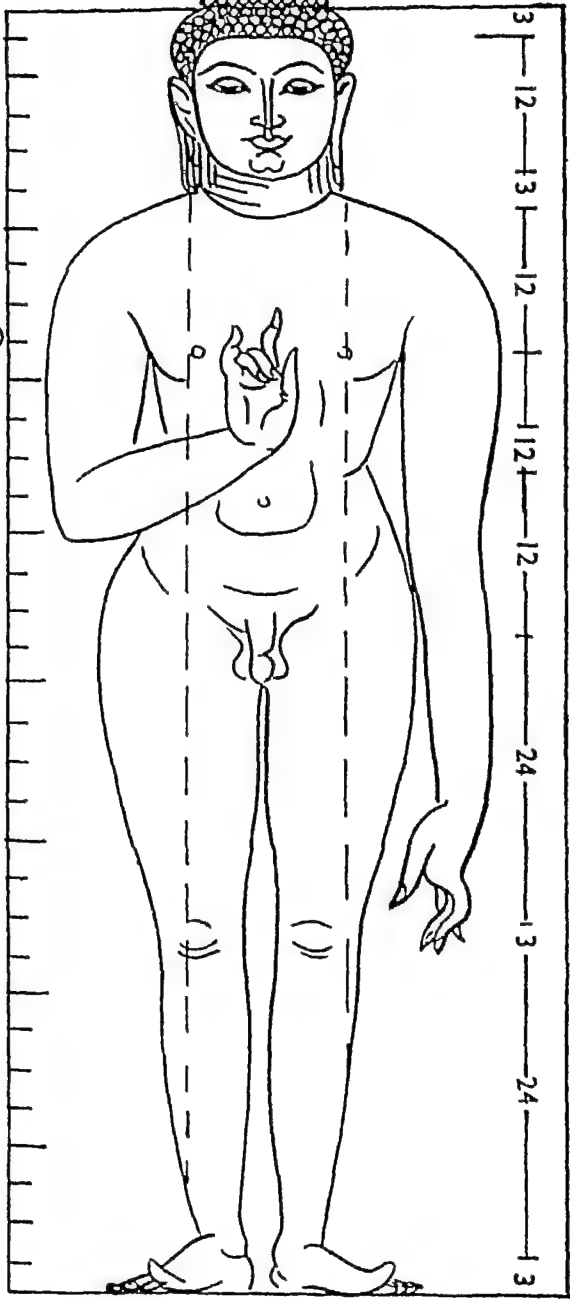
MAN 7 TALA

मनुष्याकृति ७ ताल



DEVANGANA — APSARA 8 TALA

देवागना ८ ताल



DEVATA 9 TALA

देवता ९ ताल

1 TALA

SHIKHA

BRAHMA
PRADESH

1/4

1 TALA

1 TALA

1/4

1 TALA

3 TALA

1 TALA

9
TALA -HEIGHT-

1 TALA

2 TALA

1/4

2 TALA

1/4

3"

12"

3"

12"

12

12'

24"

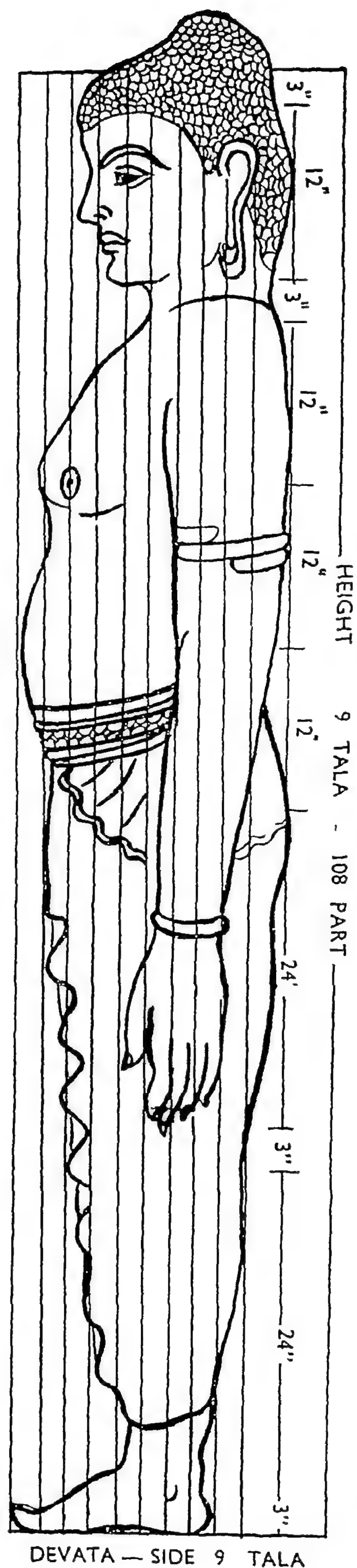
12"

3"

24"

3"

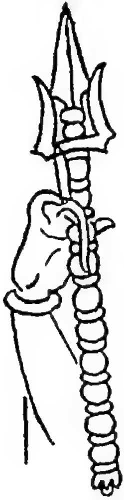
सन्मुख दर्शन (Front view)



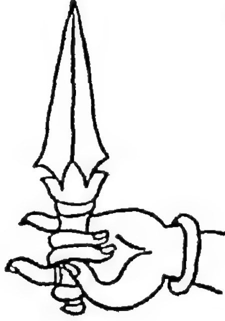
DEVATA — SIDE 9 TALA

आयुध *Ayudhas (Weapons, Musical Instruments, etc)*

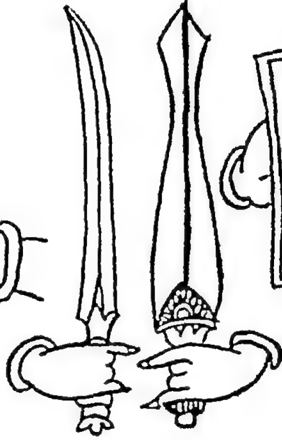
TRISHUL त्रिशूल



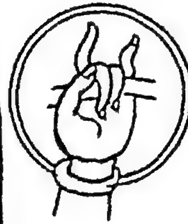
CHHURIKA छूरिका

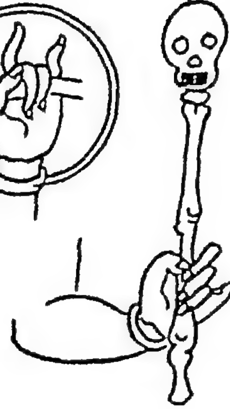


KHADGA खडग



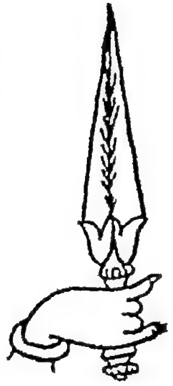
DHAL ढाल

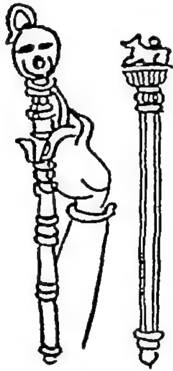




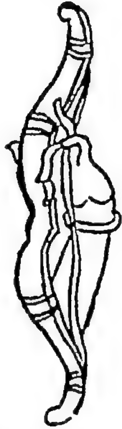
MUND मूंड

RISHTIKA रिष्टीका





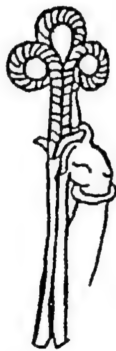
KHATVANG खट्वाग



DHANUSHYA धनुष्य



BAN बाण



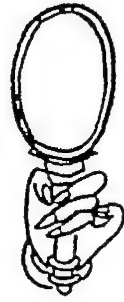
PASH पाश



ANKUSH अकुश



GHANTA घटा



DARPAN दर्पण

DAND दंड



SHAKHA शख



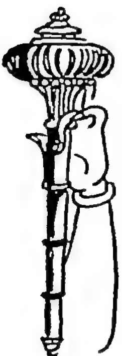
CHAKRA चक्र





PHARSHI फरशी





GADA



VAJRA वज्र

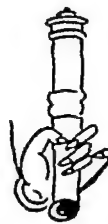




SHAKTI शक्ति



MUSAL मुशळ

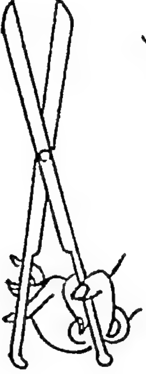


BHUSHANDI मुशडी

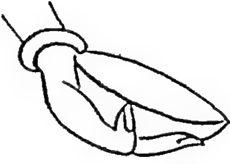


आयुध (Weapons)

KARTIKA
कर्तिका



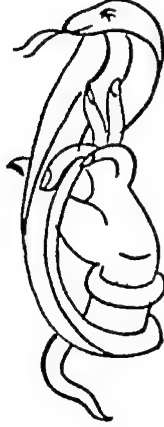
KAPAL
कपाल



MUND
मुड



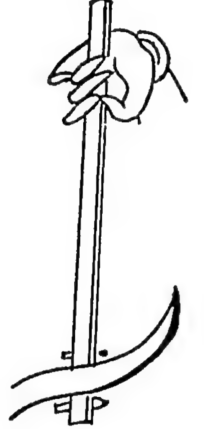
SARP
सर्प

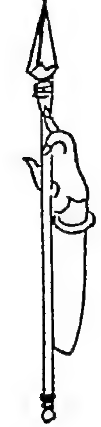


SHING DANT
शीग दत



HAL
हल





KUNT
कुत



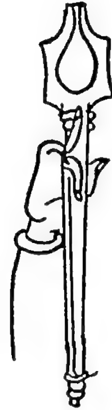
PUSTAK
पुस्तक

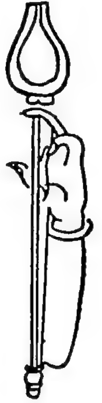


AKSHAMALA
अक्षमाला



KAMANDALA
कमडल

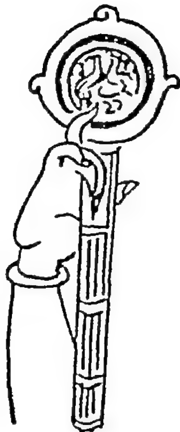




SUCHI
सखा शूचि

आयुध Weapons

KAMAL
कमल



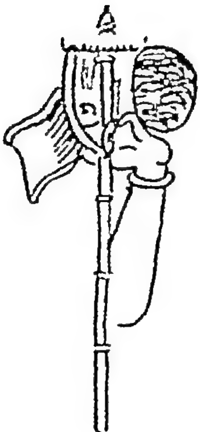
AMBRALUMBI
आम्रलूंबी

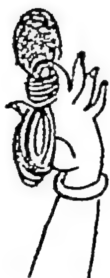


TANK
टंक



DVAJ
ध्वज





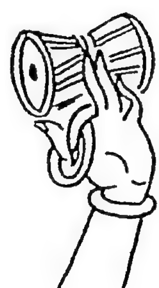
SUTRA
सूत्र



KUMB
कुंभ



MODAK
मोदक



DAMRU
डमरु



PUTRA
पुत्र



KAMBA
कंबा



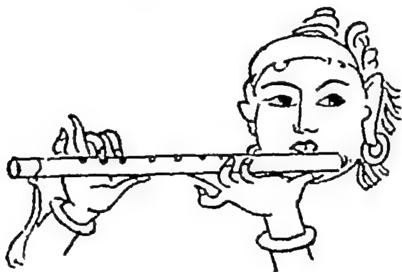
MATULINGA PHAL
मातुलिंग फल



LEKHINI
लेखिनी

आयुध (Weapons)

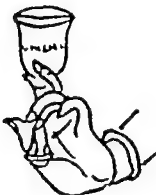
MURLI
वमी मुरली



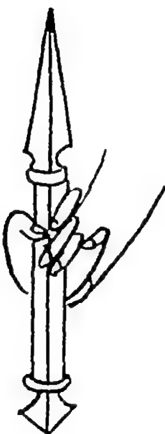
AGNIJWALA
अग्नीज्वाला



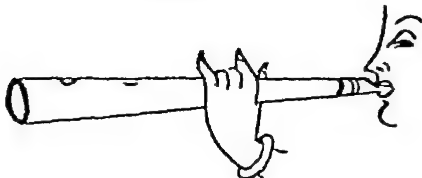
PAN PATRA
पानपात्र



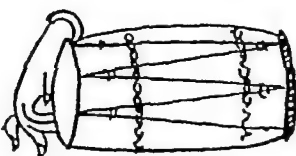
PATTISH
पट्टीश



BHERI
भेरी

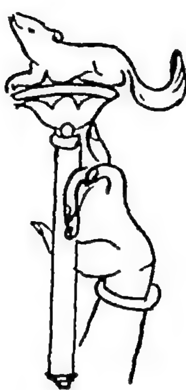


DHOLAK—MRUDANG
ढोलक मृदग

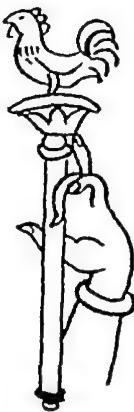




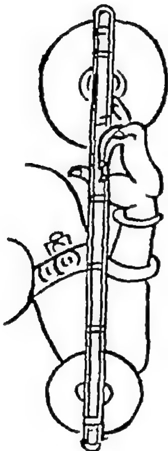
MRUGA
मृग



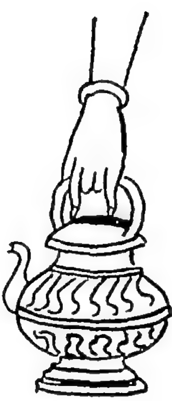
NAKUL
नकुल



KUKUTA
कुक्कुट

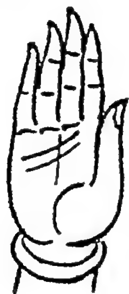


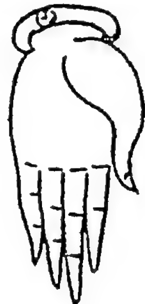
VINA
विणा



KAMANDAL
कमडल

हस्त-मुद्राएं–Hasta Mudras (Poses of Hands)


अभय
ABHAY

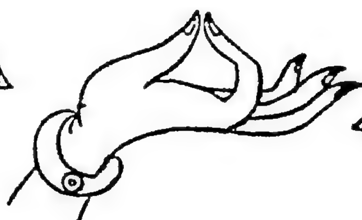

वर्द
VARD

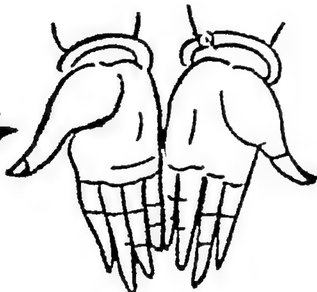

ग्यानमुद्रा
GNANMUDRA

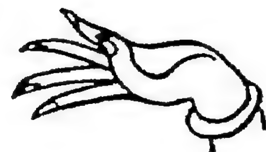

सुचि
SUCHI


कटक
KATAK


तर्जिनी
TARJINI


ग्यानमुद्रा
GNANMUDRA

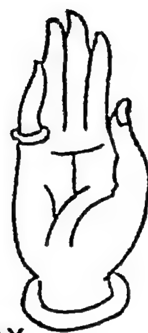

अजली
ANJALĪ

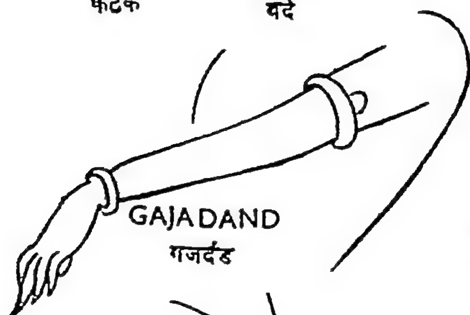

विस्मय
VISMAY


KATAK
कटक


VARD
वर्द


TARJANI
तर्जनी


ABHAY
अभय


GAJADAND
गजदंड

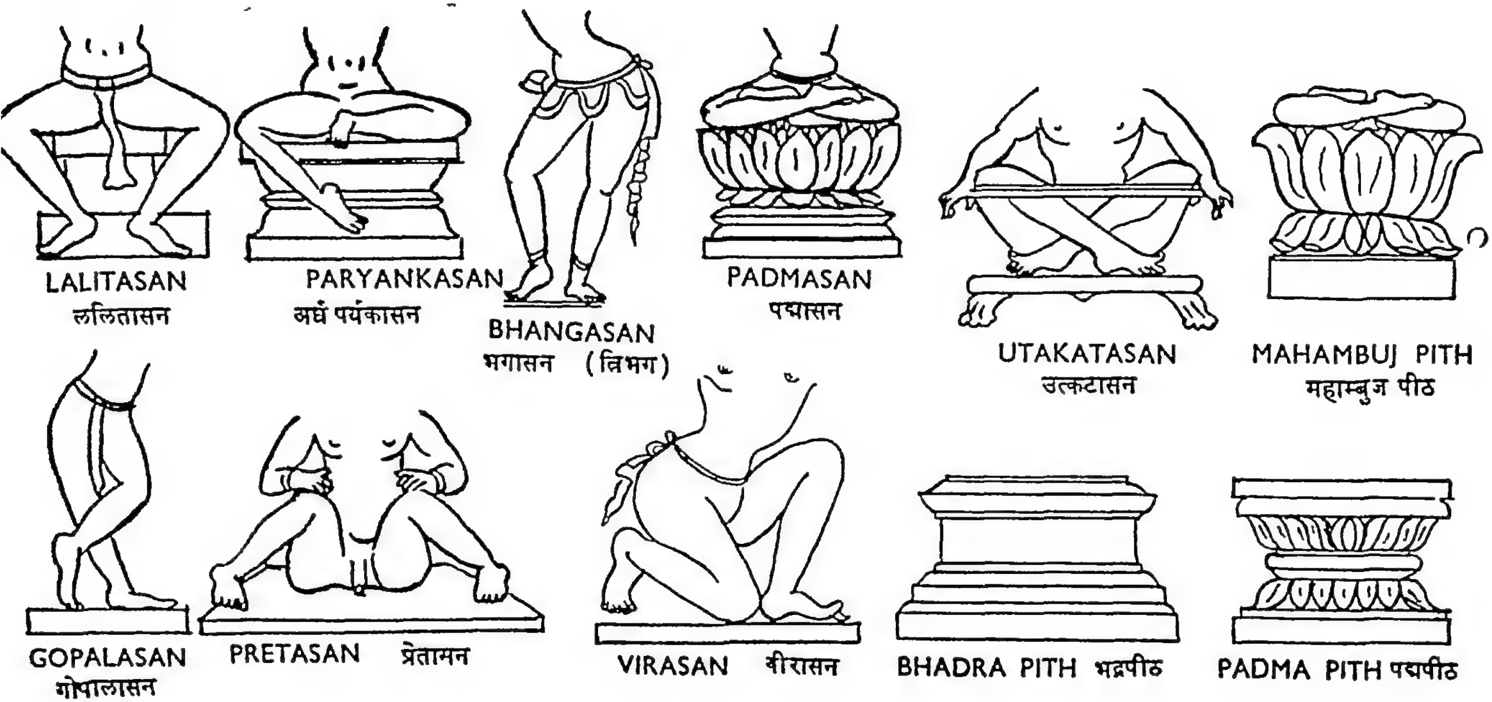

SUCHI
सुचि


GNAN MUDRA
ग्यानमुद्रा


WYAKHYAN MUDRA
व्याख्यानमुद्रा


KATYAVALAMBI MUDRA
कटयावलवीत मुद्रा

आसन–Asanas



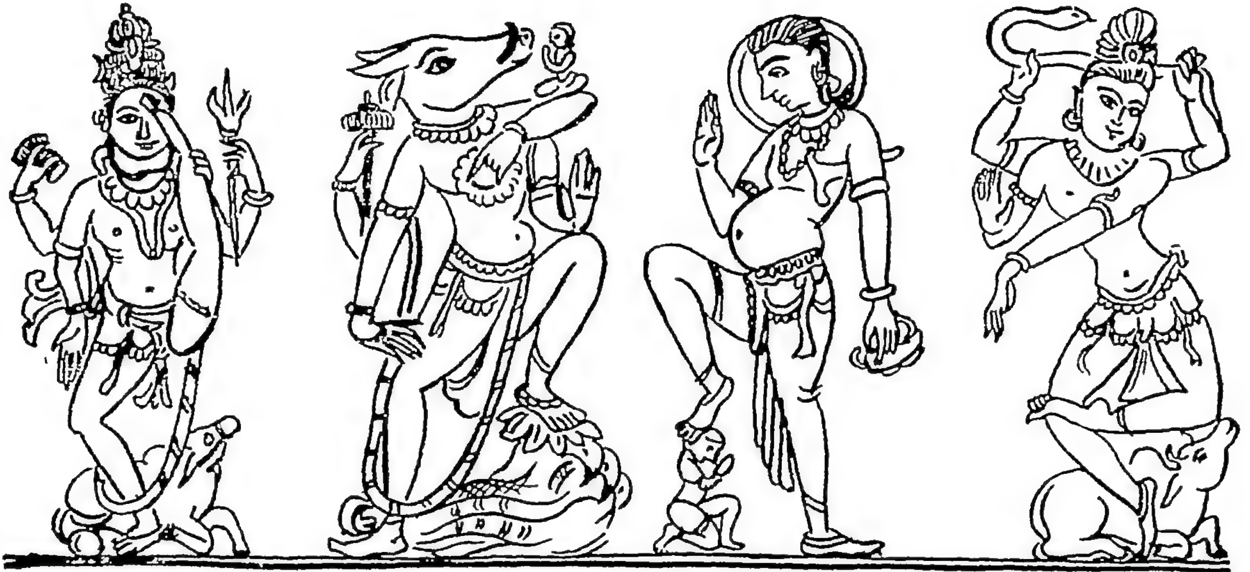
करपुटमुद्रा
KARPUTMUDRA

सिंहकर्ण
SINHA KARNA

गजहम्त
GAJHASTA

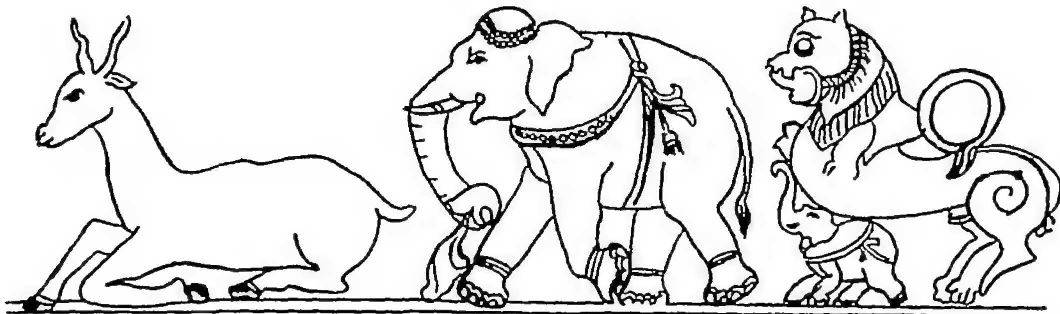
भूमिस्पर्श
BHUMISPARSH

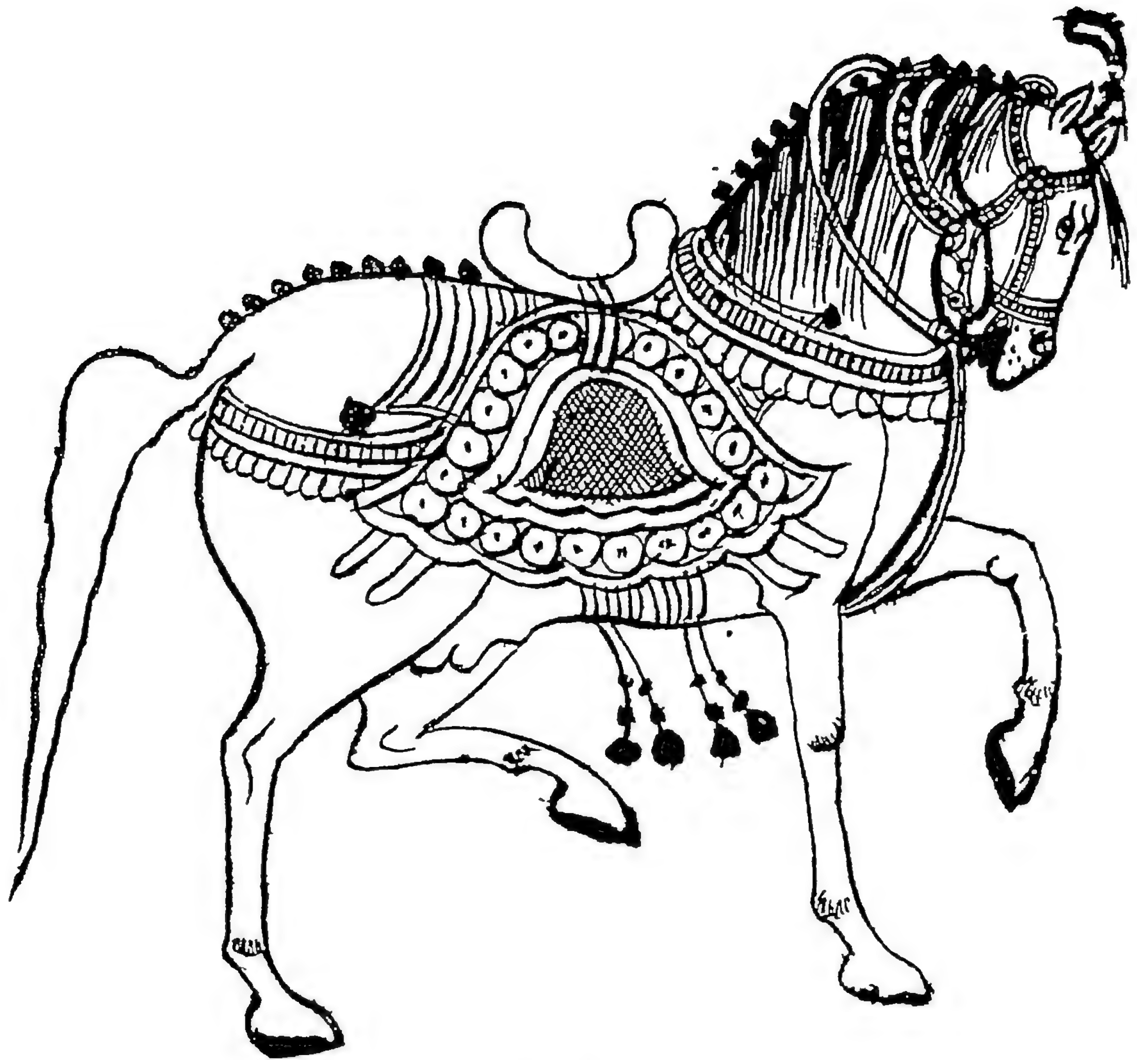
कट्यवलंबित
KATYAVALAMBIT



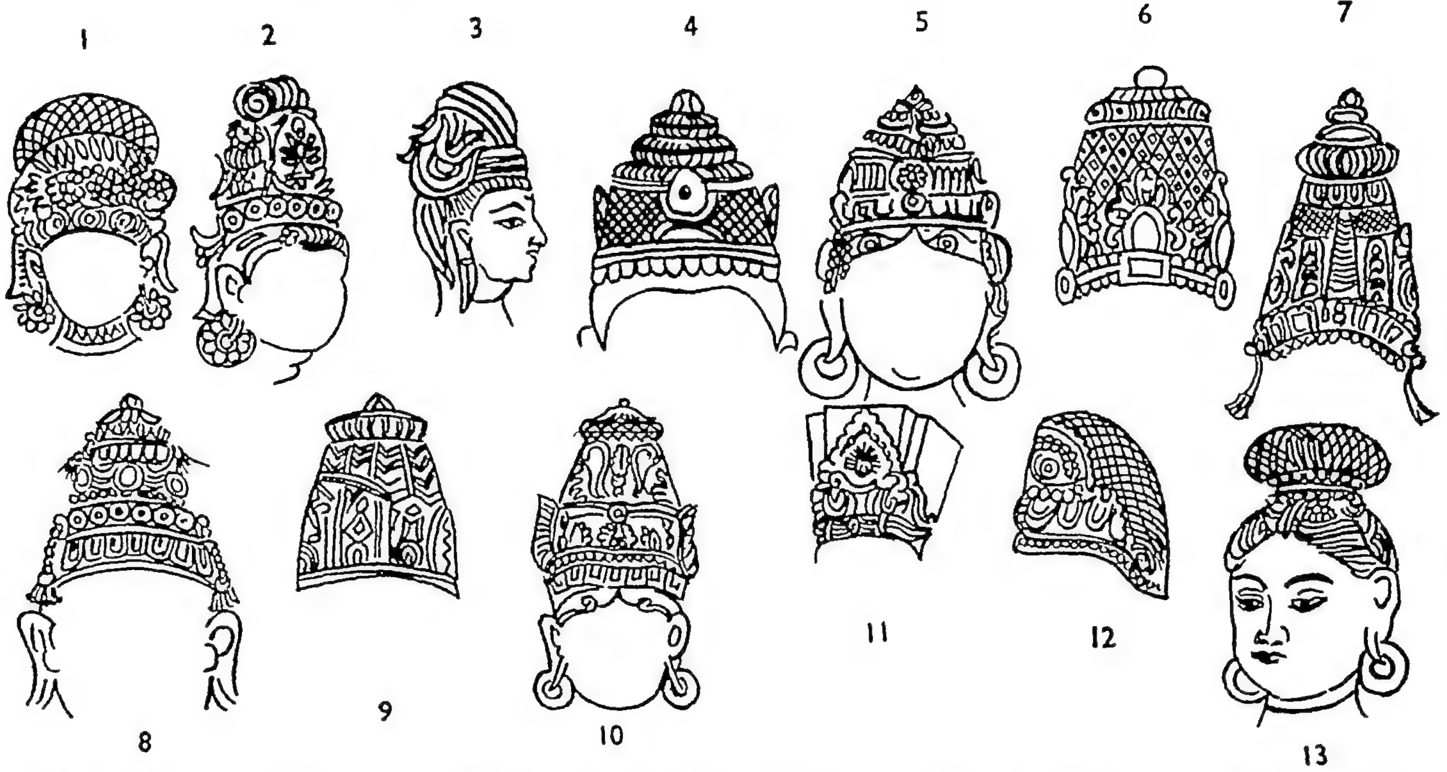
देववाहन (Vehicles of Gods)





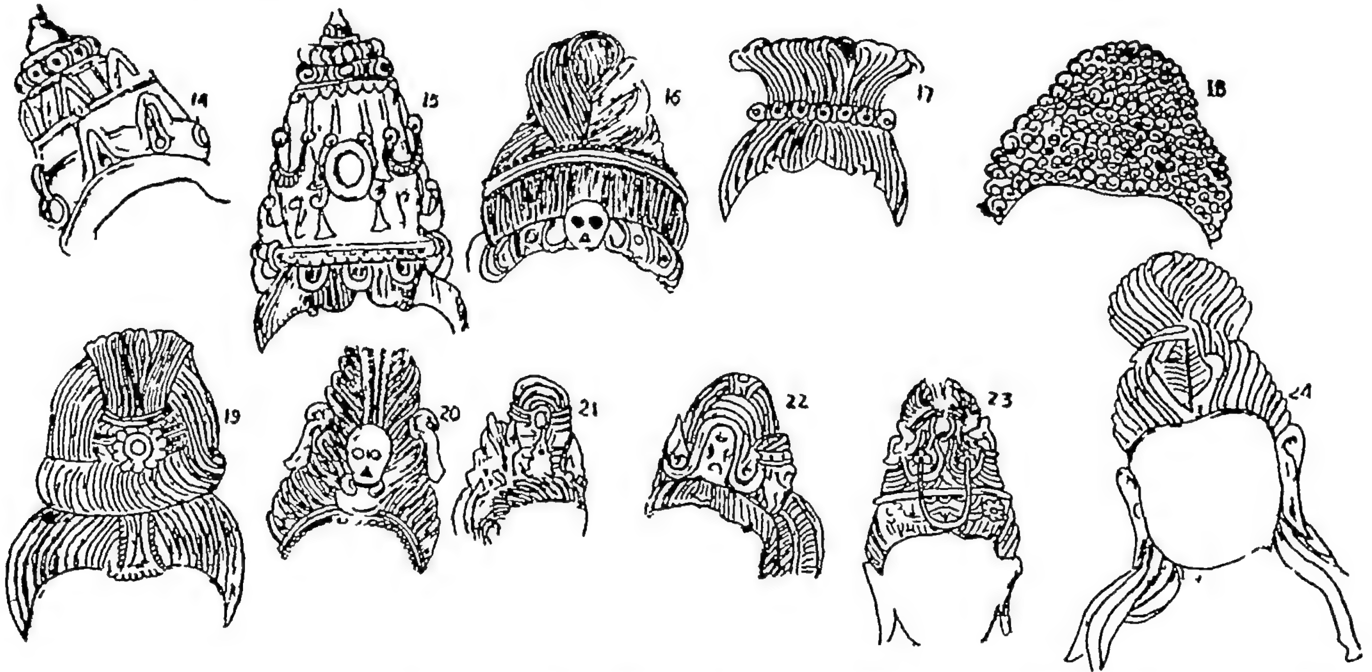


अश्व *Ashva*



मुकुट के प्रभेद (१) धम्मिला (२-३) जटामुकुट (४-५) करड मुकुट (होयसल) (६) करड गुप्त चालुक्य (७-८) किरीट मुकुट (मथुरा) होयसल (९-११) करड (गुजरात) (१०) मुकुट (जावा-सुमात्रा) (१२) केशबध (१३) धम्मिला (द्रविड)

Different Diadems 1 *Dhammilā* 2-3 *Jatā Mukuta* 4-5 *Karanda Mukuta* (*Hoysal*) 6 *Karanda* (*Gupta-Chalukya-Pallava*) 7-8 *Kirita Mukuta* (*Mathurā-Hoysal*) 9 *Karanda* (*Gujarat*) 10 *Mukuta* (*Javā-Sumātrā*) 11 *Karanda* (*Gujarat*) 12 *Kesh Bandha* 13 *Dhammila* (*Dravida*)



(१४) करड (१५) किरीट (१६) शिरस्त्राण (१७) जटा मुकुट (केशबध) (१८) कुतल (१९) जटा मुकुट केशबध (२०) मयुरपखी (२१-२३) केशबध (२४) धम्मिला

14 *Karanda Mukuta* 15 *Kirit Mukuta* 16 *Shirastrāna* 18 *Kuntal* 17-19 *Jatā Mukuta Kesh Bandha* 20 *Mayur Pankhi Jatā Mukuta* 21-23 *Kesh Bandh* 24 *Dhammila*

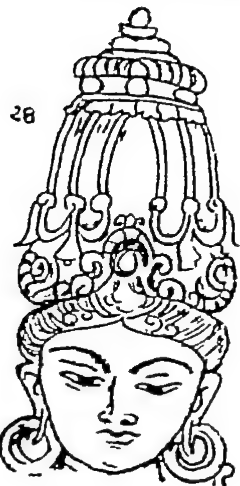


(२५) जटामुकुट, अलकचुडक
25 *Jatā Mukuta, Alakachudaka*

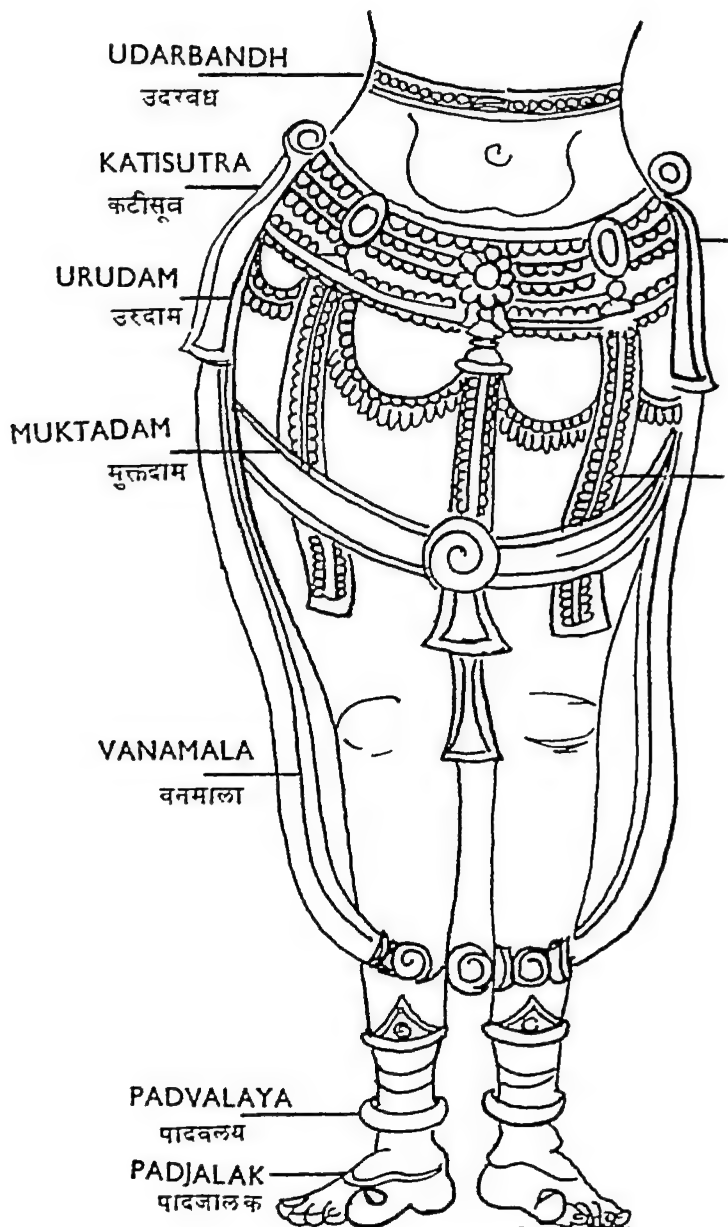


(२६) किरीट
26 *Kirıt Mukuta*



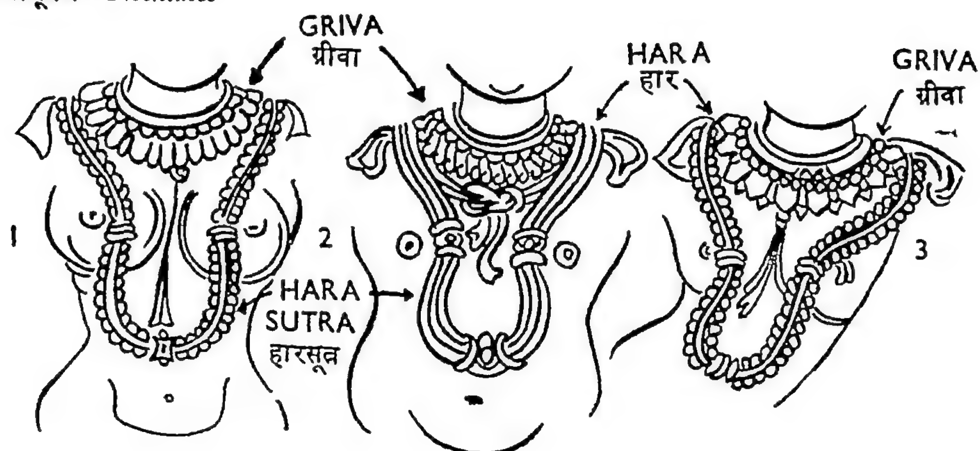


(२७) करड
27 *Karanda*

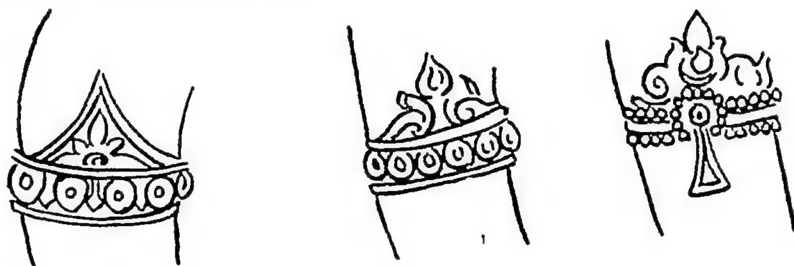


आभूषण
Ornaments

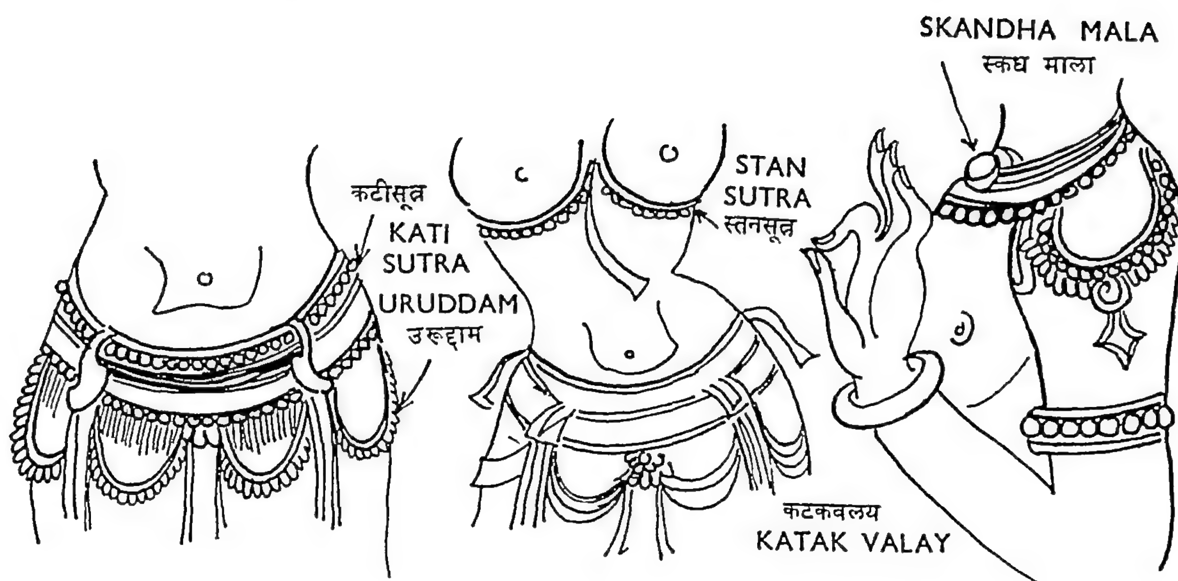
गले के आभूषण *Necklaces*

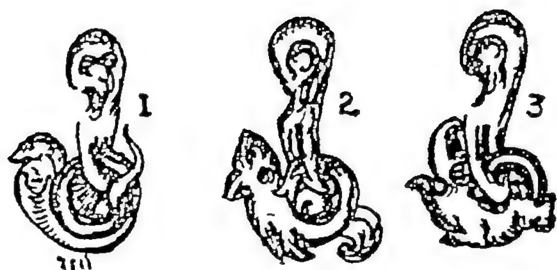


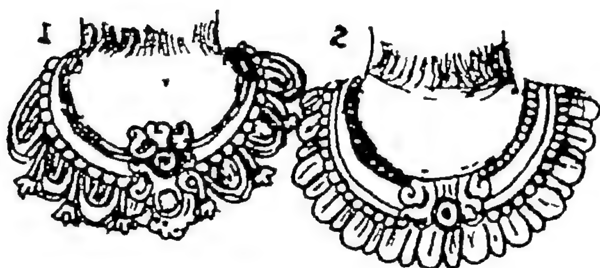
बाजुबंध *Baju Bandha (Ornaments of Arm)*



कटि आभरण *Kati Abharana*



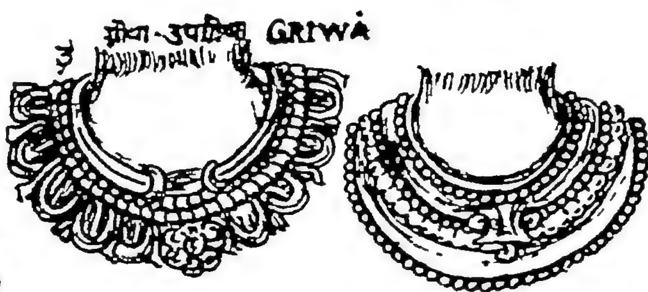




KUNDAL कुंडल

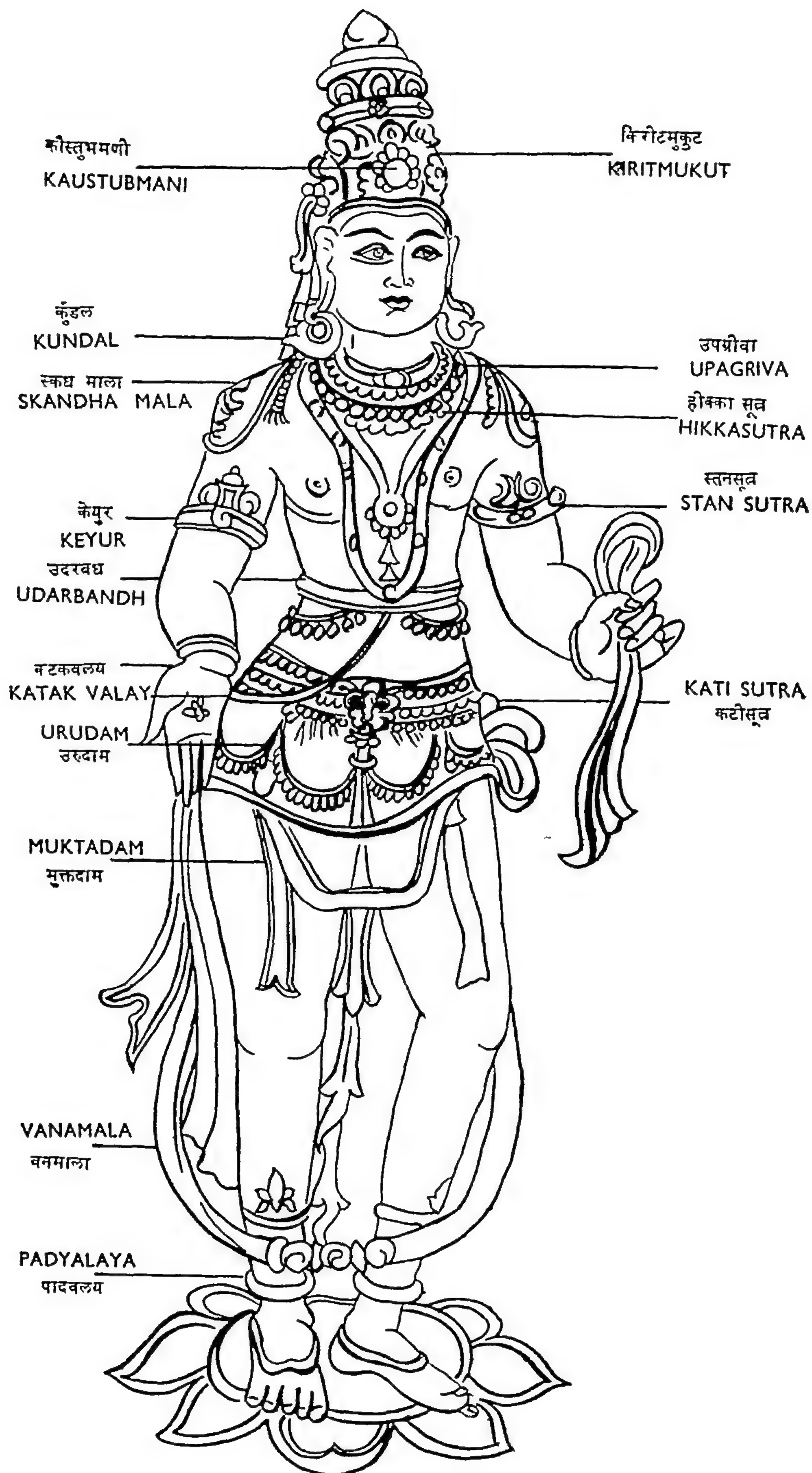
ग्रीवा-उपग्रीव GRIWA





कुण्डल
Kundala (Ear-Rings)

गले के आभूषण
Necklaces


कौस्तुभमणी
KAUSTUBMANI
किरीटमुकुट
KIRITMUKUT
कुंडल
KUNDAL
उपग्रीवा
UPAGRIVA
स्कध माला
SKANDHA MALA
हीक्का सूत्र
HIKKASUTRA
स्तनसूत्र
STAN SUTRA
केयुर
KEYUR
उदरबध
UDARBANDH
कटकवलय
KATAK VALAY
KATI SUTRA
कटीसूत्र
URUDAM
उरुदाम
MUKTADAM
मुक्तदाम
VANAMALA
वनमाला
PADYALAYA
पादवलय

देव और देवियाँ

दशावतार

शिव के विभिन्न स्वरूप

सप्तमातृकाओं

गवाक्ष

कालियामर्दन

शिव-मीनाक्षी विवाह

धन्वंतरी

Gods and Godesses

Ten Incarnations

Forms of Shiva

The Seven Mothers

Gavaksha

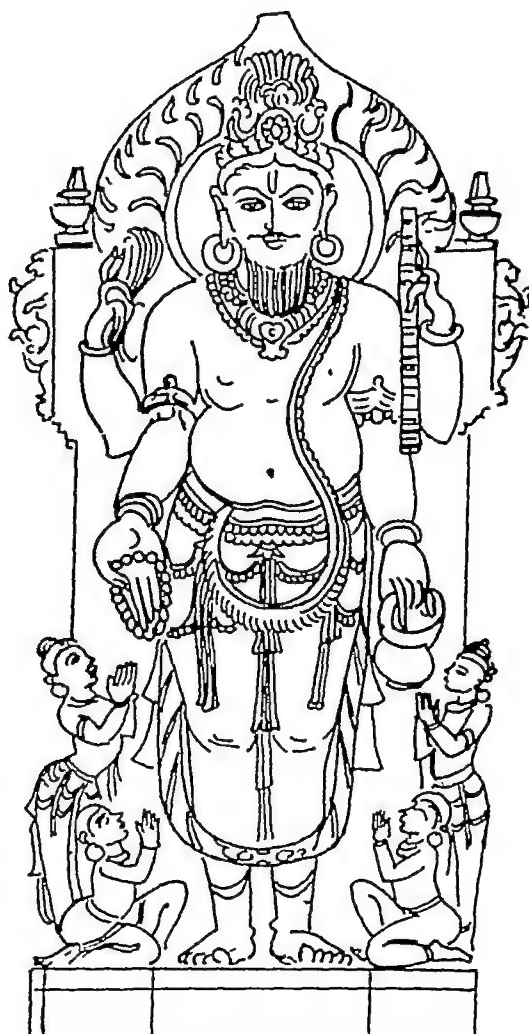
Kaliya-Mardana

Shiva - Meenakshi Marriage

Dhanvantari



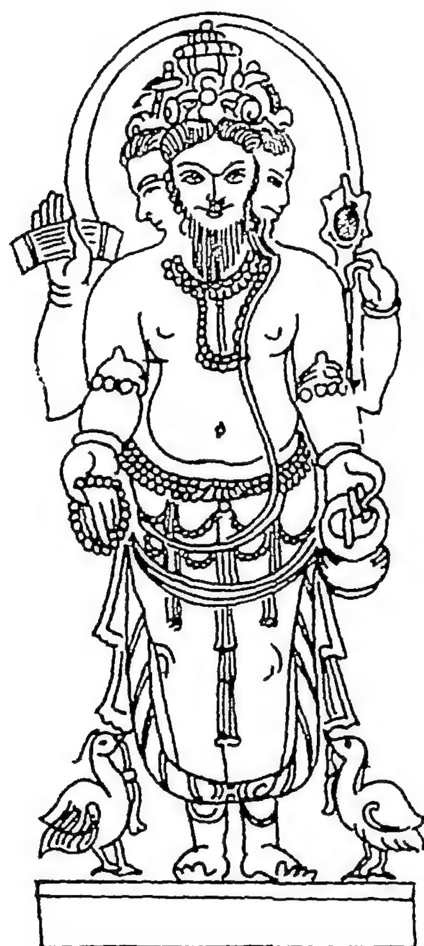
विनायक
Vināyaka
The Son of Shiva



विश्वकर्मा सपरिवार
Vishvakarmā
with family



सरस्वती
Saraswati,
The Godess of Wisdom



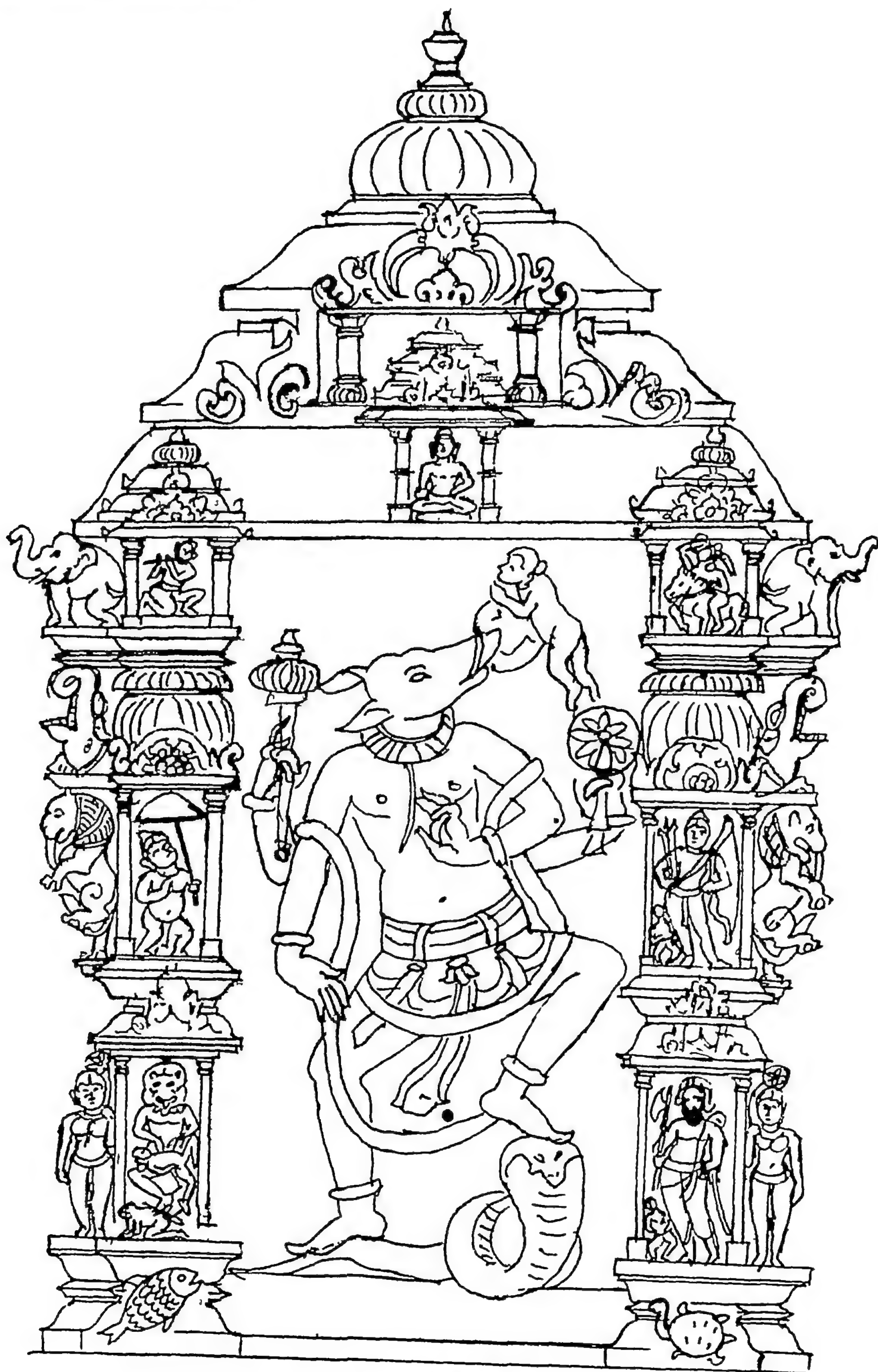
ब्रह्मा
Brahmā,
The Creator of Universe



विष्णु
Vishnu,
The Preserver



महेश
Mahesh,
The God of Destruction



परिकरयुक्त वराह मूर्ति

The Varāha with Parikara

शिव *Shiva* विष्णु *Vishnu* ब्रह्मा *Brahmā*



शिवताडव
Shiva Dancing Tāndava

दशावतार विष्णु
Ten Incarnations



भगवान हयग्रीव
God Hayagriva

NARAYAN

दशावतारसह नारायण विष्णु (परिकर)
Nārāyan Vishnu with his Ten Incarnations



जया | गरुड | ब्रह्मा महेश सह शेषशायी विष्णु | नारद | विजया

Jayā | Garuda | Sheshshayi Vishnu with Brahmā, Mahesh | Nārada | Vijayā



मत्स्यावतार
Matsya-Avatara,
The Fish-Incarnation



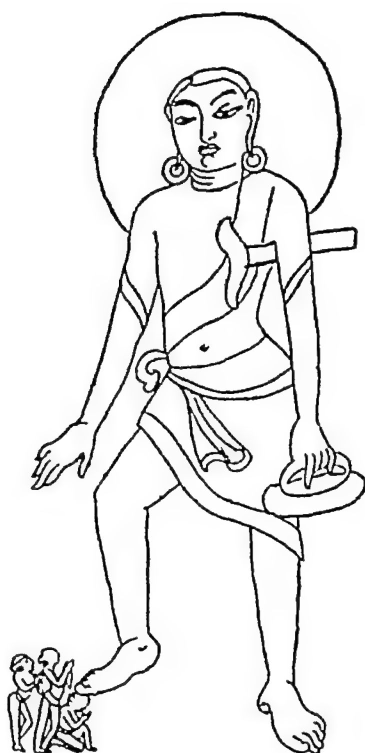
कुर्मावतार
Kurmā Avatar,
The Tortoise Incarnation



वराहावतार
Varāha-Avatar,
The Boar Incarnation



नृसिह अवतार
Nrusimha-Avatar,
The Man-Lion Incarnation



वामन अवतार
Vāmana-Avatar,
The Dwarf Incarnation



परशुराम
Parshu-Rām



कृष्णावतार *Krishna-Avatār,*
The Embodiment of Divine Joy



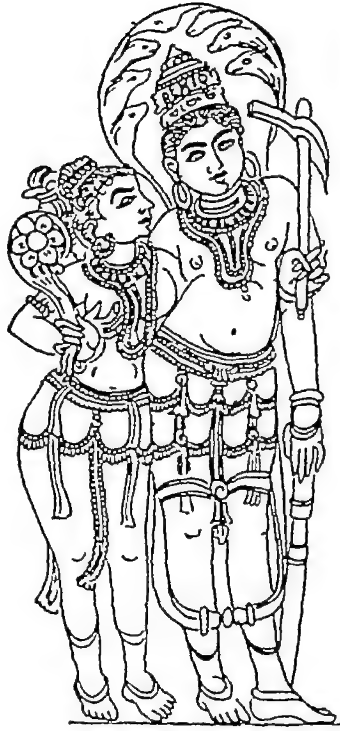
बुद्धावतार
Buddha-Avatār



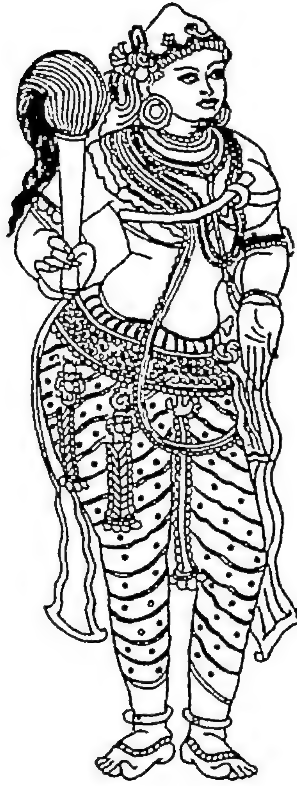
कल्की अवतार *Kalki-Avatār*
(Yet to come to re-establish a Golden Age)



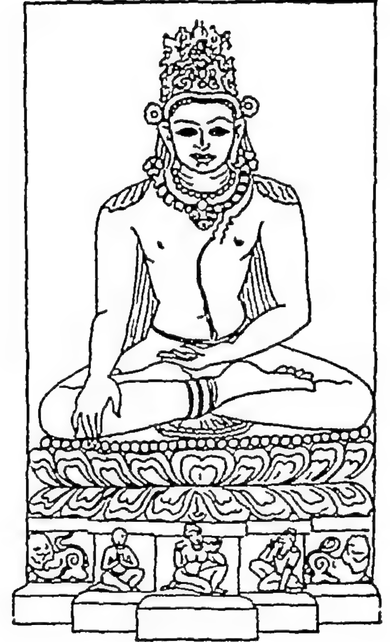
बुद्ध
Buddha



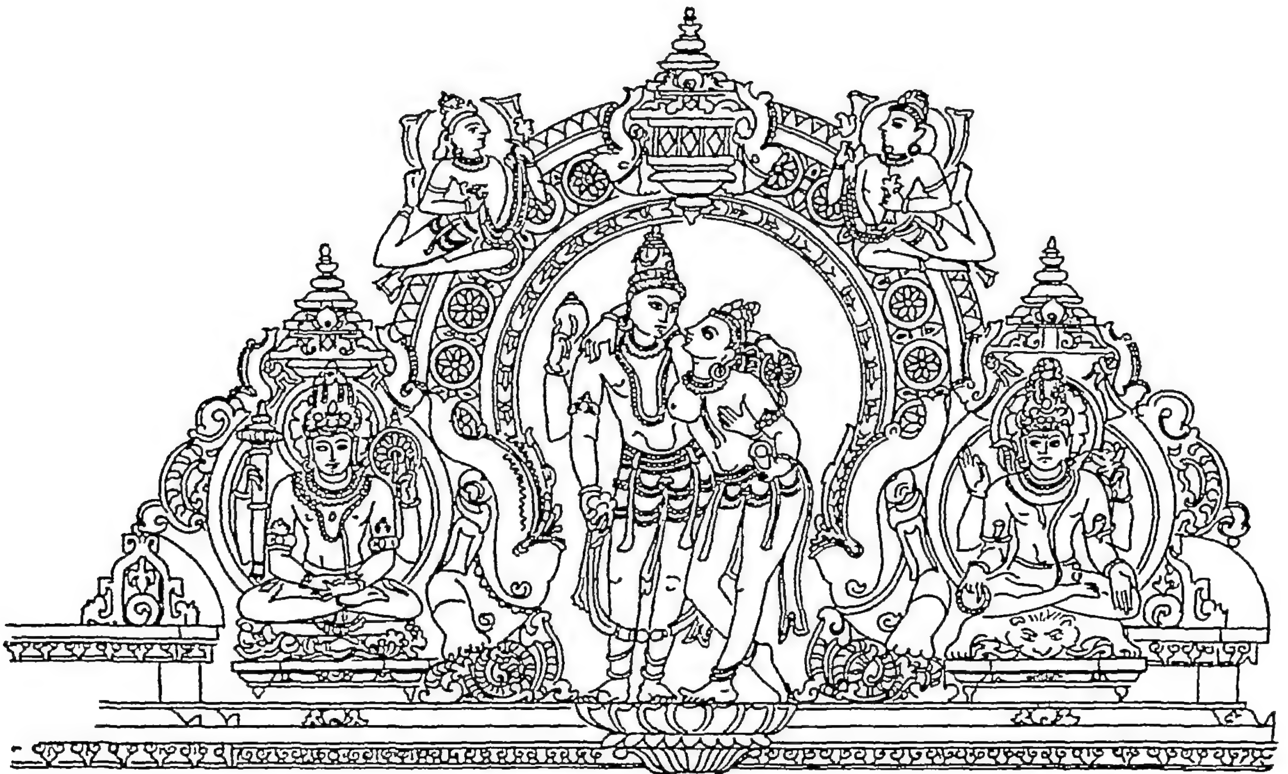
बलराम-रेवती
Balarāma-Revati



चामरधारिणी देवाङ्गना
Damsel with Fly-Whisk



बुद्ध भूमि-स्पर्श मुद्रा
Buddha in Bhumi-Sparsha Mudrā



ब्रह्मा *Brahmā* विष्णु *Vishnu* महेश *Mahesh*



दशावतारसह विष्णु-लक्ष्मी *Vishnu-Lakshmi with Ten Incarnations*

सप्तमातृकाओं The Seven Mothers



दशावतार विष्णु Ten Incarnations of Vishnu



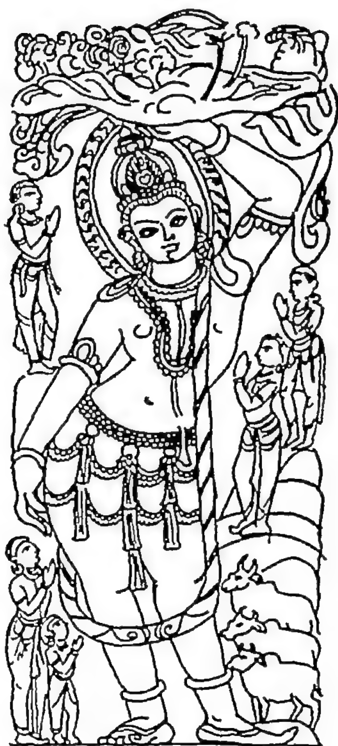




कालियामर्दन
Kālıya-Mardana



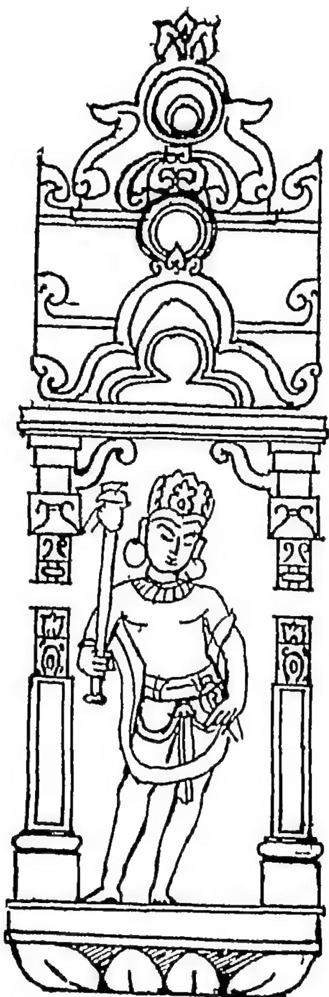
राधाकृष्ण
Rādha-Krishna



गोवर्धनधारी कृष्ण
Krishna, The Rescuer of Earth

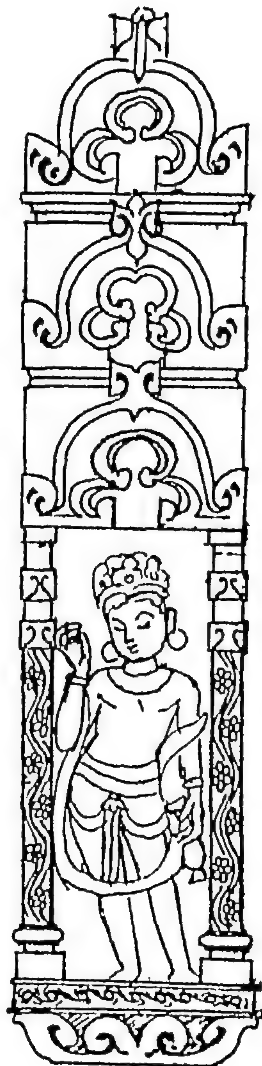


बलराम
Balarāma



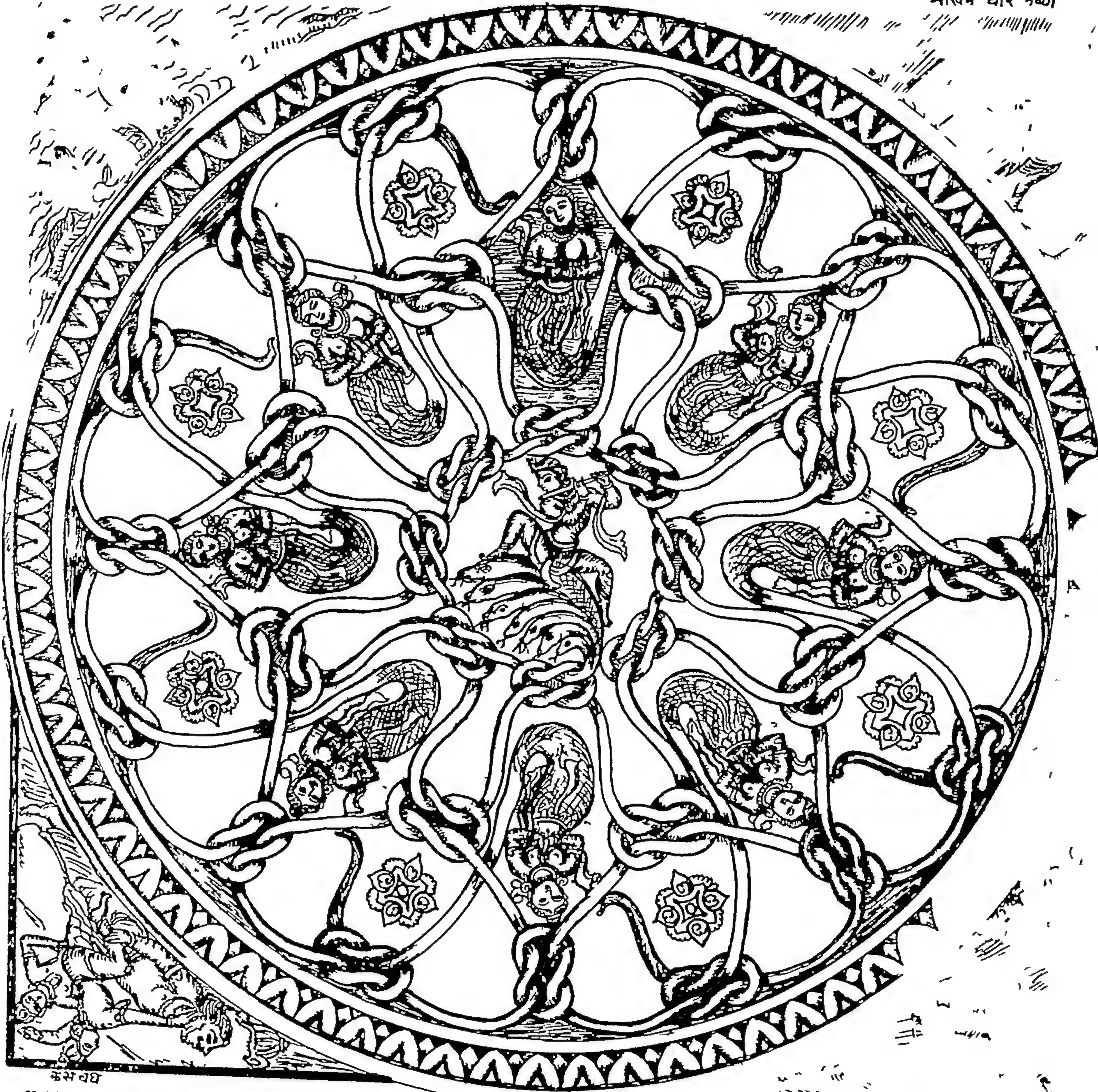


देवगवाक्ष
Gavāksha with Deities





सिंहारूढ शिव
Shiva sitting on Lion



Kaliya-Mardana

कालिया मर्दन



Kaliya-Mardana



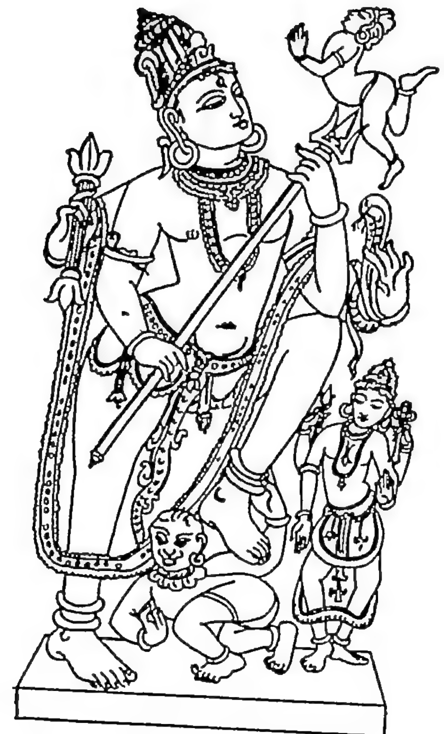
उमा
Umā

योगेश्वर
Yogeshwar Shiva

पार्वती
Parvati



शिव नृत्य
Dancing Shiva



अंधकासुर वध
Shiva killing Andhakasura, The Demon



शिव का गजसहार
Shiva killing Elephant



शिव
Shiva

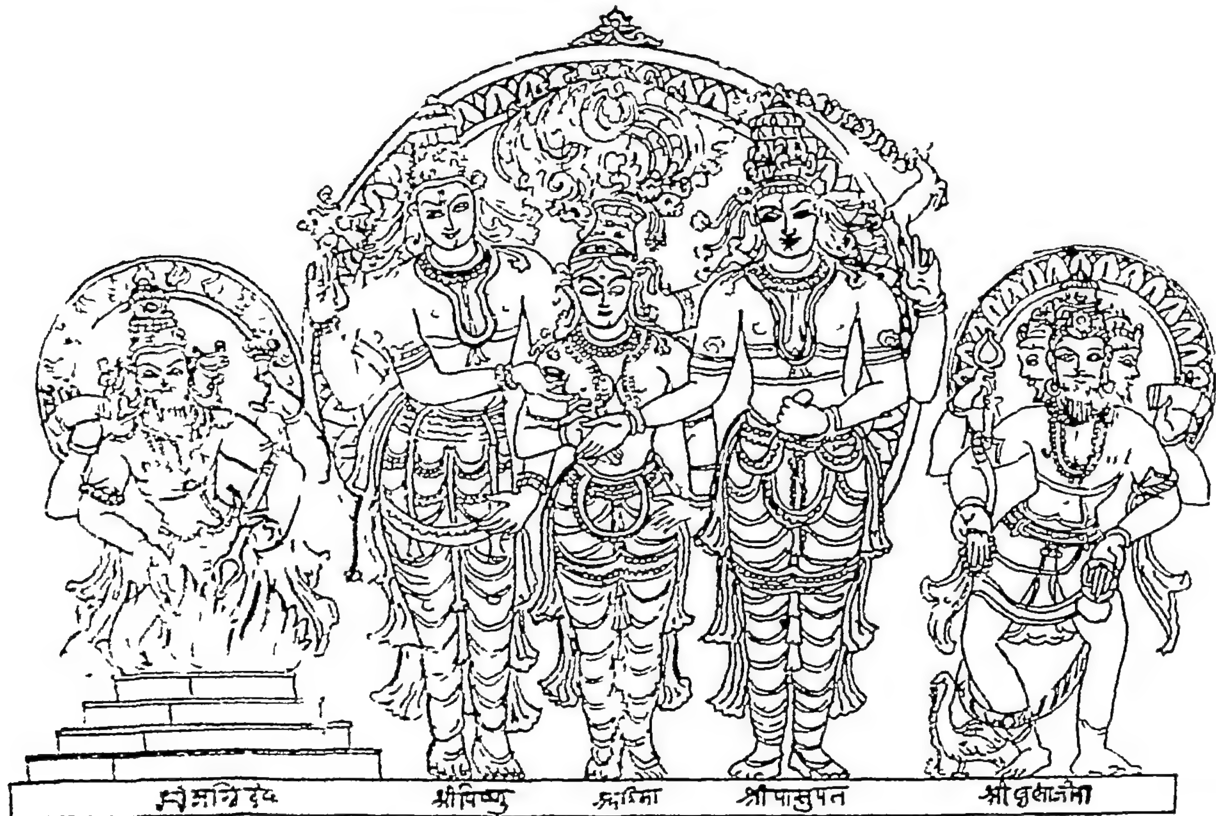


शिव-पार्वती *Shiva-Parvati*

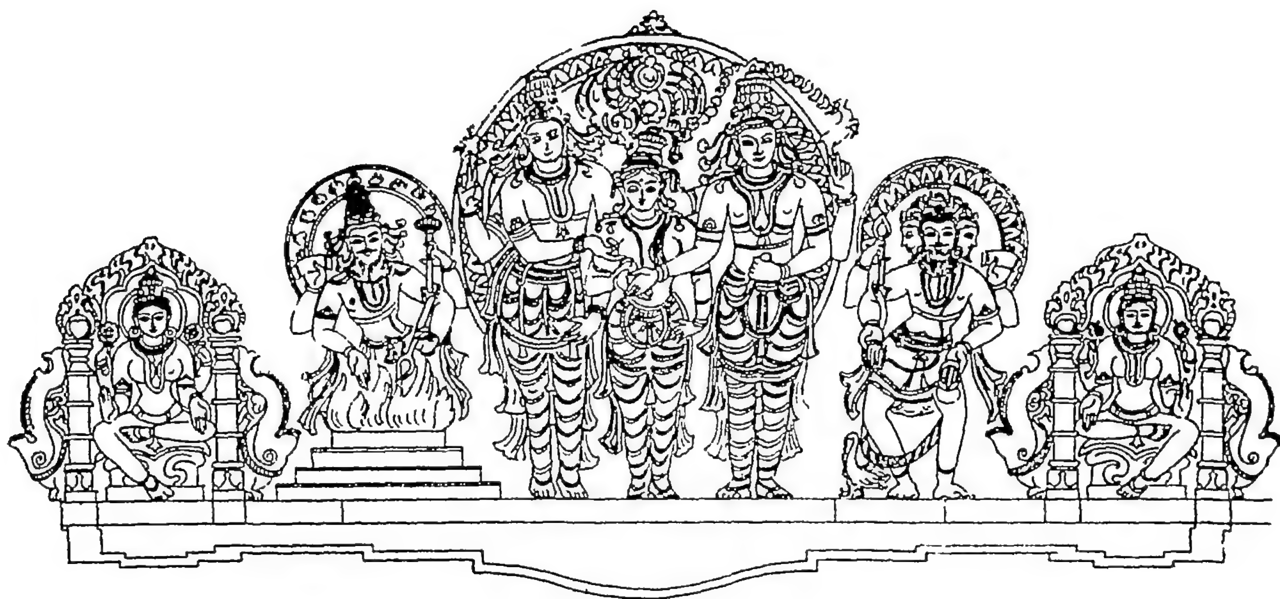


पचानन शिव भग्नमूर्ति (खजुराहो, म प्र)
Five-Faced Shiva (Khajuraho, M P)

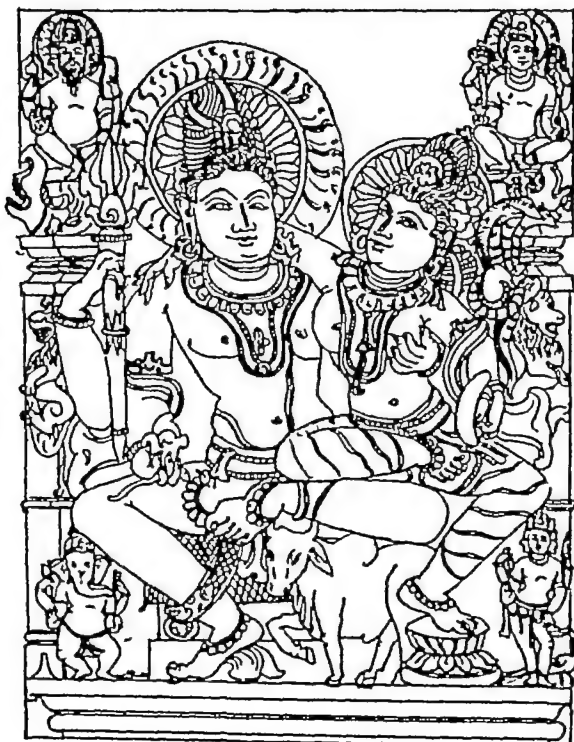
शिवनृत्य *Dancing Shiva*



अग्निदेव *Agni* विष्णु *Vishnu* मिनाक्षी *Minākṣi* शिव *Shiva* ब्रह्मा *Brahmā*



मीनाक्षी-शिव विवाह *Marriage of Shiva-Minākshi*



उमा-महेश *Uma-Mahesha*



स्वदर्पणा देवागना और शिव-पार्वती (खजुराहो)
Shiva-Parwati with a Devangana



शिवनृत्य
Dancing Shiva



दिगंबर शिवनृत्य
Dancing Shiva



लक्ष्मण
Laxmana



यम
Yama, The God of Death



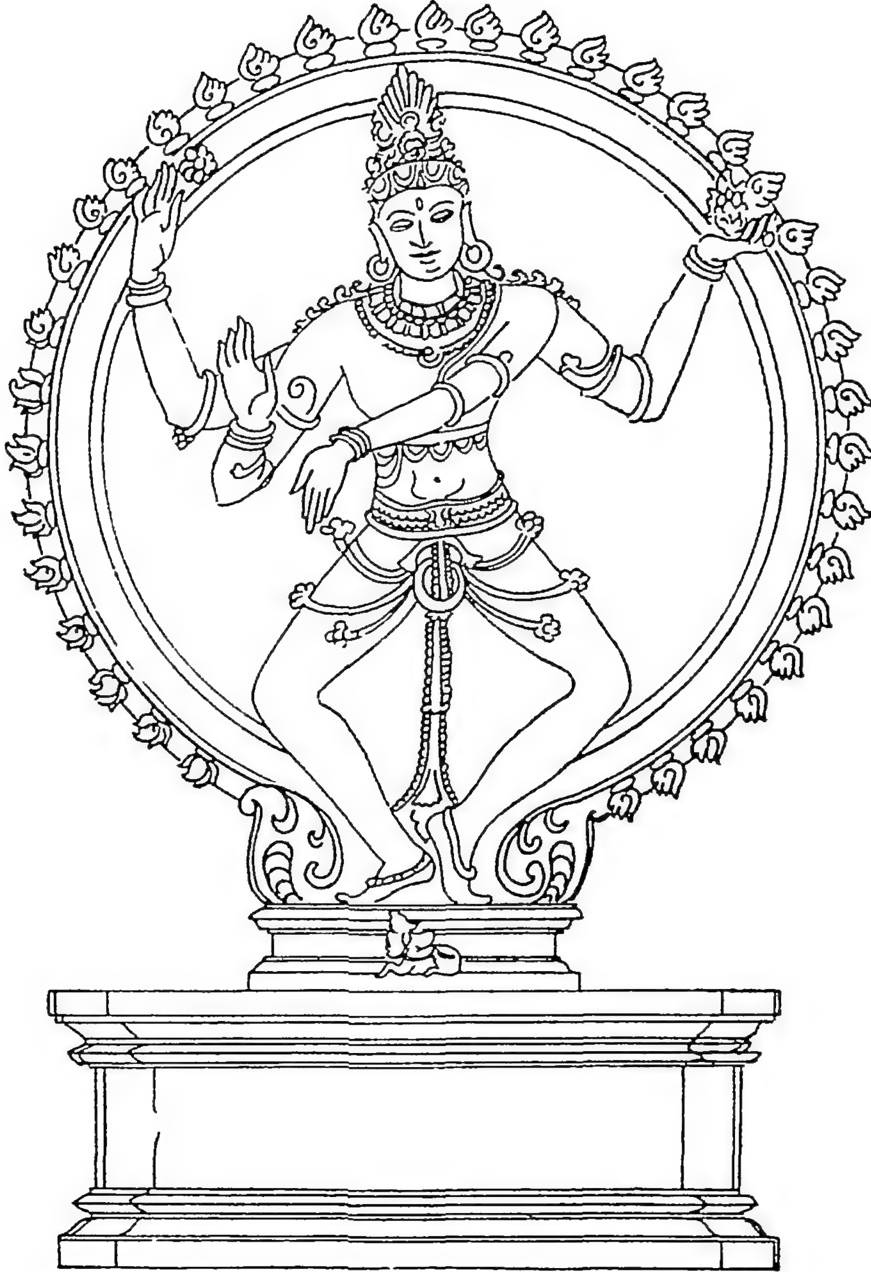
भैरव
Bhairava



उमा-महेश
Uma-Mahesha



ललाटतिलक शिव
Shiva in Lelātatilaka-Mudrā

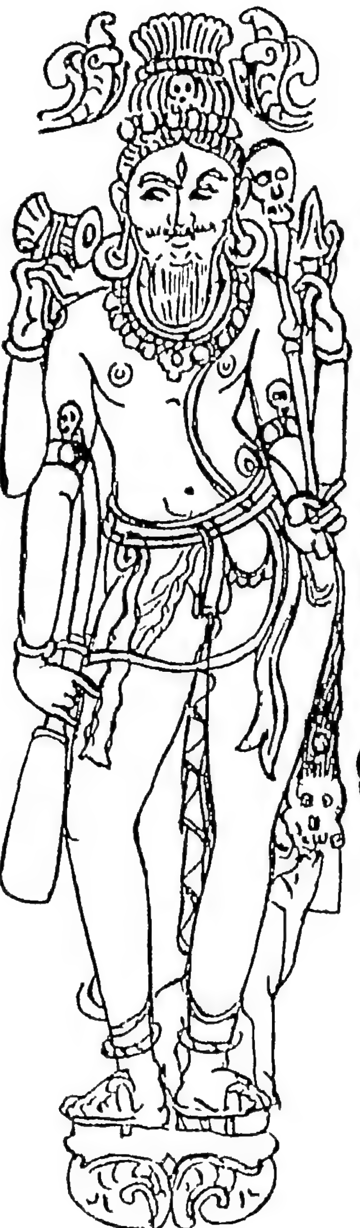


नटराज *Naṭarāja*

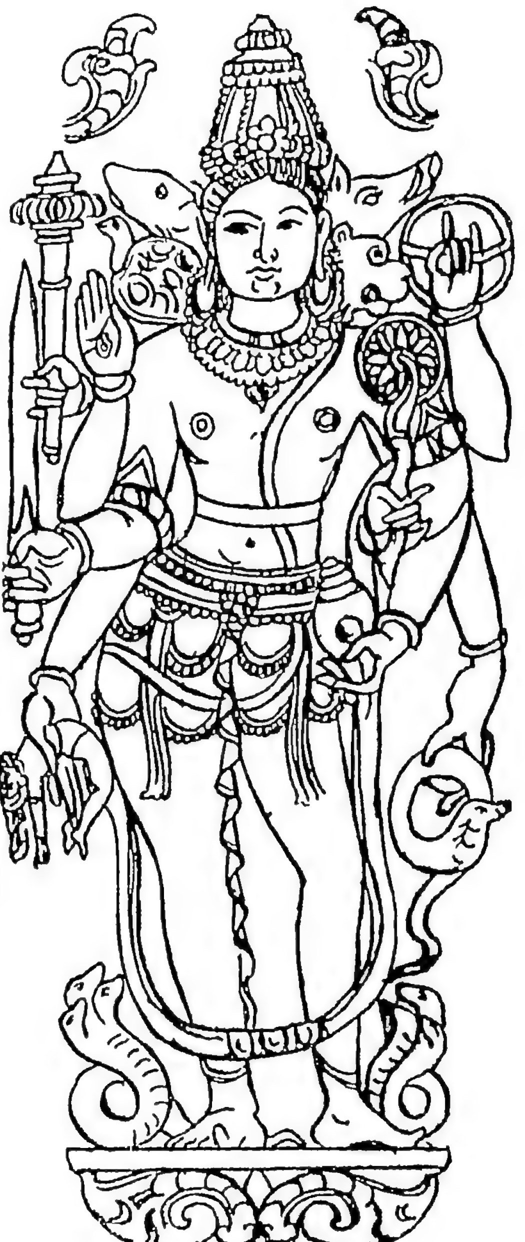


UMA-MAHESH FOR HINDALCO TEMPEL (U P)

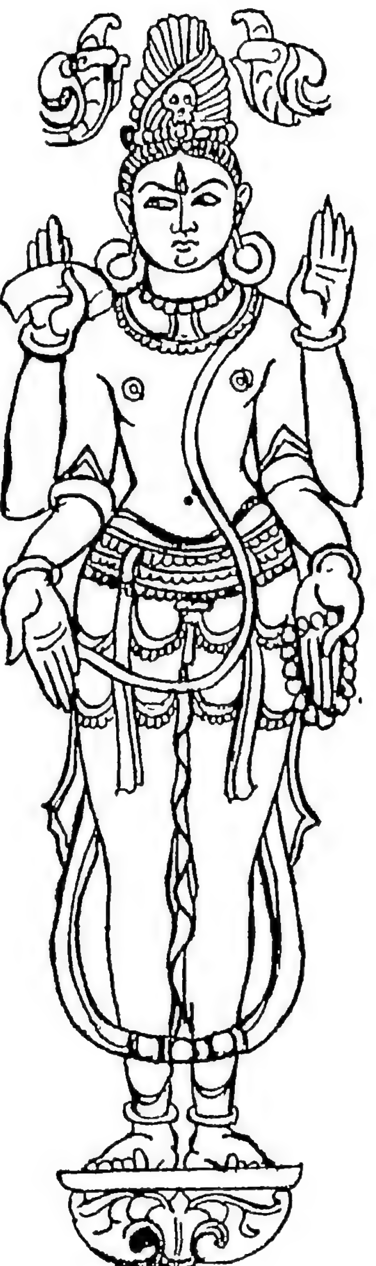
उमा-महेश्वर *Uma-Maheshwar*



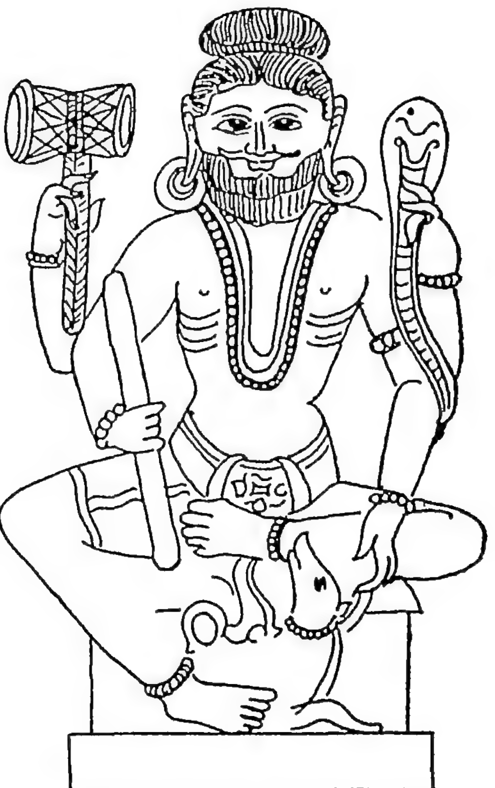
श्री भैरवनाथ *Bhairavanāth*
The Fearful Aspect of Shiva



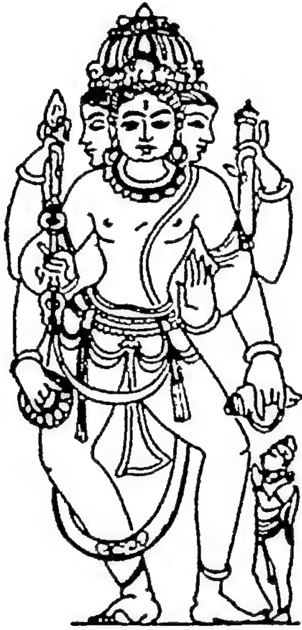
श्री विश्वरूप विष्णु
Vishvarup Vishnu



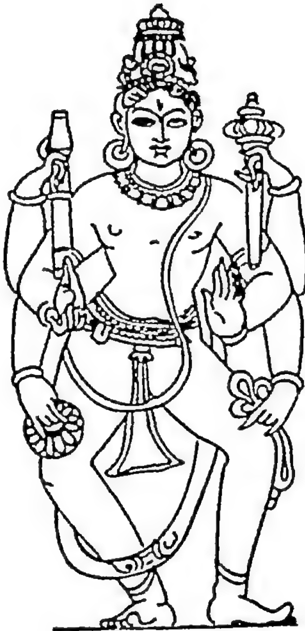
किरणाक्षरुद्र
Kiranax-Rudra



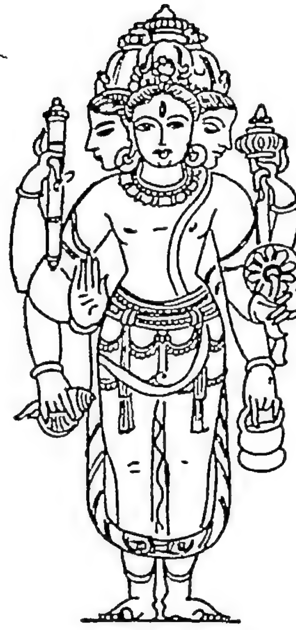
भैरव
Bhairava



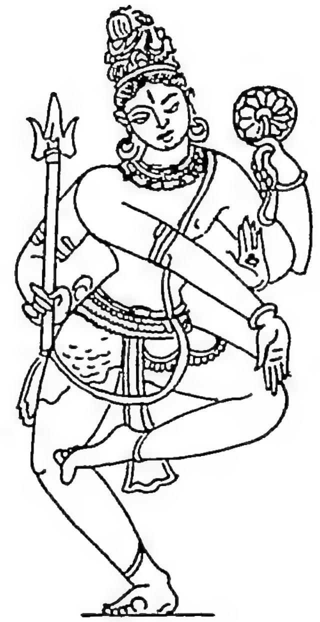
अनत
Ananta



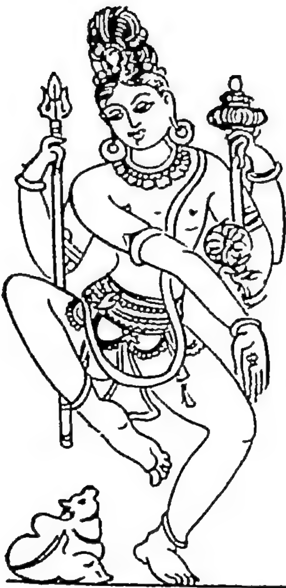
त्रिलोकेश्वर मोहन
Trilokeshwar Mohan



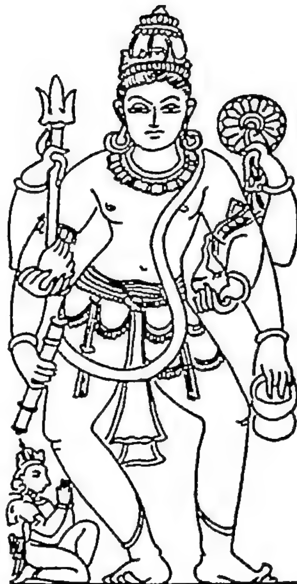
त्रिलोक भगवान
Trilok Bhagwan



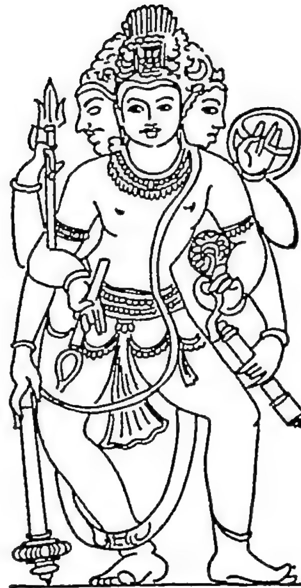
हरिहर
Harihara



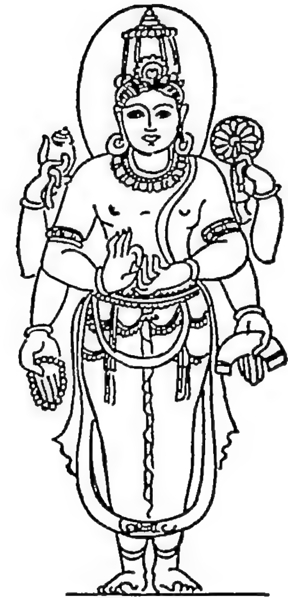
शिवनारायण
Shiva-Narayana



हरि हरण्य
Hari Haranya



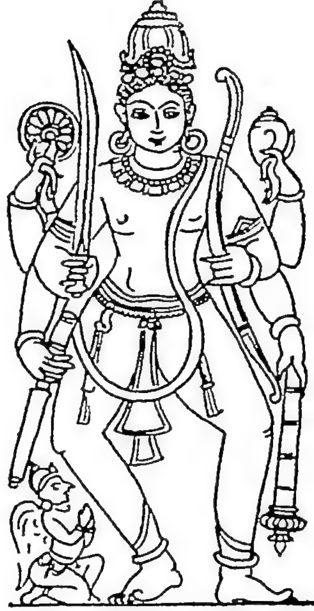
हरिहर पितामह
Harihar Pitamah



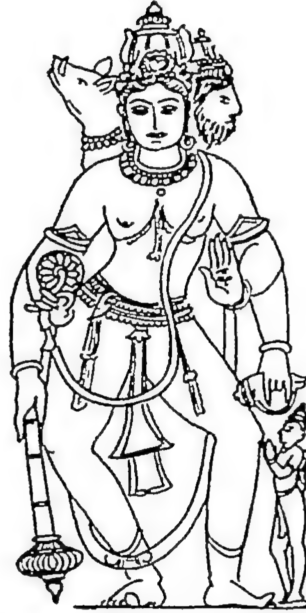
योगेश्वर विष्णु
Yogeshwar Vishnu



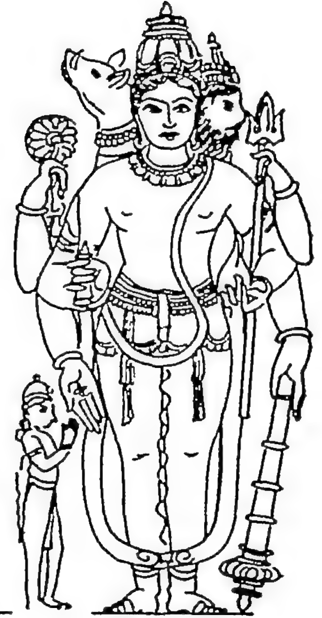
कृष्णकार्तिकेय
Krishna-Kārtikeya



पुरुषोत्तम
Purushottama



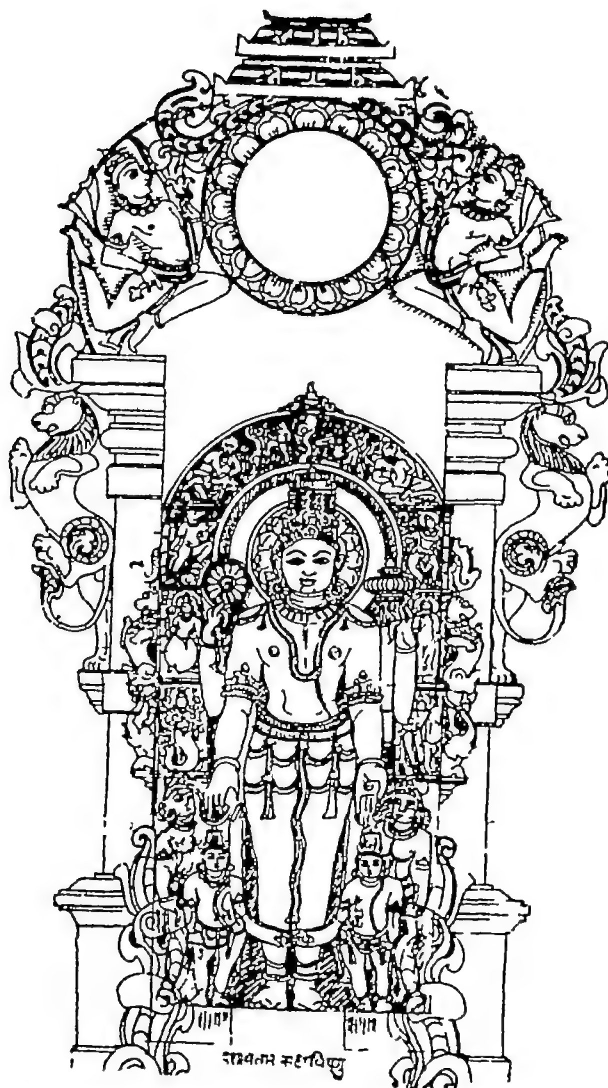
वैकुंठ
Vaikuntha



विश्वरूप
Vishvarupa



श्रीधन्वतरी *Dhanvantari*



दशावतार महाविष्णु *Vishnu with Ten Incarnations*



विष्णु-लक्ष्मी (खजुराहो)
Vishnu-Lakshmi (Khajuraho)

देवीस्वरूप

देवस्वरूप

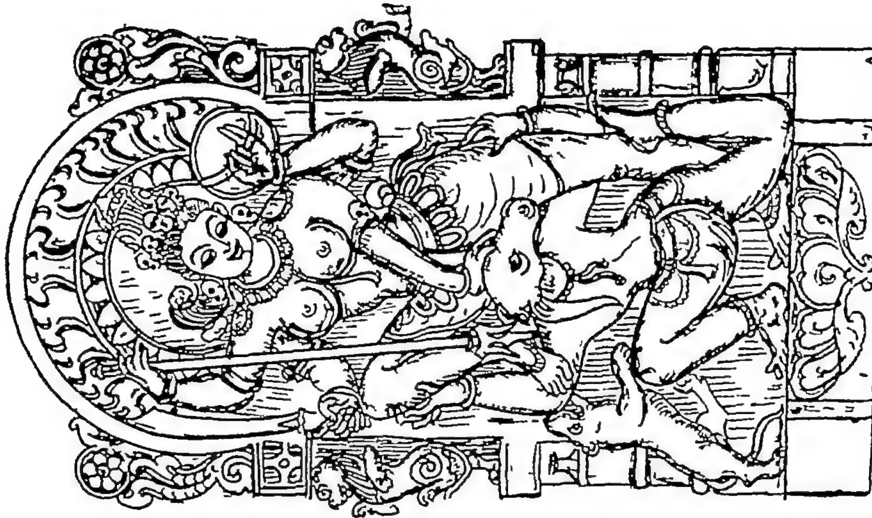
पार्वती के स्वरूप (गौरी)

सरस्वती के स्वरूप

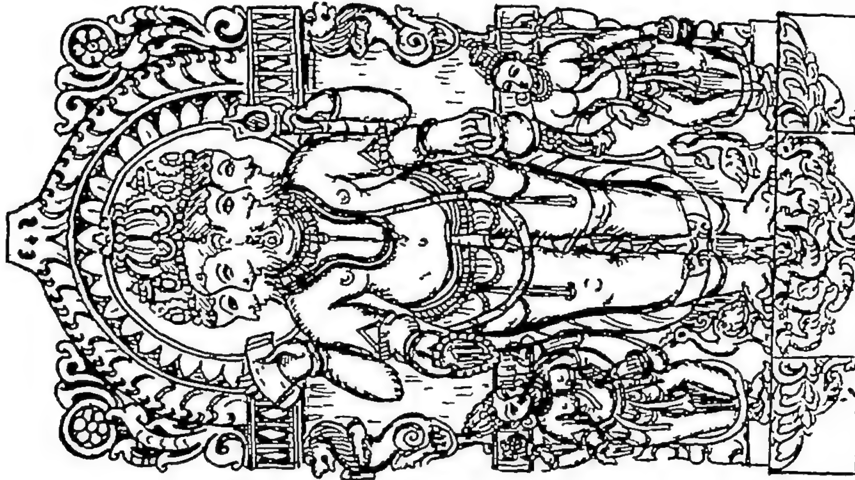
Male and Female Deities

Forms of Parvati (Gauri)

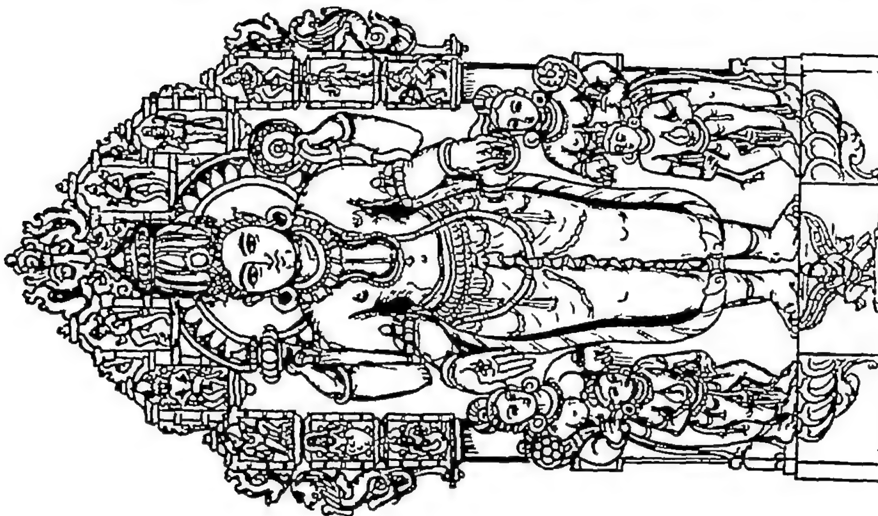
Forms of Saraswati



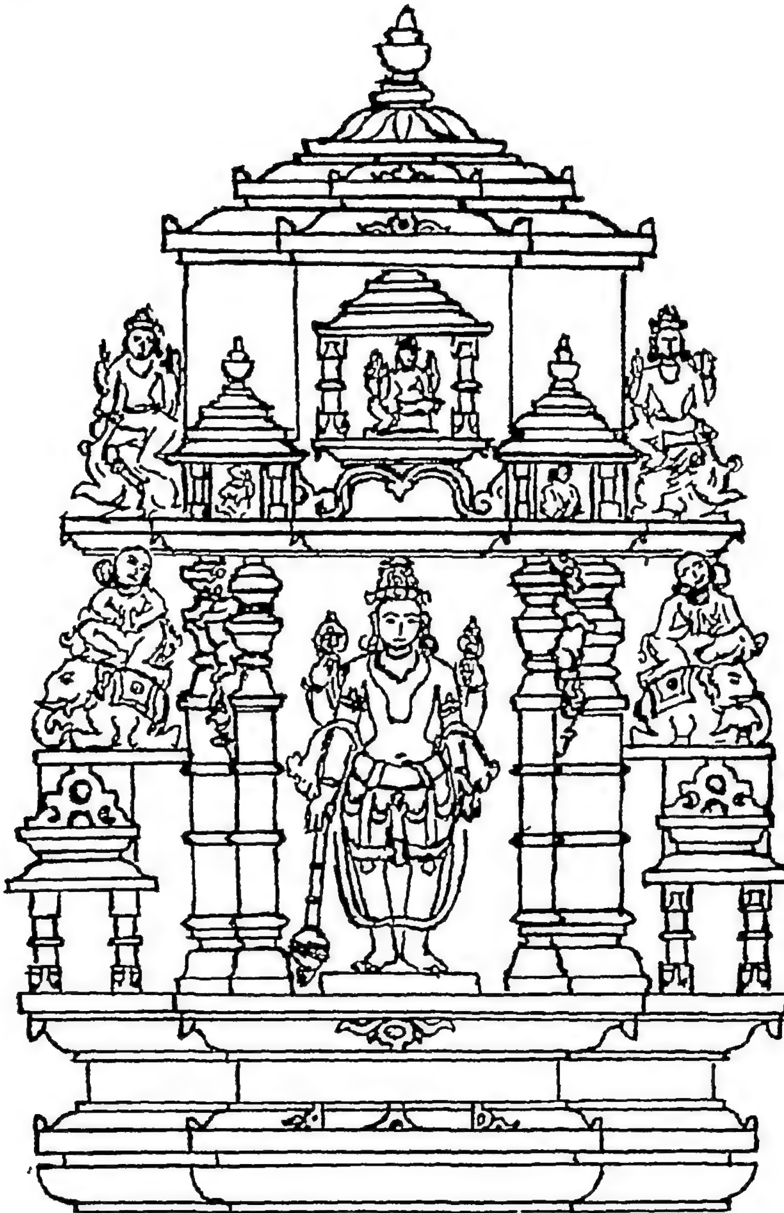
महिषासुर मर्दिनी
Mashishasura Mardini
Durga killing Buffalo-Demon



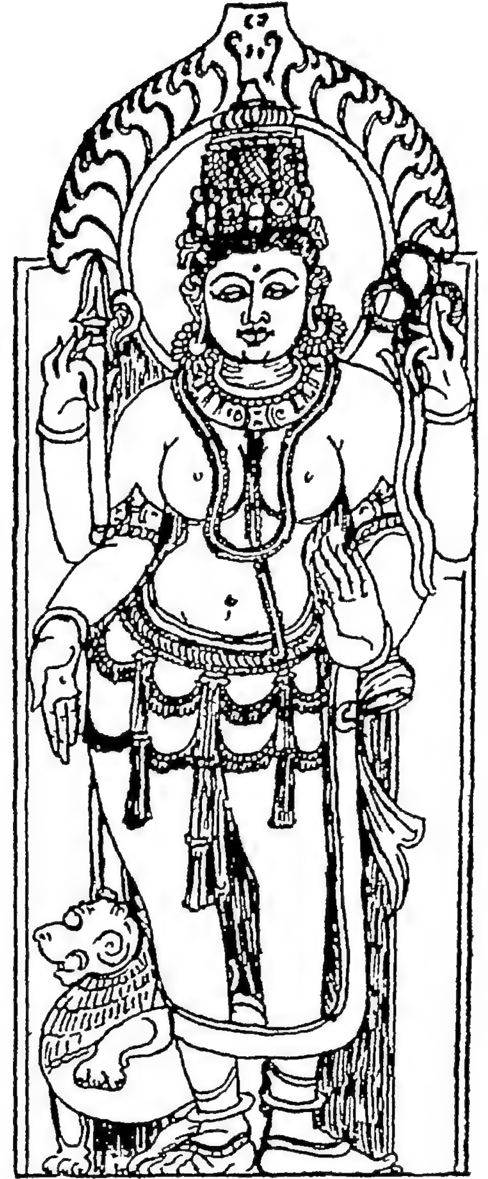
श्री पंचमुख ब्रह्मा
Panchmukha Brahmā



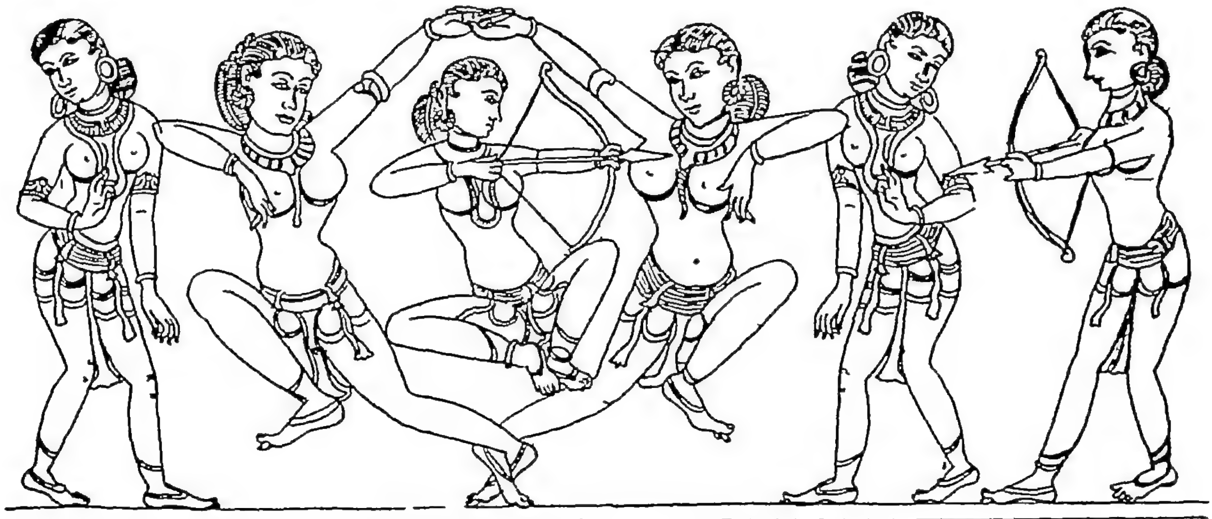
श्री विष्णु दशावतारसह
Dashāvatar Vishnu



जघा मे विष्णु त्रिनेत्रेश्वर मदिर (*Vishnu in Jangha Trinetreshwar Temple*)



भुवनेश्वरी *Bhuvaneshvari*



अप्सराए *Apsaras (Nymphs)*



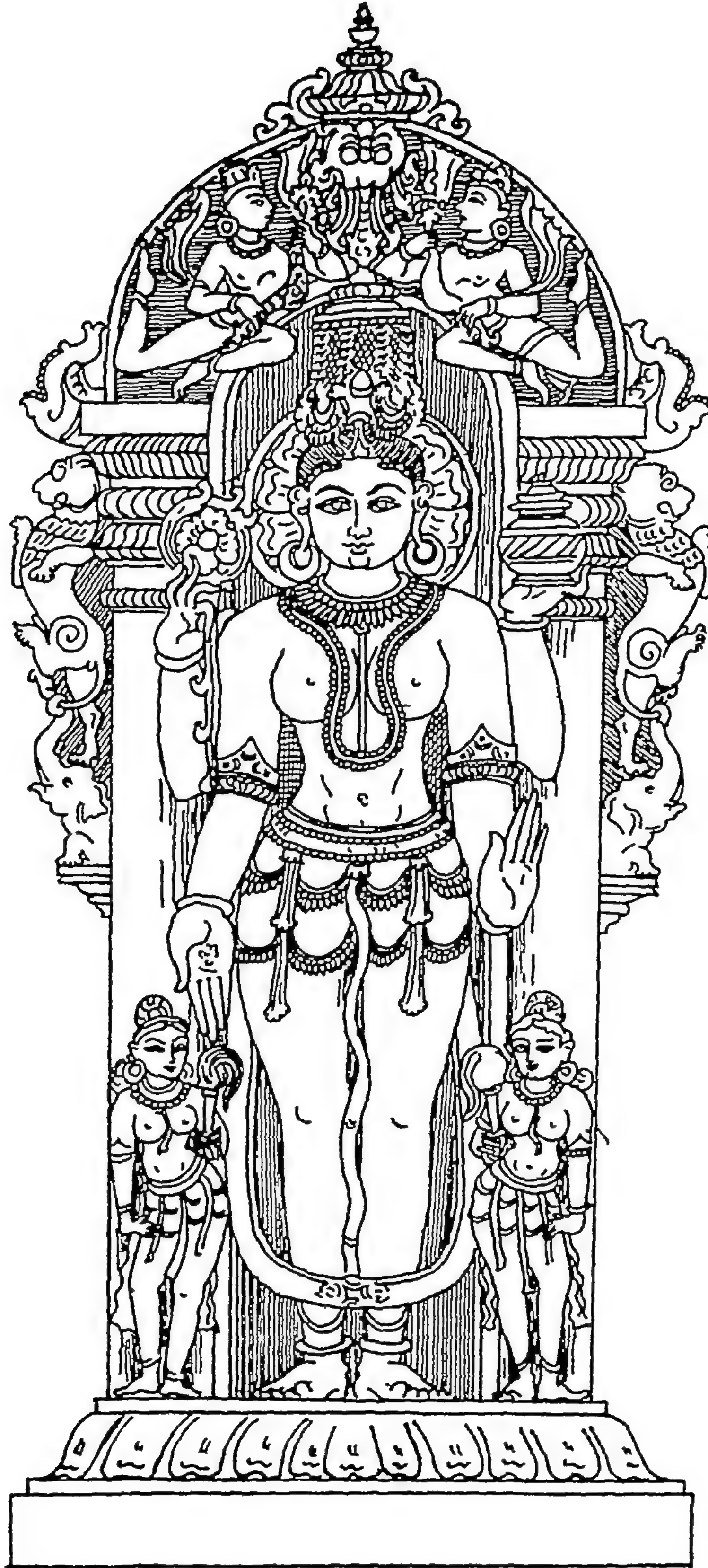
सरस्वती *Sarasvati* महालक्ष्मी *Mahālaxmi* काली *Kali*



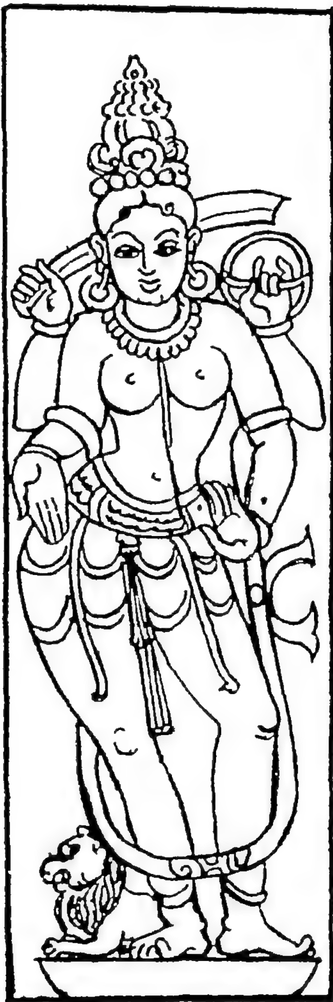
श्री प्रज्ञा परिमिता *Pragna Parimita*



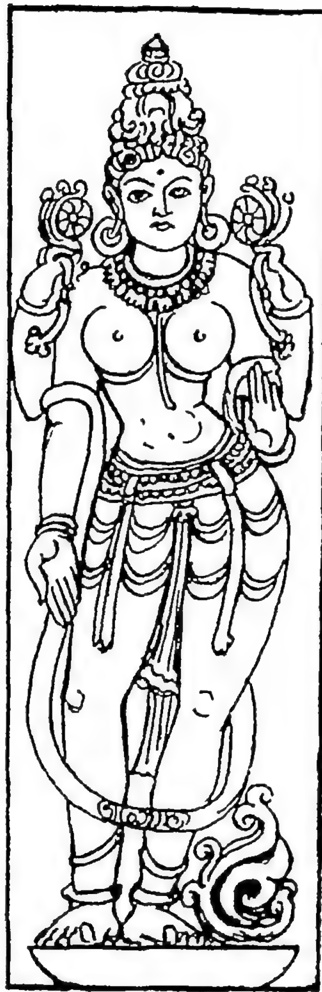
श्री आद्य शक्ति *Adya Shakti*



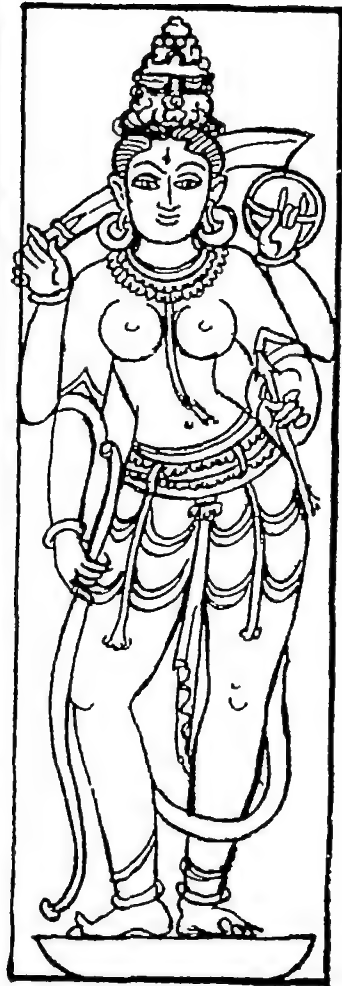
परिकरयुक्त लक्ष्मी *Lakshmi with Parikara*



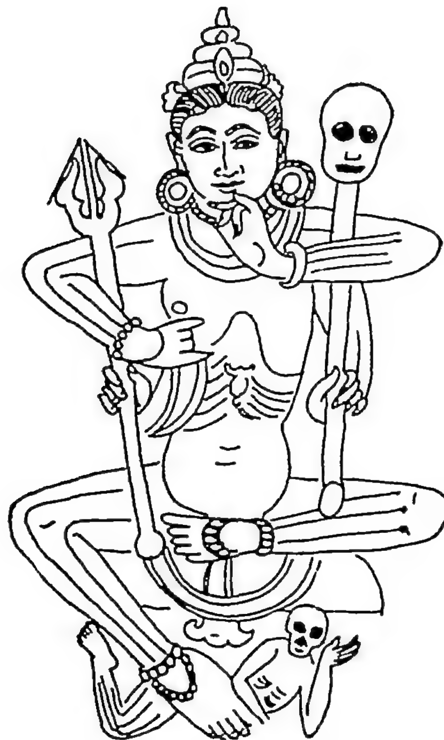
अबिका देवी *Ambikā*



कमला देवी *Kamala*



अपराजिता देवी *Aparajita*



चण्डी *Chandi*

सप्तमातृकाए *Saptamatrukas* (Seven Mothers)



विरेश्वरा *Vireshvara*



ब्राह्मणी *Brahmāni*



महिश्वरी *Mahishvari*



वैष्णवी *Vaishnavi*



वाराही *Vārāhı*



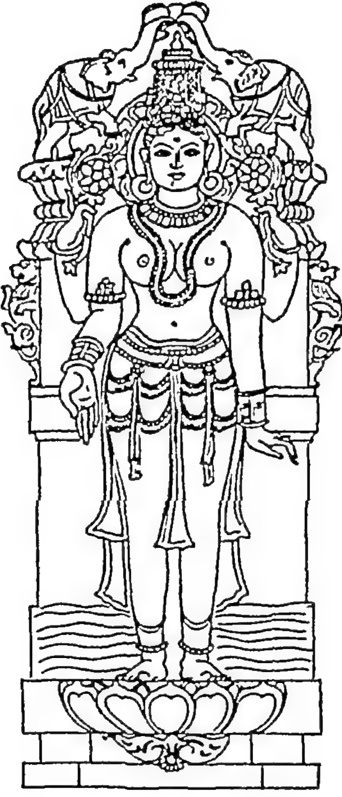
कौमारी *Kaumārı*



इन्द्राणी *Indranı*



चण्डी *Chandı*



महालक्ष्मी *Mahālakshmi*



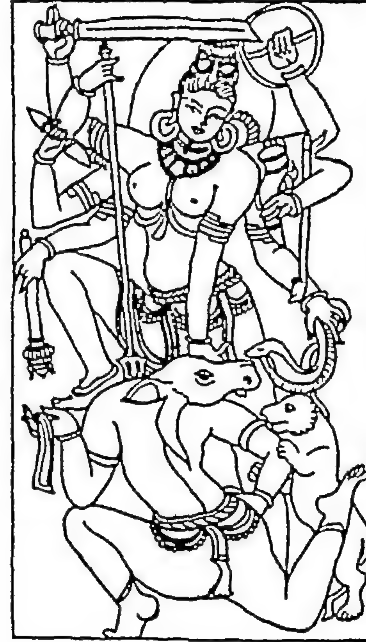
विनायक *Vinayak*



भुवनेश्वरी *Bhuvaneswari*

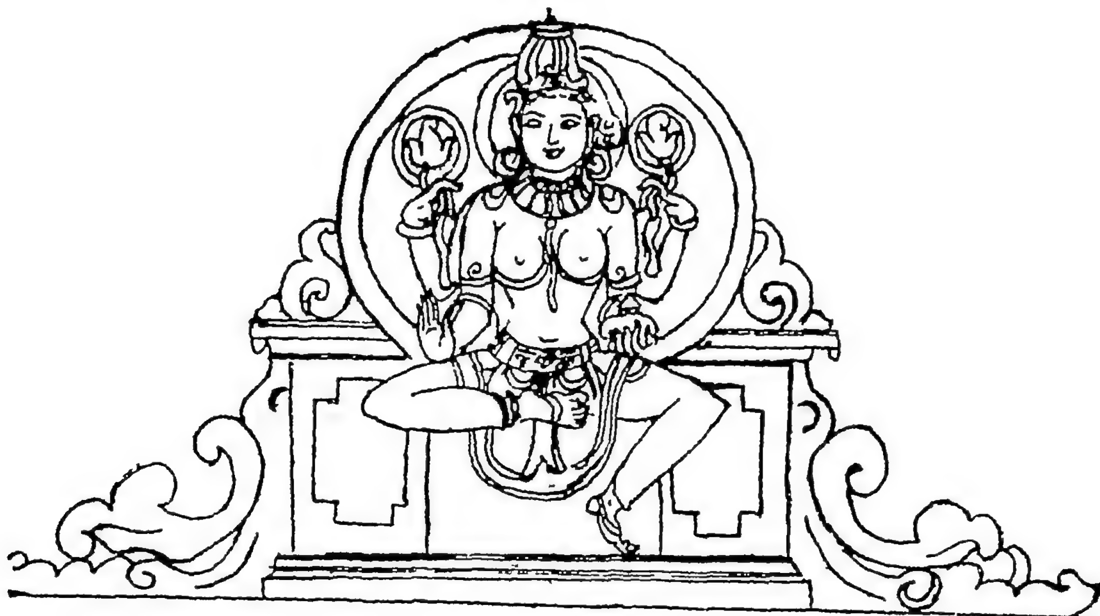


वीणावादिनी *Vināvādini*
(Sarasvati Playing Vina)



महिषासुरमर्दिनी
Mahishasura Mardini

लक्ष्मी *Lakshmi*





महालक्ष्मी *Mahā Lakshmi*
(गेबल *Gable*)



अन्नपूर्णा *Annapurnā*
A Form of Parvati

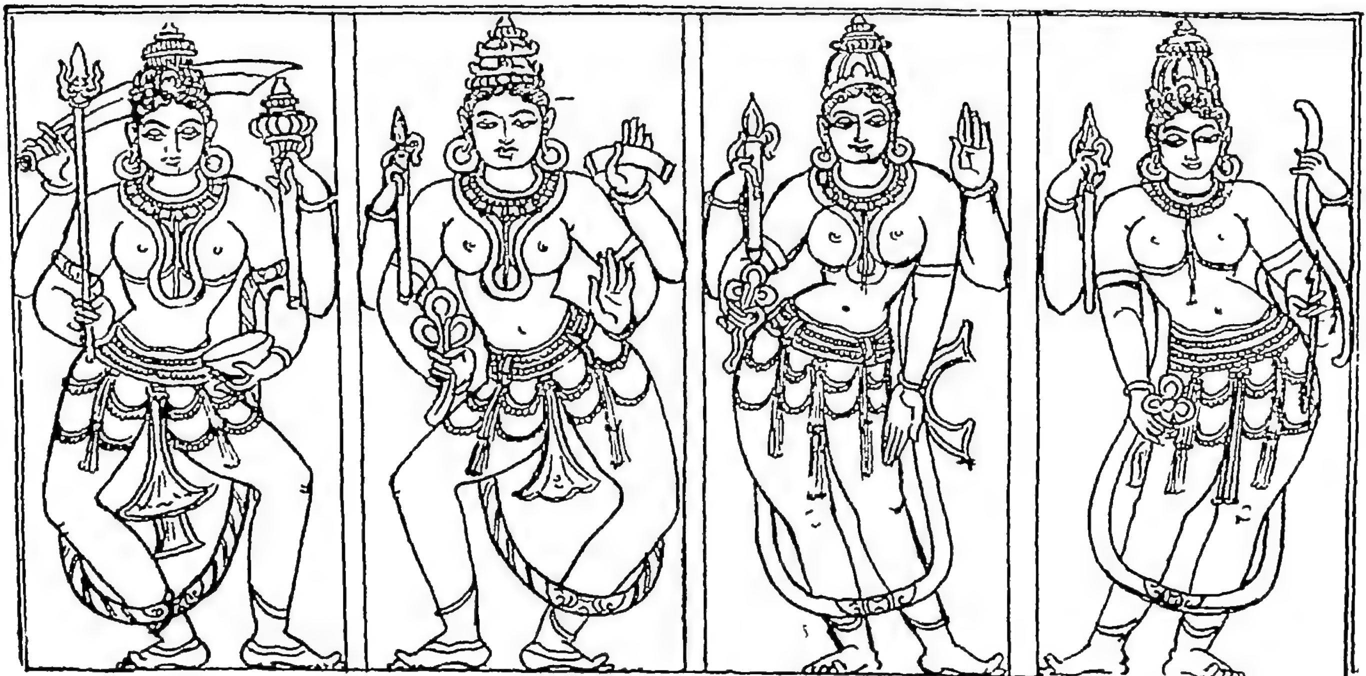


त्रिपुरा सुंदरी *Tripurā Sundari*

जगध्धात्री
Jagaddhātri

तुलसी देवी
Tulasi Devi

वाला त्रिपुरा सुदरी
Bālā Tripurā Sundari

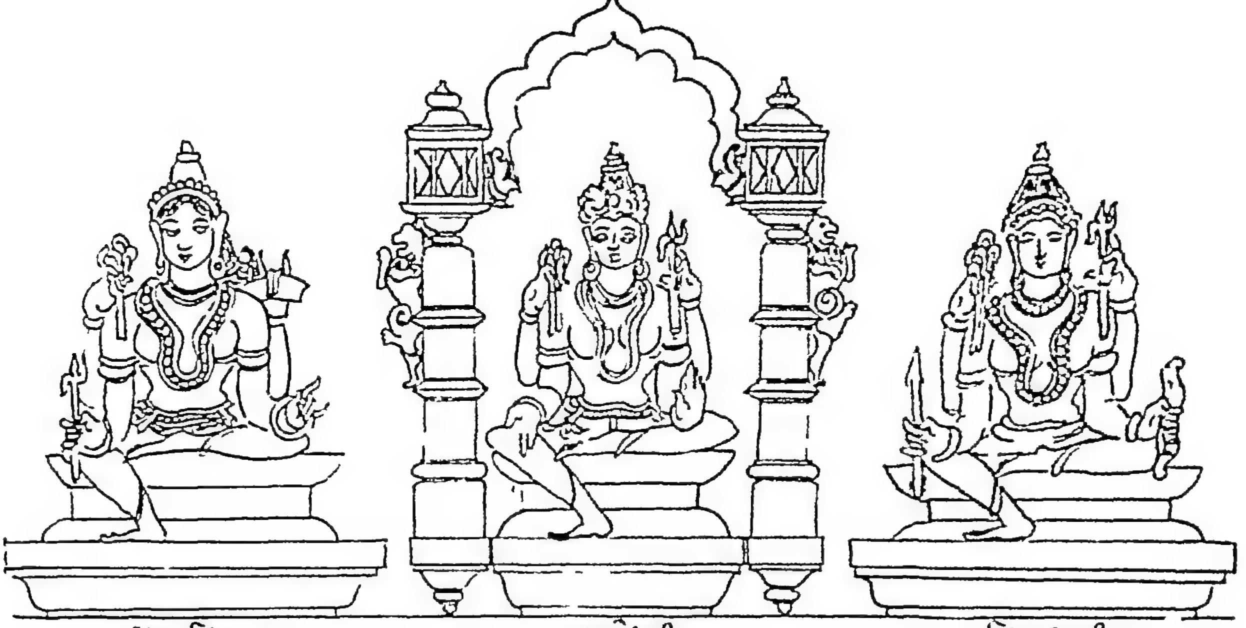


अम्विका
Ambika

वाला त्रिपुरा
Bālātripurā

जगदम्वा
Jagadambā

त्रिपुरादेवी
Tripuradevi

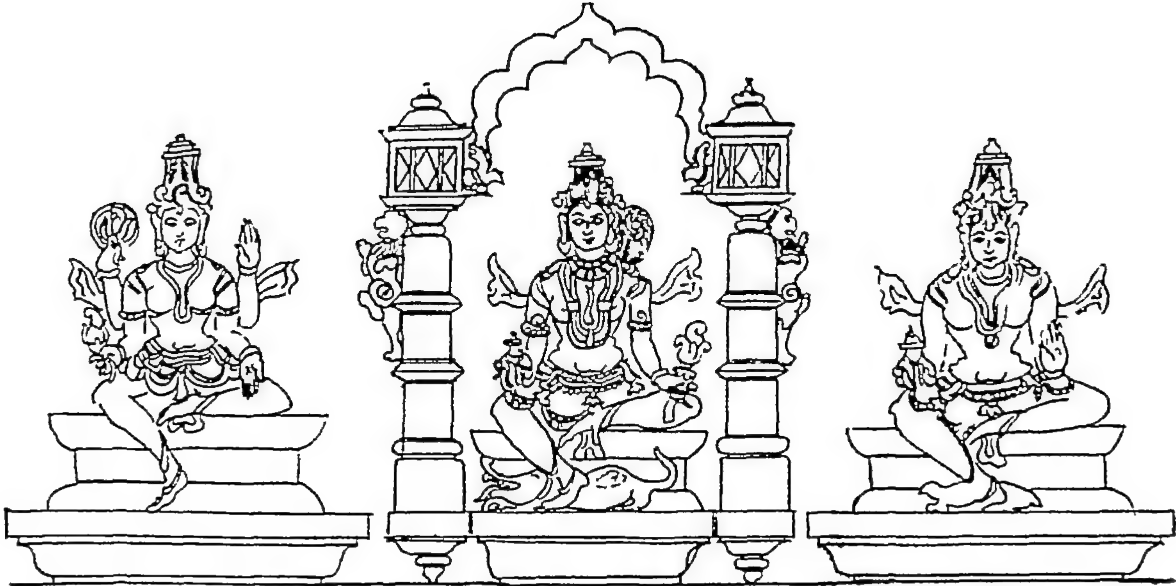


બાલા ત્રિપુરા | ભુવનેશ્વરી | ત્રિપુરા સુદરી

वाला त्रिपुरा
Bālā Tripurā

भुवनेश्वरी
Bhuvaneshvari

त्रिपुरा सुदरी
Tripurā Sundari

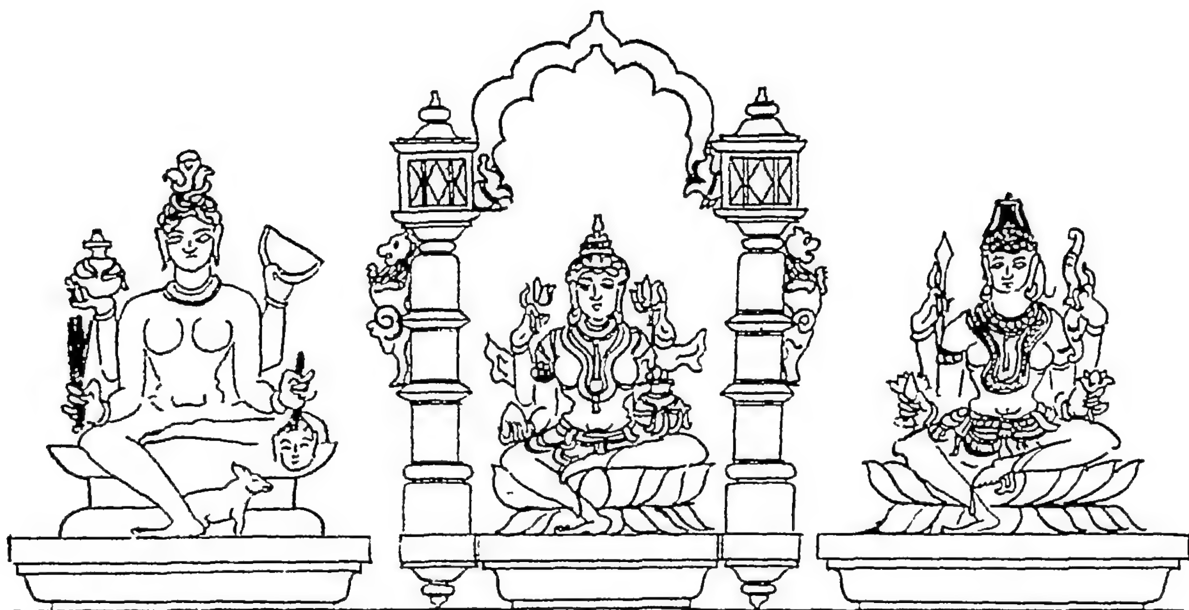


તુલસી | ગગાજી | જમના

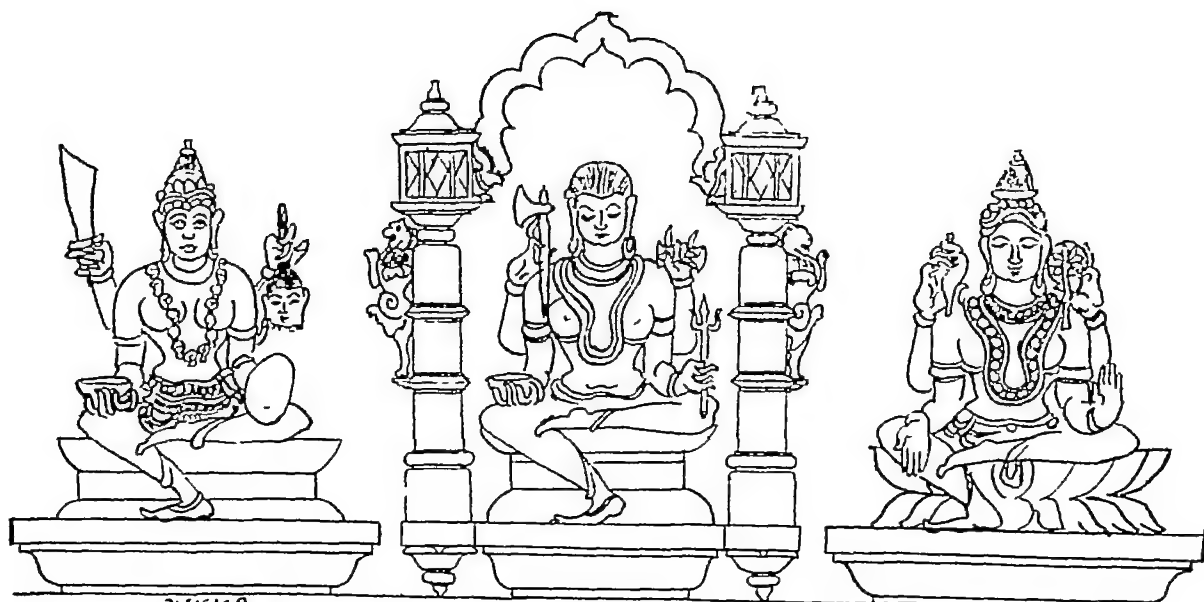
तुलसी
Tulasi

गगाजी
Gangāji

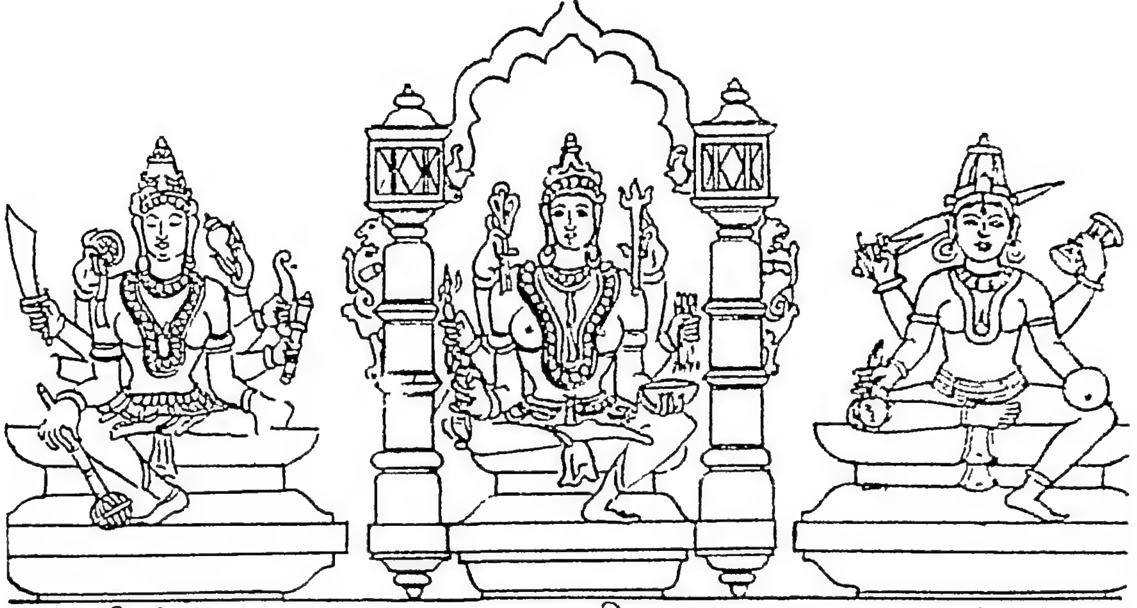
जमना
Jamunā



શીતલા	લક્ષ્મિ	શાકભરી
शितला	लक्ष्मी	शाकम्भरी
Shitala	*Lakshmi*	*Shākambhari*



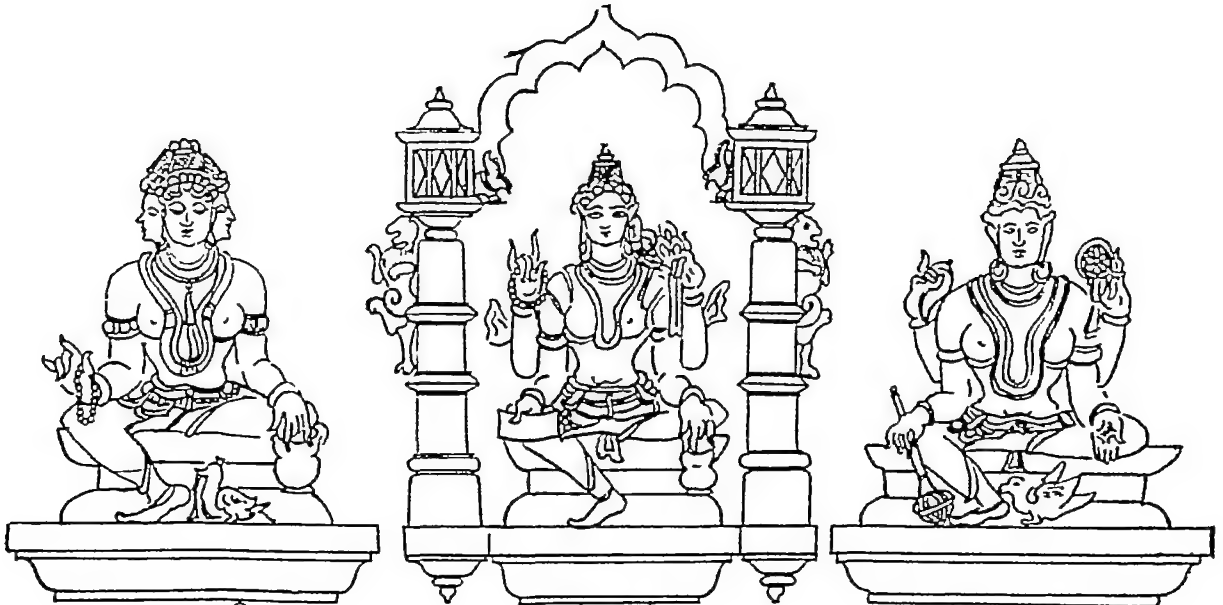
મહાકાલી	ભદ્રકાલી	વિદ્યવાસિન
महाकाली	भद्रकाली	विद्यावासिनि
Mahā Kāli	*Bhadra Kāli*	*Vidya Vāsini*



વિશ્વેશ્વરી
विश्वेश्वरी
Vishveshvari

પ્રાણશક્તિ
प्राणशक्ति
Prāna Shakti

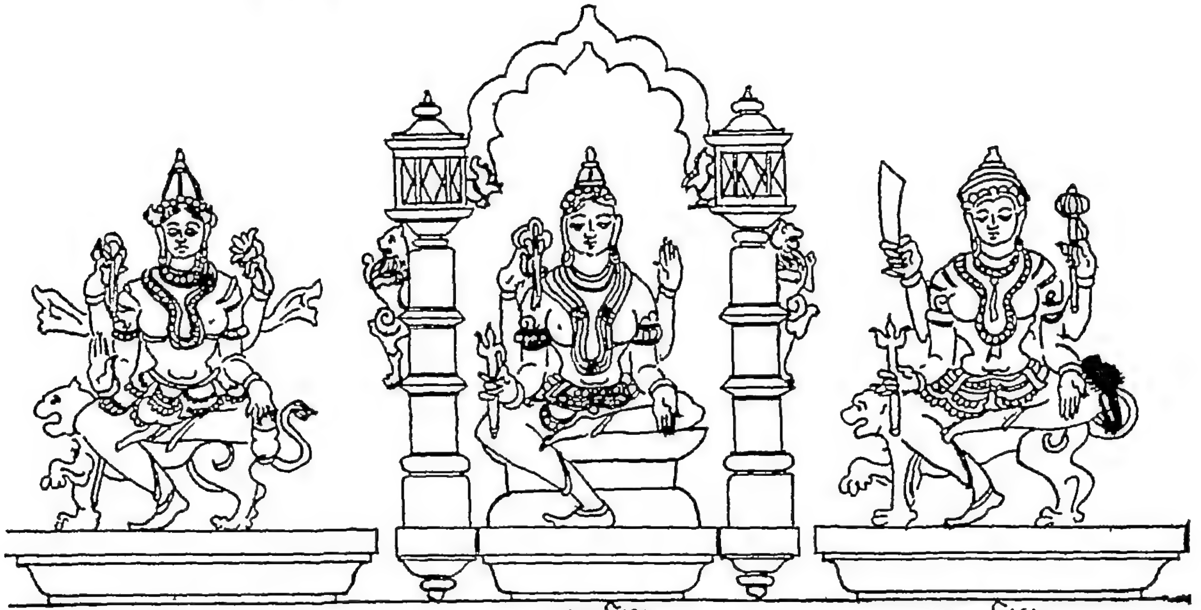
ભીમાદેવી
भिमा देवी
Bhimā Devi



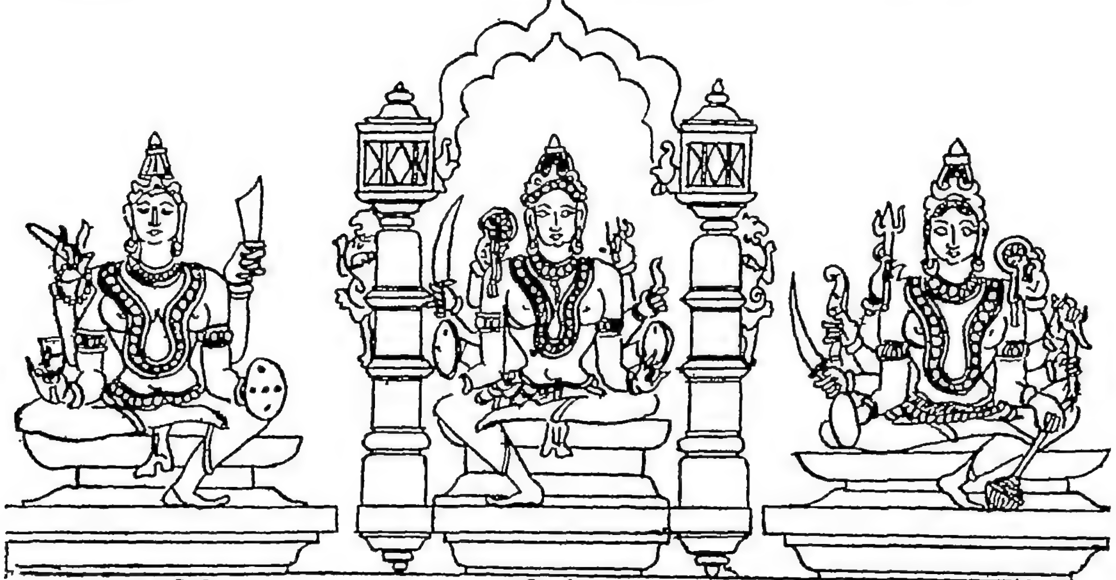
પ્રાત ગાયત્રિ
प्रात गायत्री
Pratah Gayatri

અન્નપુર્ણા
अन्नपूर्णा
Annapurnā

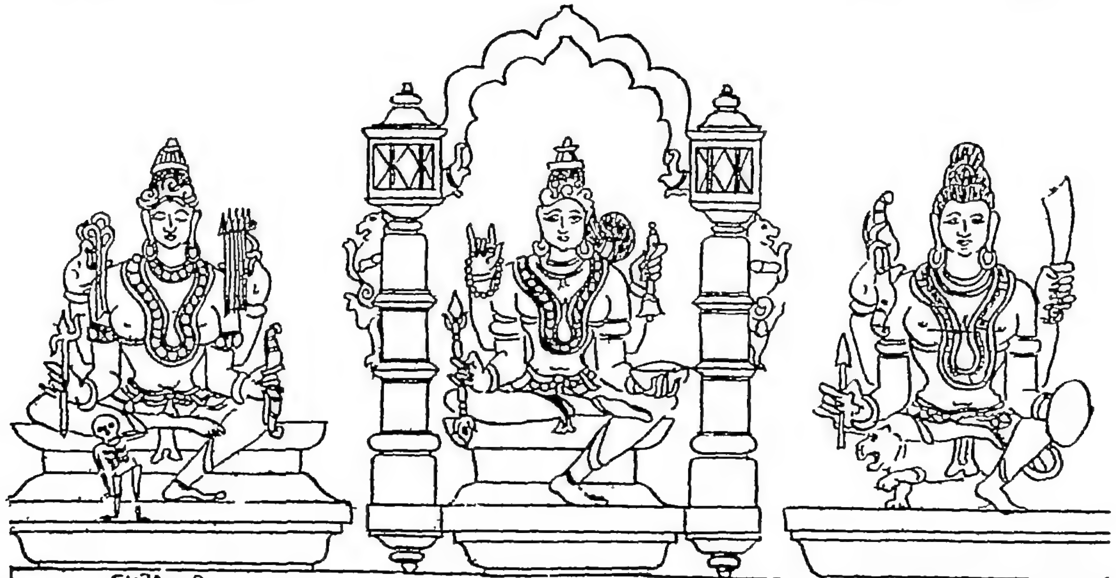
મધ્યાન ગાયત્રિ
मध्यान्ह गायत्री
Madhyānha Gāyatri



अंवा *Ambā* | जगदम्बिका *Jagadambikā* | अम्विका *Ambikā*



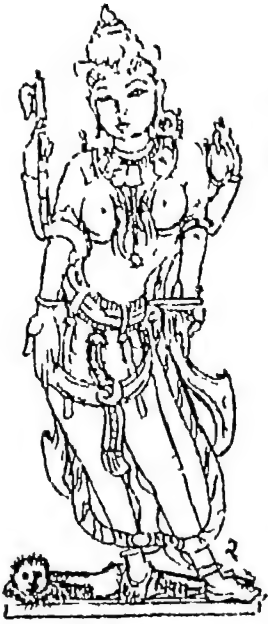
नदा देवी *Nandādevi* | दुर्गा *Durga* | योगमाया *Yoga Mayā*

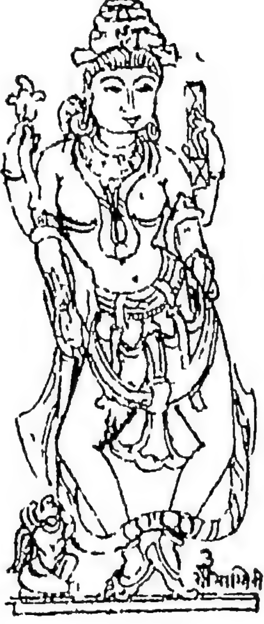


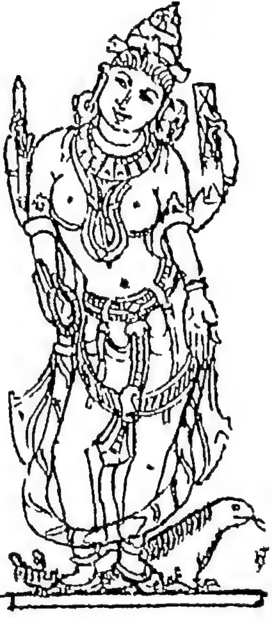
कामेश्वरी *Kameshwari* | सर्व मगला *Sarva Mangalā* | अपराजिता *Aparājita*

विभिन्न गौरी स्वरूप *Different Forms of Gouri (Pārvati)*


१ तोतला *Totalā*


२ त्रिपुरा *Tripurā*


३ सौभाग्य *Saubhāgya*


४ विजया *Vijayā*

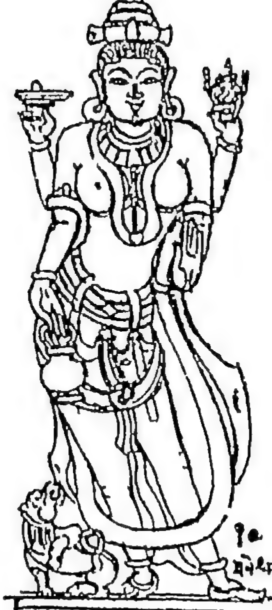

५ गौरी *Gouri, The Fair-one*


६ पार्वती *Pārvati*

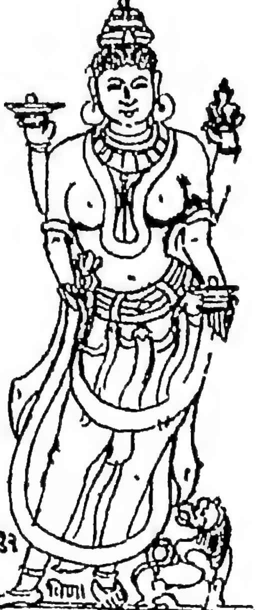

७ शुलेश्वरी *Shuleshvari*

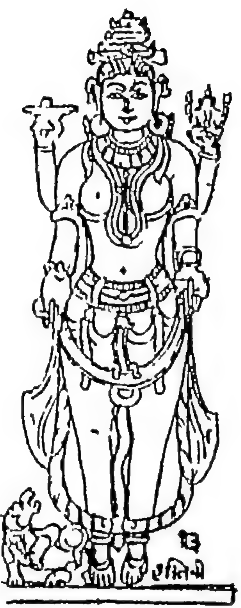

८ ललिता *Lalitā*


९ ईश्वरी *Ishvari*

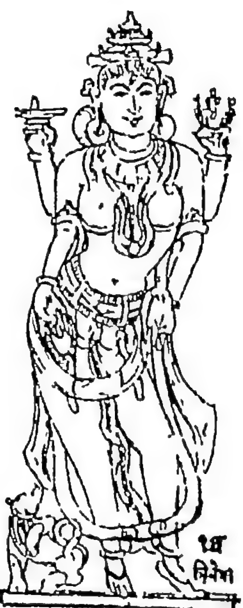

१० महेश्वरी *Maheshvari*


११ उमा *Umā*

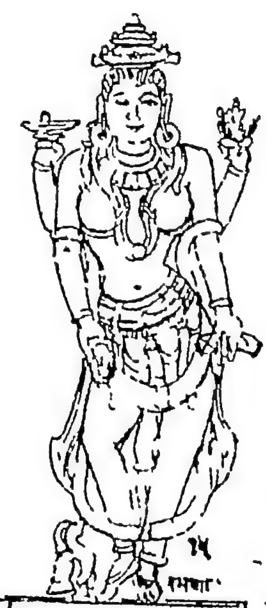

१२ वीणा *Vinā*



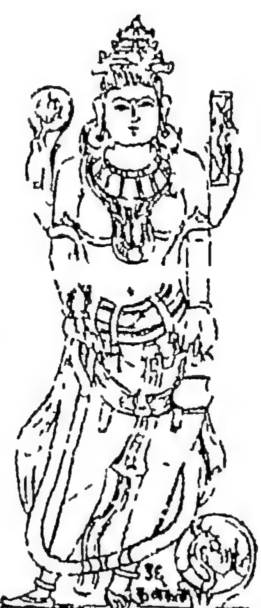
१३ हस्तिनी *Hastini*



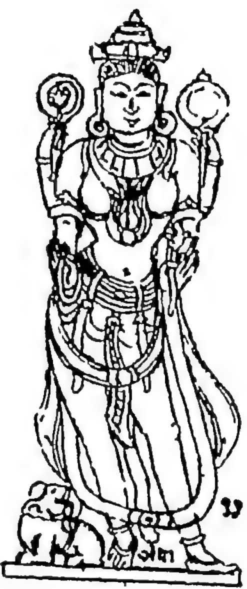
१४ त्रिनेत्रा *Trinetra*



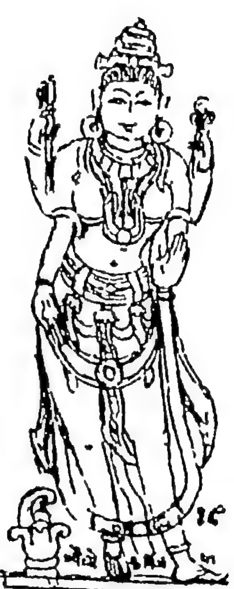
१५ रमणा *Ramanā*



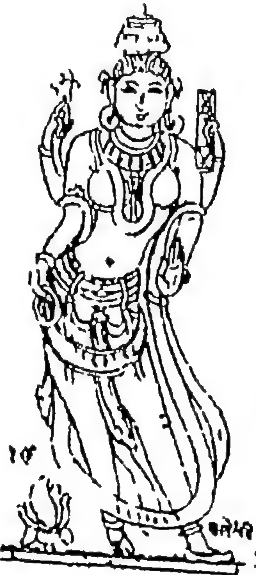
१६ कुलकला *Kulakalā*



१७ जघा *Janghā*



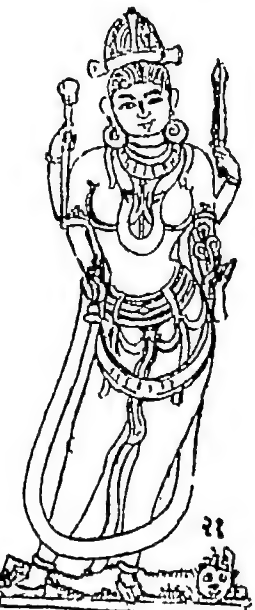
१८ त्रैलोक्य विजया *Traylokya Vijayā*



१९ कामेश्वरी *Kāmeshvari*



२० रक्तनेत्रा *Rakta Netrā*



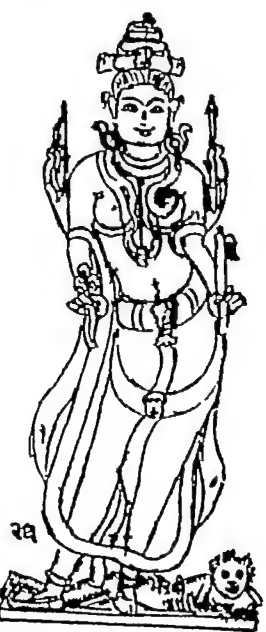
२१ चंडी *Chandi*



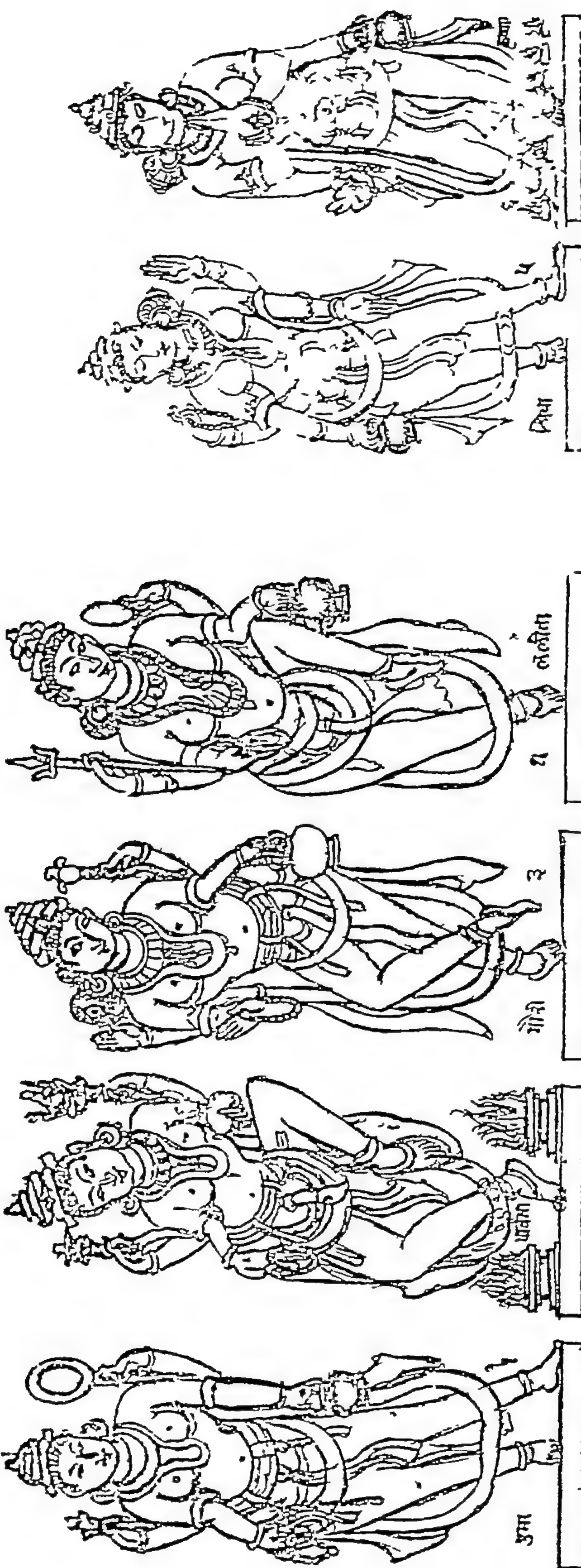
२२ जेमीनी *Jemini*



२३ ज्वाला प्रभा *Jwāla Prabhā*

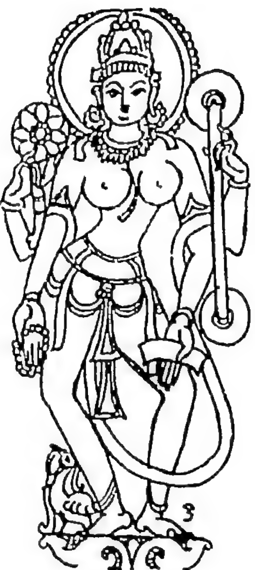


२४ भैरवी *Bhairavi*

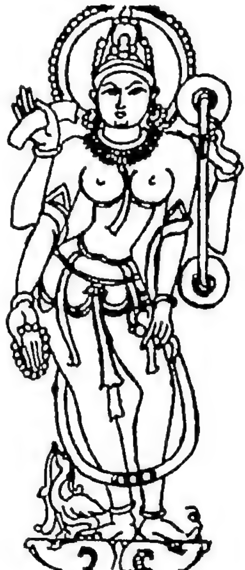


विभिन्न गौरीरूप १ (जयमत) *Different Forms of Pārvatī (according to Jay)*

सरस्वती के विभिन्न स्वरूप (जयमत) *Various Forms of Saraswati according to Jay*



१ महाविद्या *Mahā Vidyā*



२ महावाणी *Mahāvāni*



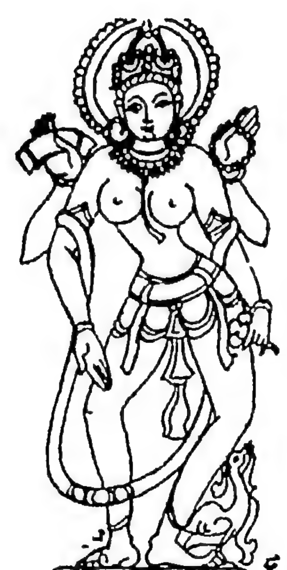
३ भारती *Bhārti*



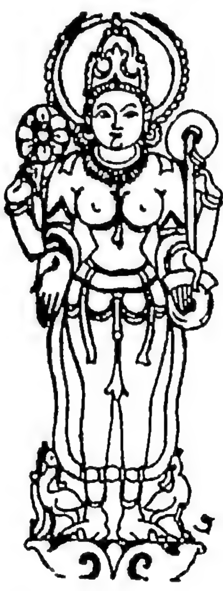
४ सरस्वती *Saraswati*



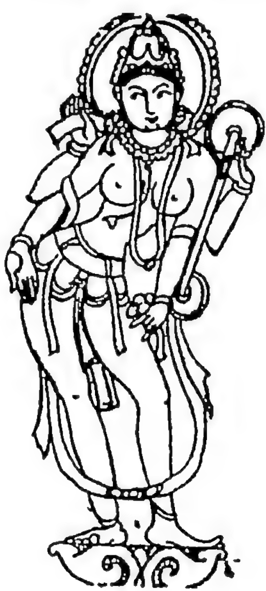
५ आर्या *Aaryā* (Noble)



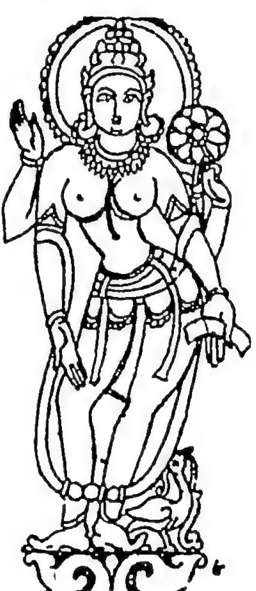
६ ब्राह्मी *Brahmi*



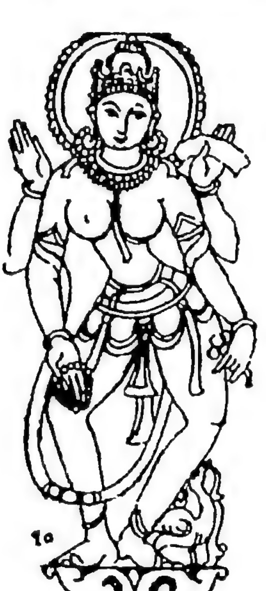
७ महाधेनु *Mahādhenu*



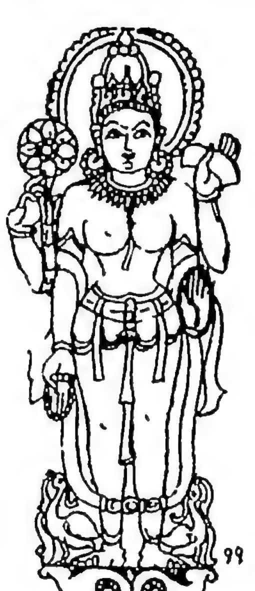
८ वेदगर्भा *Vedgarbhā*



९ ईश्वरी *Ishwari*



१० महालक्ष्मी *Mahā Laxmi*



११ महाकाली *Mahā Kāli*

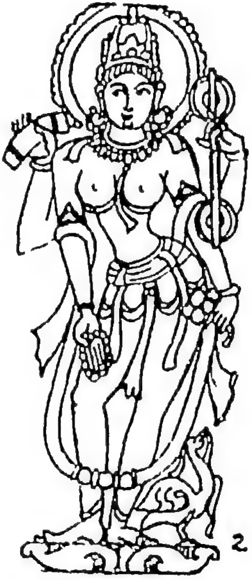


१२ महासरस्वती *Mahā Saraswati*

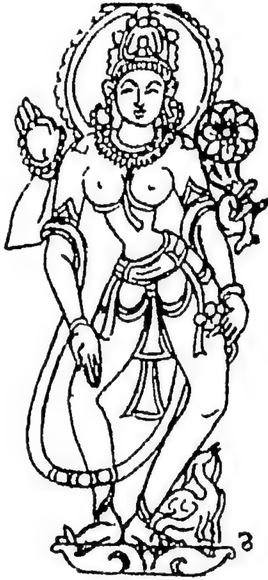
सरस्वती के विभिन्न स्वरूप (वीपार्णव मतानुसार) *Different Forms of Saraswatı (according to Dıpārnava)*



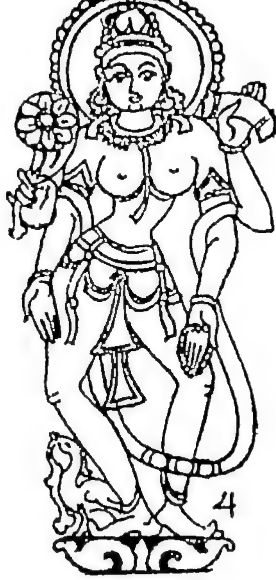
१ सरस्वती प्रथमा
Saraswatı Prathama



२ सरस्वती द्वितीया
Saraswatı Dwıtıya



३ कमला रुक्षिणी
Kamalā Ruxını



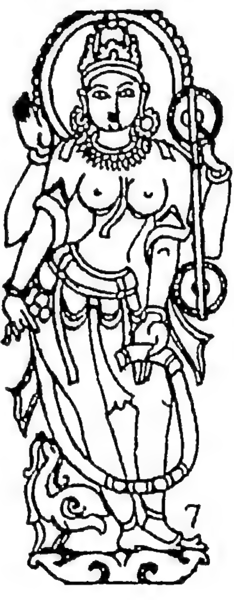
४ जया
Jayā



५ विजया
Vıjayā



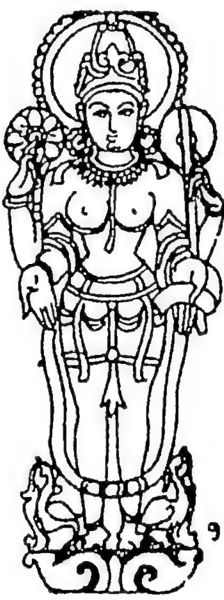
६ सारगा
Saranga



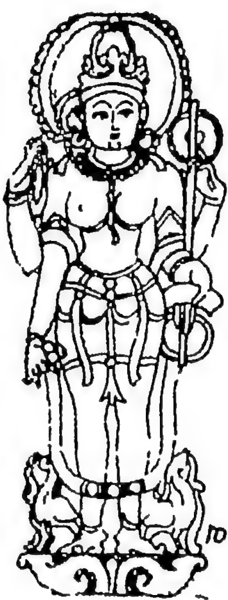
७ तुवरी
Tumbarı



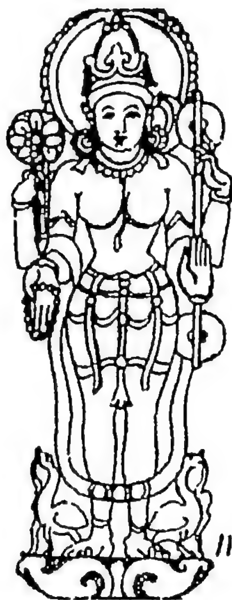
८ नारवी
Nāradı



९ सर्वमगला
Sarva Mangalā



१० विद्याधरी
Vıdyādharı

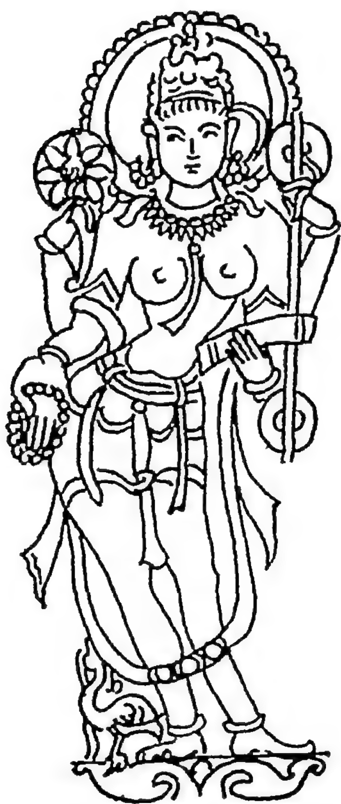


११ सर्व विद्या
Sarva Vıdya

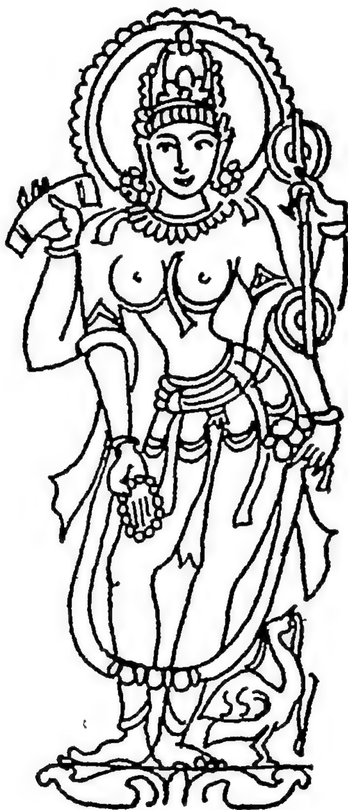


१२ सर्व प्रसन्ना
Sarva Prasanna

सरस्वती स्वरूप *Different forms of Saraswati*



१ महाविद्या *Mahā Vidyā*



२ महावाणी *Mahā Vani*



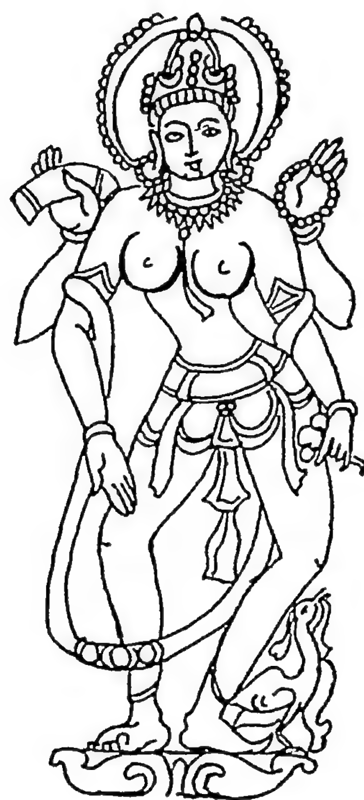
३ भारती *Bharati*



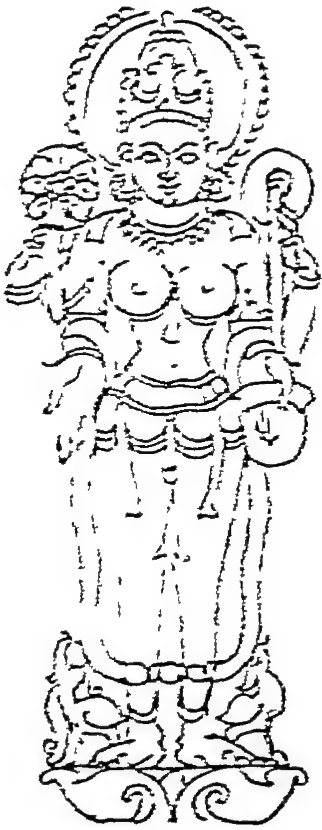
४ सरस्वती *Saraswati*



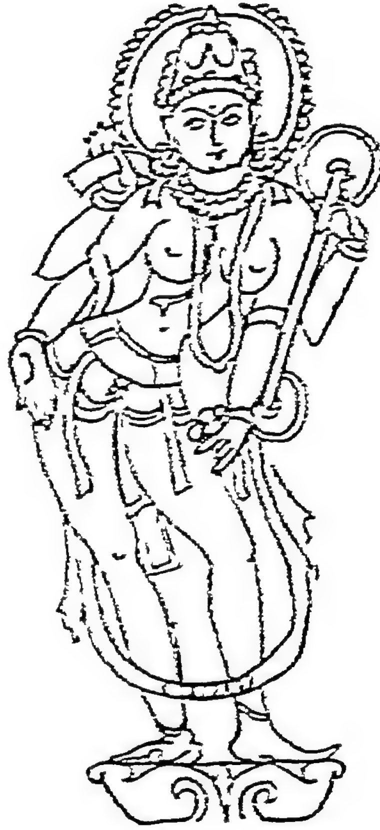
५ आर्या *Aarya*



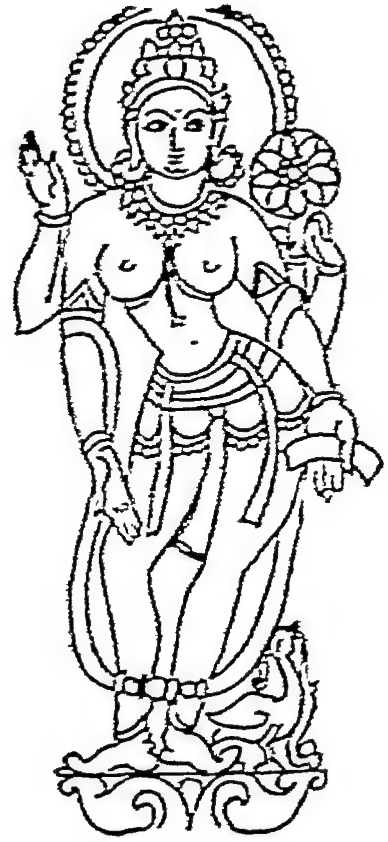
६ ब्राह्मी *Brahmi*



७ माहेश्वरी *Māheśvarī*



८ वैष्णवी *Vaiṣṇavī*



९ ऐन्द्री *Aindrī*



१० महालक्ष्मी *Mahā Lakṣmī*

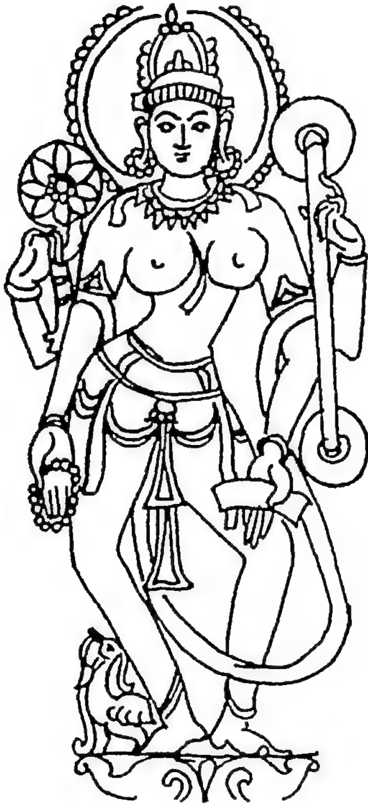


११ महाकाली *Mahā Kālī*

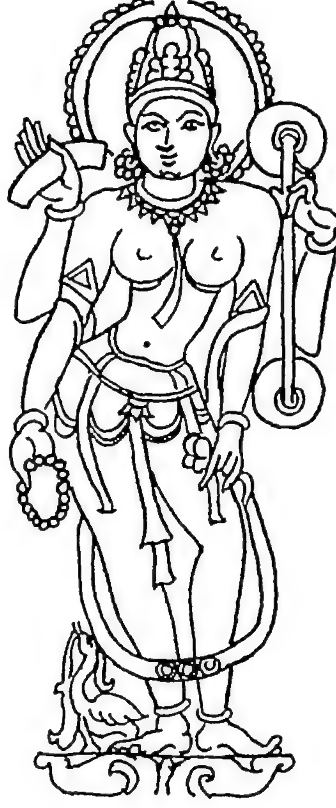


१२ महासरस्वती *Mahā Sarasvatī*

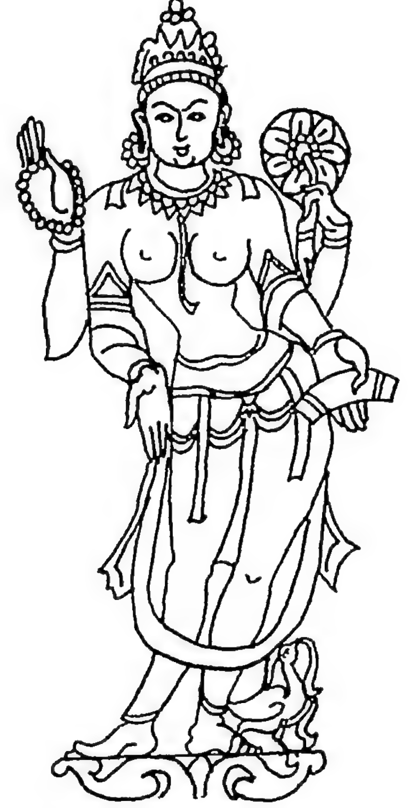
द्वादश सरस्वती स्वरूप (दीपार्णव) *Twelve Forms of Saraswati (Dipārnava)*



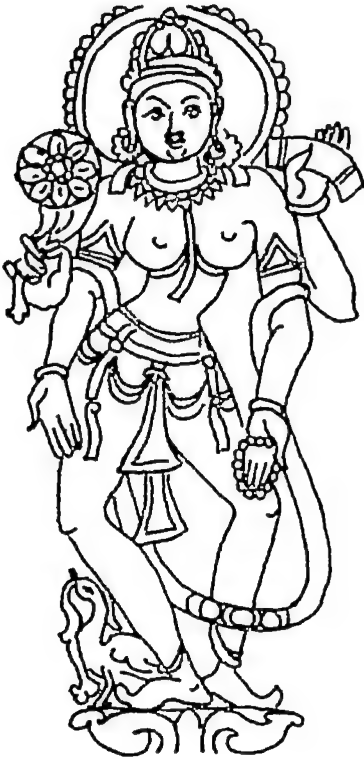
१ सरस्वती प्रथमा *Saraswati Prathama*



२ सरस्वती द्वितीया *Sarasu ati Dwitiya*



३ कमला रुक्षिणी *Kamala Rukshini*



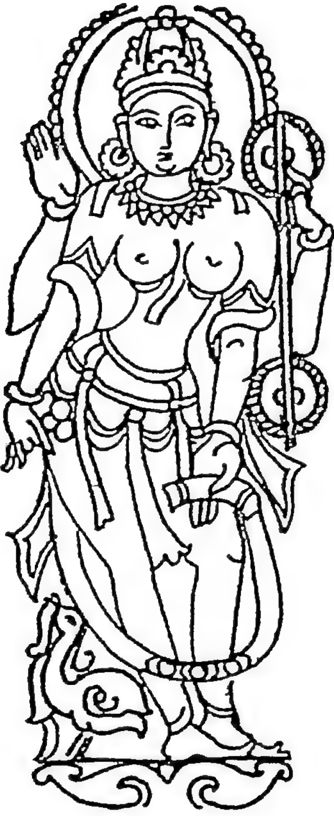
४ जया *Jaya*



५ विजया *Vijaya*



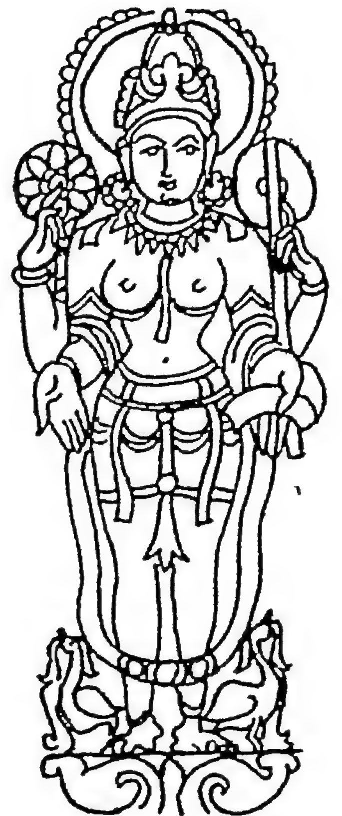
६ सारगा *Saranga*



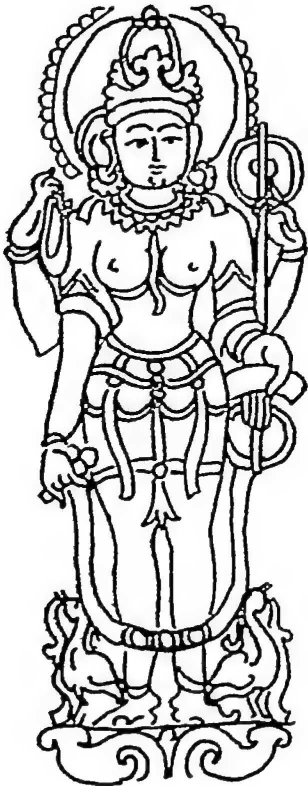
७ तुम्बरी *Tumbari*



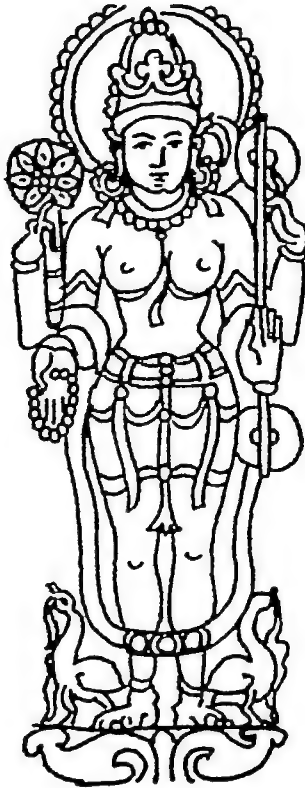
८ नारदी *Naradi*



९ सर्वमंगला *Sarva Mangala*



१० विद्याधरी *Vidyadeari*



११ सर्वविद्या *Sarvavidya*



१२ सर्वप्रसन्ना *Sarva Prasanna*

नवग्रह

दिक्पाल

गणेश

विश्वकर्मा

परिकर

आदित्य के स्वरूप

Nine Planets

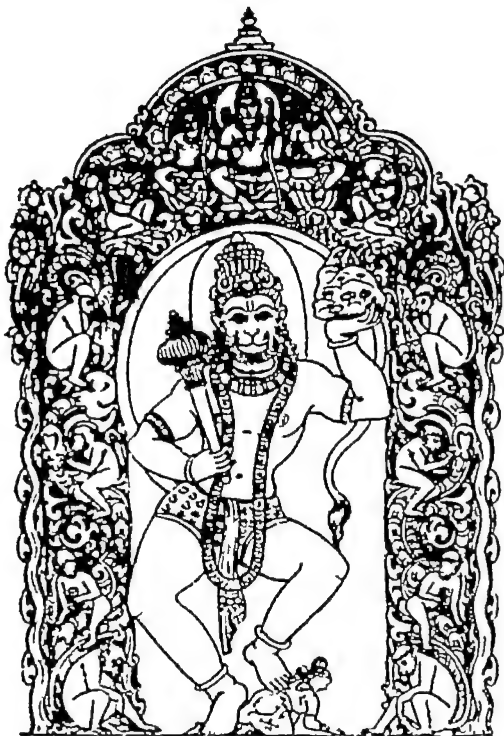
Dikpalas

Ganesh

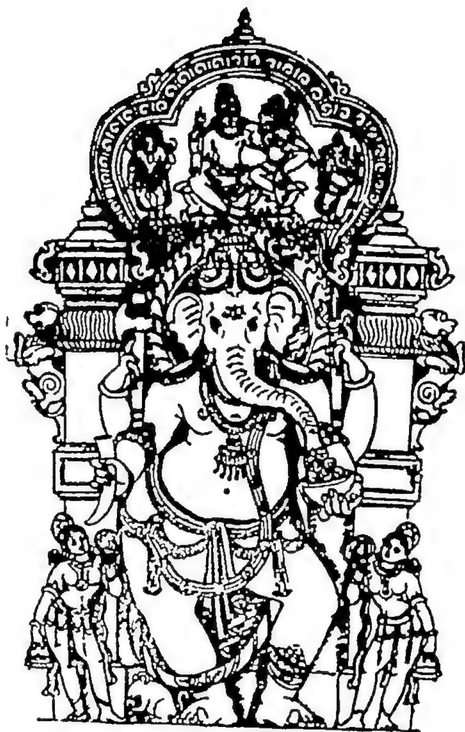
Vishwakarma

Parikara

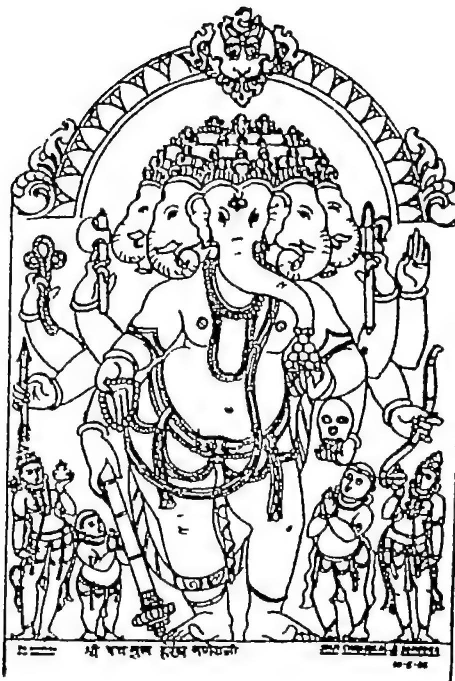
Forms of Aditya



पचायतन हनुमत
Panchayatan Hanumant



पचायतन गणेश
Panchayatan Ganesh



पचमुख गणेश
Panchamukha Ganesh

नवग्रह *Nine Planets*



शुक्र *Shukra*



शनि *Shani*



राहु *Rahu*



केतु *Ketu*



सूर्य *Surya*



चद्र *Chandra*



मगल *Mangal*



बुध *Budha*



गुरु *Guru*



मारुती *Māruti*



SURYADEV
सूर्यदेव

(*The Sun*)

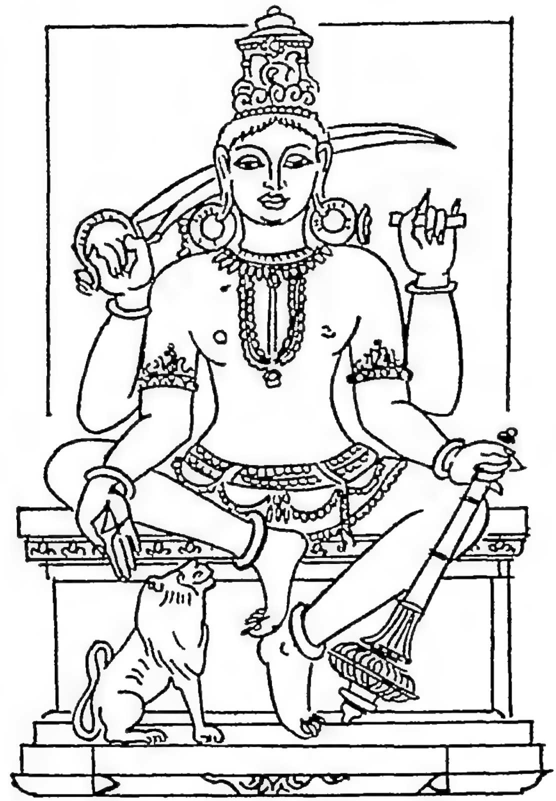


CHANDRADEV
चद्रदेव

(*The Moon*)

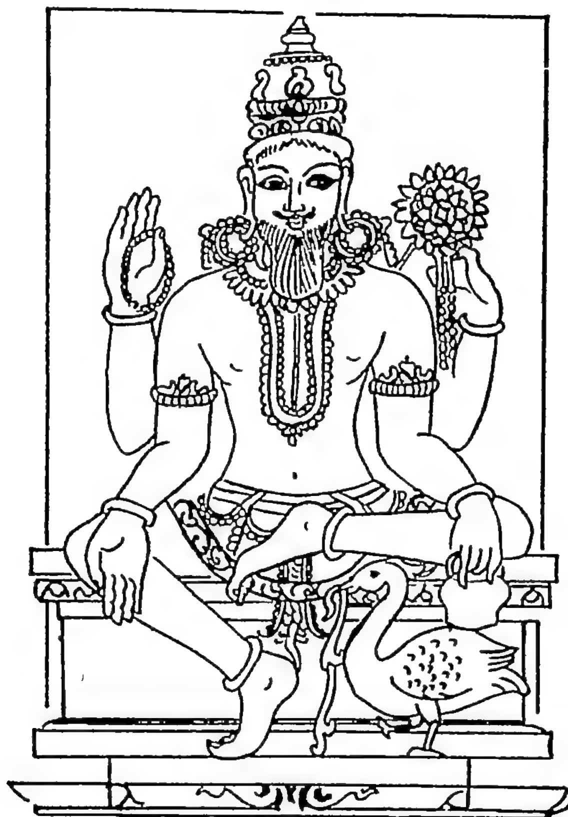


मगल *Mangal* (*Mars*)

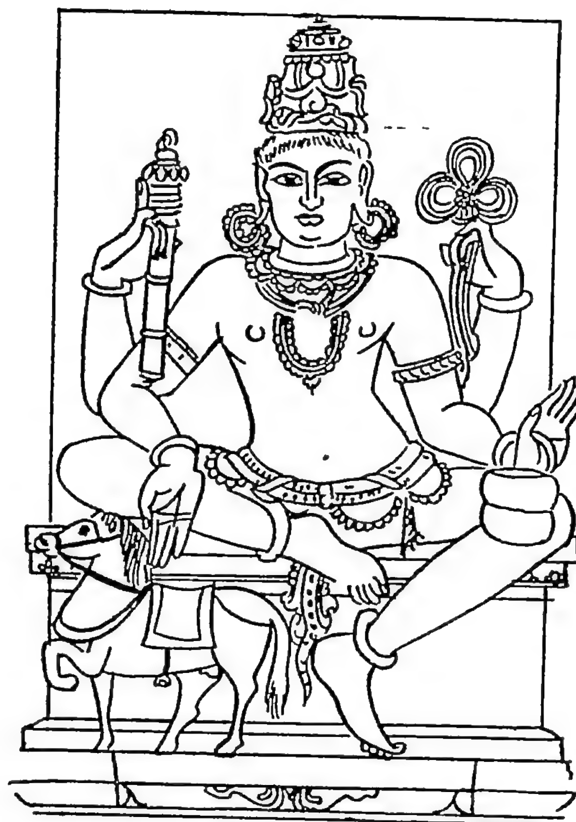


BUDH
बुघ

(*Mercury*)



GURU
गुरु
(*Jupiter*)



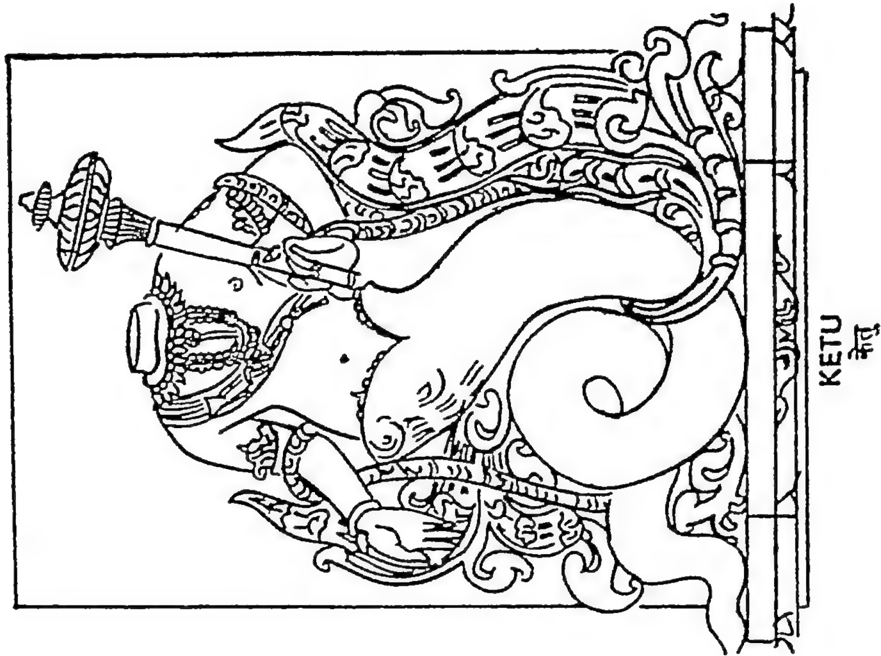
SHUKRA
शुक्र
(*Venus*)



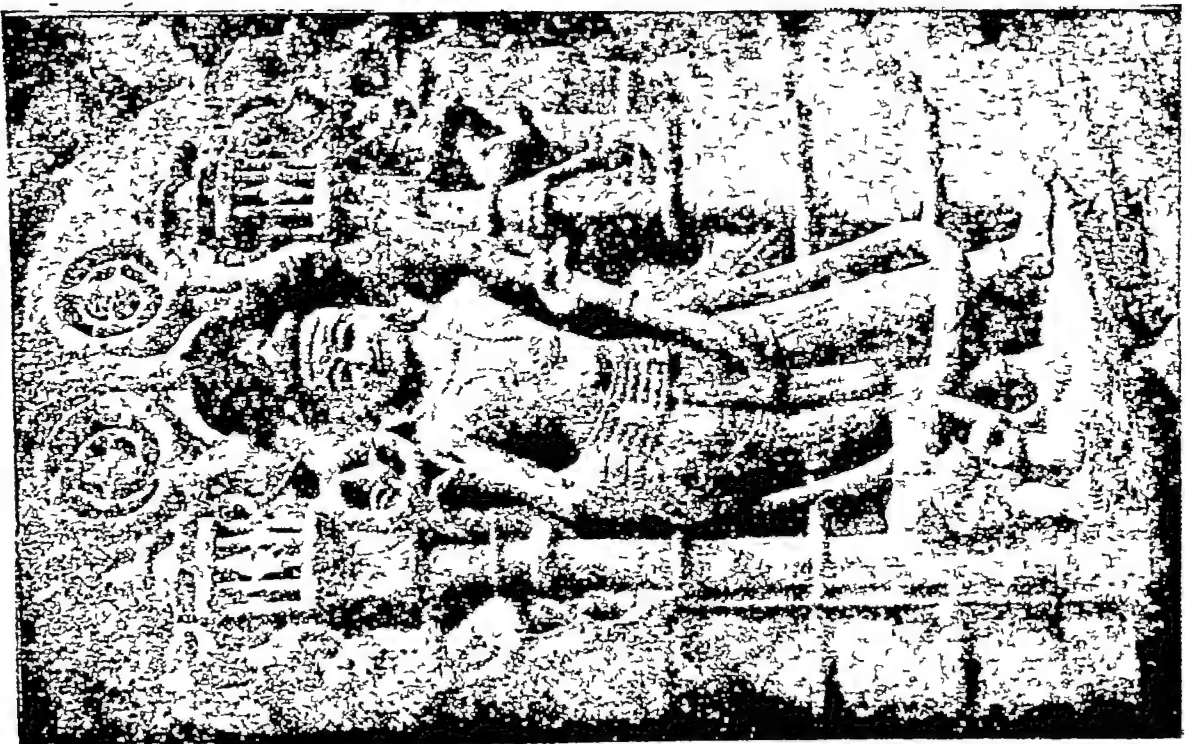
SHANI
शनि
(*Saturn*)

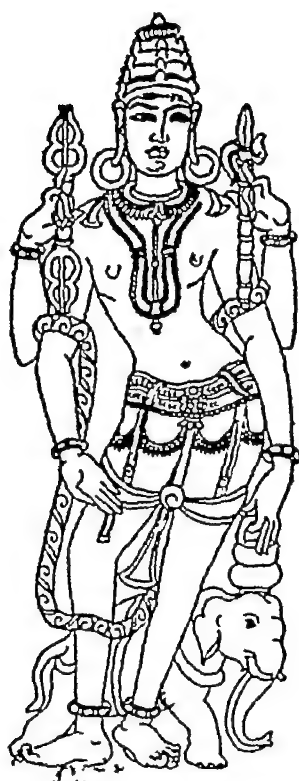


RAHU
राहू



KETU
केतु

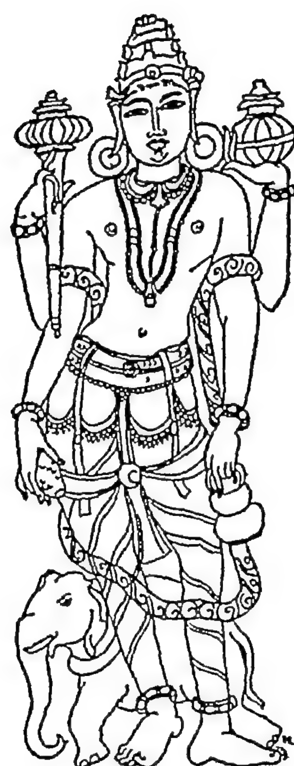




इन्द्र *Indra*

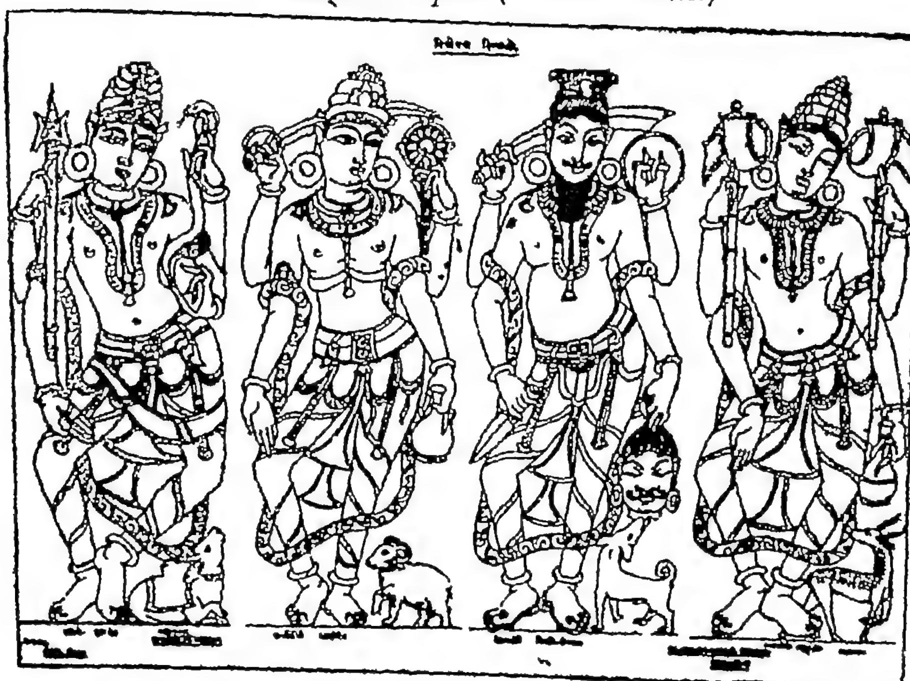


यम *Yam*



कुबेर *Kubera*

दिक्पाल *Dikpalas (Guardian Deities)*



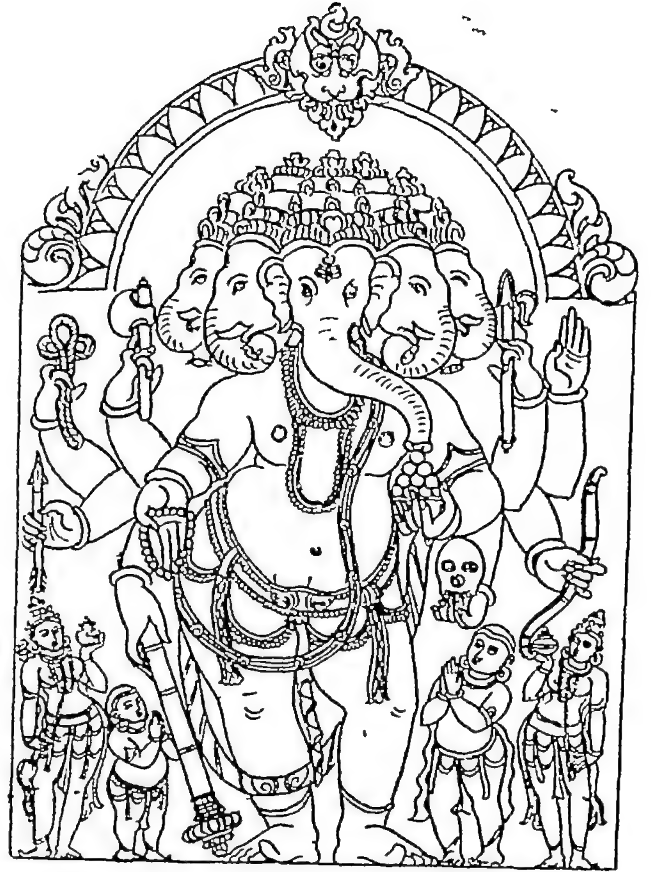
इशान *Ishān* अग्नि *Agni* नीरति *Niruti* वायु *Vāyu*



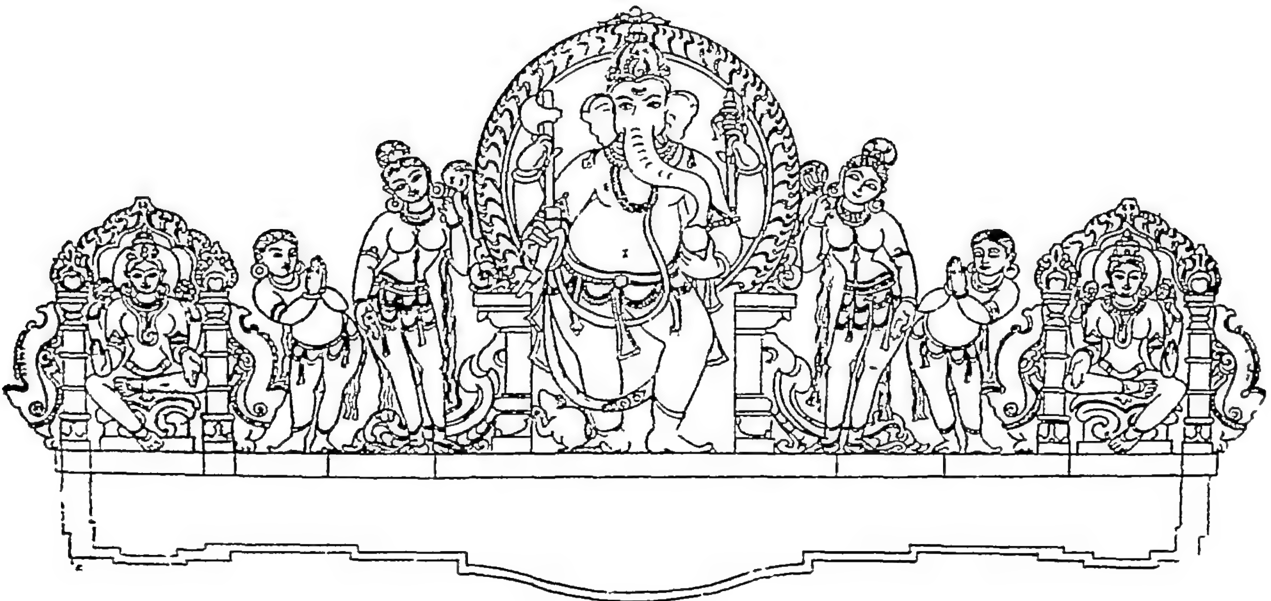
अनत *Ananta*



ब्रह्मा *Brahma*



गणेश *Ganesh*



सहपरिवार गणेश *Ganesh with his Consorts*



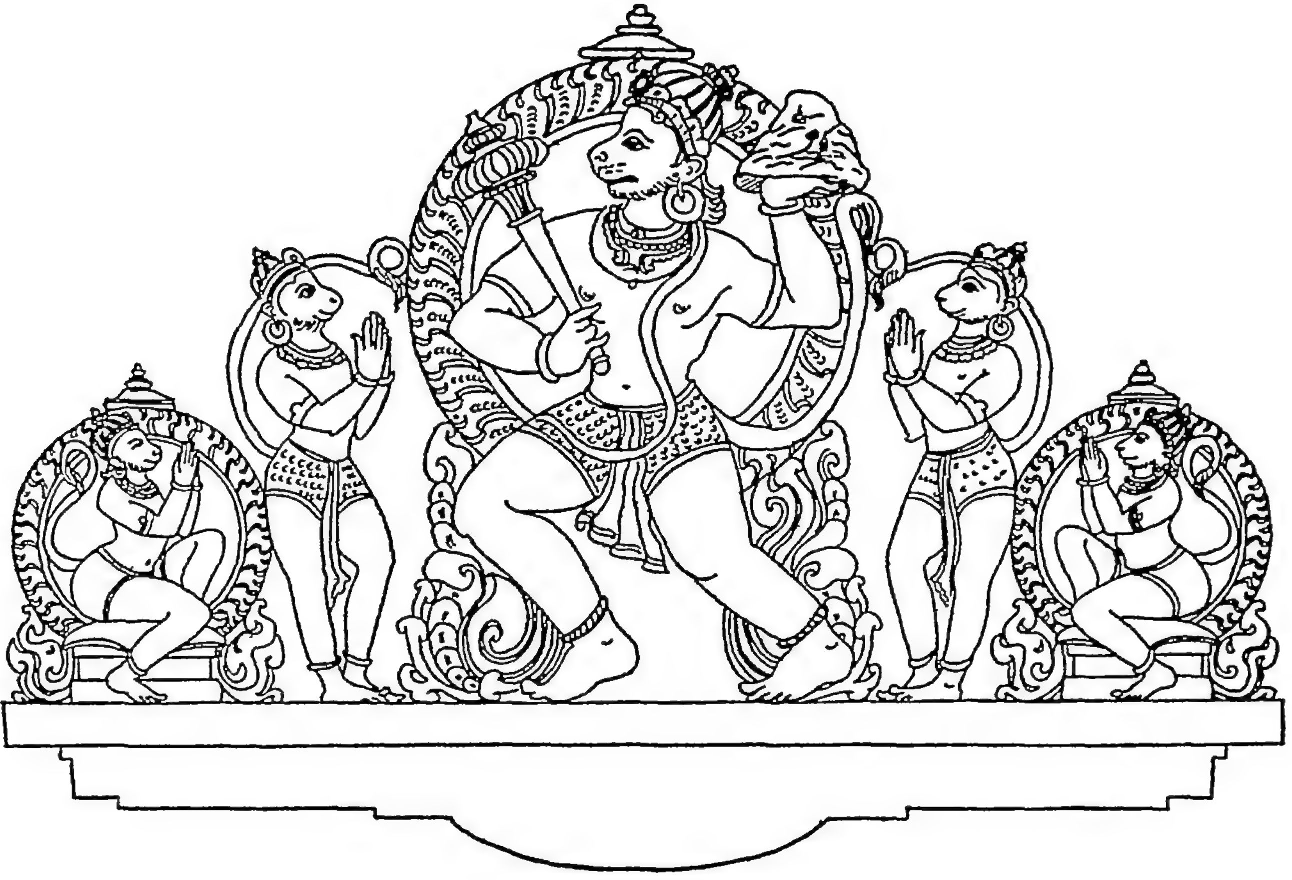
विश्वकर्मा *Vishvakarmā*
The Architect of the Universe



पचमुख विश्वकर्मा
Pancha-Mukha Vishvakarmā



सावित्री ब्रह्मा सरस्वती
Savitri Brahma Sarasvati



नल *Nal* अगद *Angada* मारुति *Maruti* जावुवत *Jambuvanta* निल *Nil*



दास-हनुमन्त *Das-Hanumant*

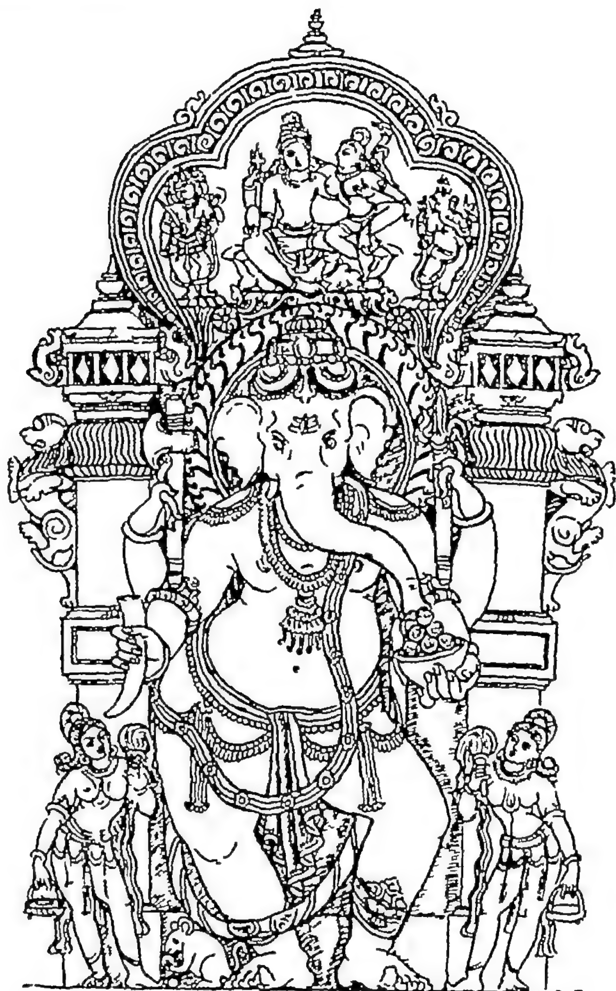


प्रासाद सुवर्ण पुरुष *The Celestial Consort*

परिकर *Ornamental Frames*



रामपञ्चायन परिकरयुक्त-मारुति
Maruti, The Monkey-Headed Demi-God, Helper and Devotee of Rāma



शिव पञ्चायनयुक्त विनायक
Vinayaka with heavenly consorts & family



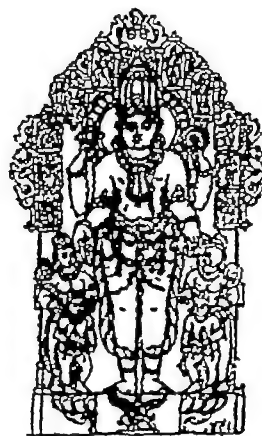
परिकरयुक्त ब्रह्मा
Brahma



महिषासुरमर्दिनी
Mahishā Sura-Mardini



परिकरयुक्त सूर्य
Surya



परिकरयुक्त विष्णु
Vishnu

द्वादशादित्य स्वरूप *Twelve forms of the Sun*



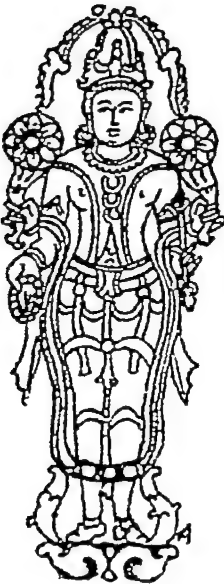
१ सुधाता *Sudhata*



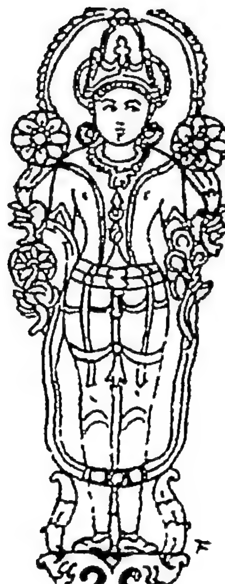
२ मित्रा *Solidarity*



३ आर्यमान *Aryaman*



४ रुद्र *Rudra*



५ वरुण *Varuna*



६ सूर्य *Surya*



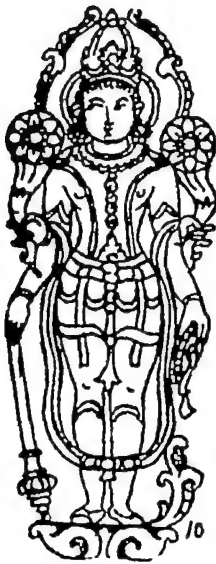
७ भग *Bhaga*



८ विवस्वत *Vivasvat*



९ पुषा *Pusha*



१० सविता *Savitā*



११ त्वष्टा *Tvashta*



१२ विष्णु *Vishnu*



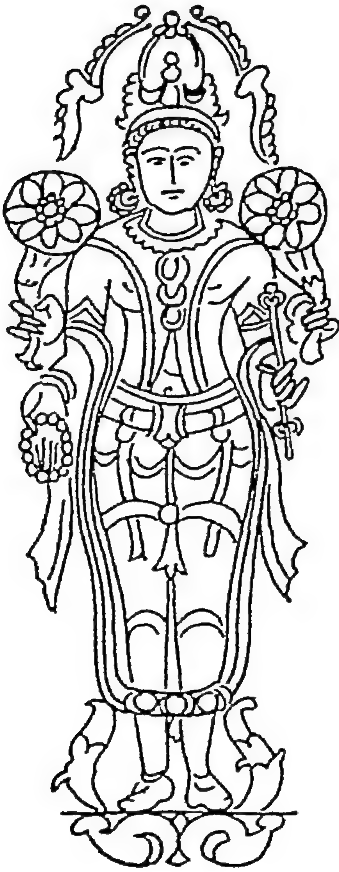
SUDHATA
सुधाता



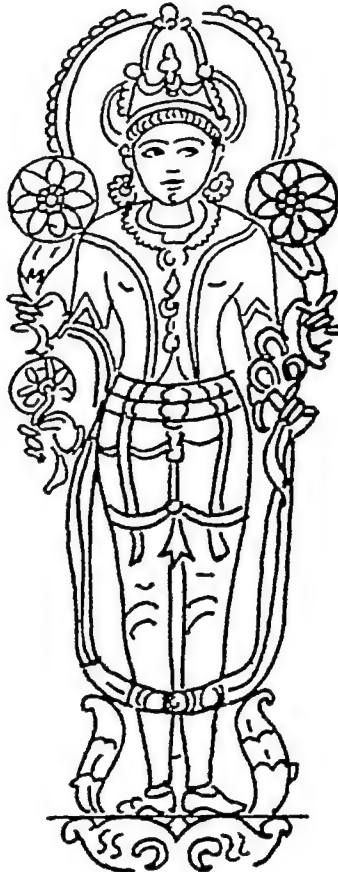
MITRA
मित्रा



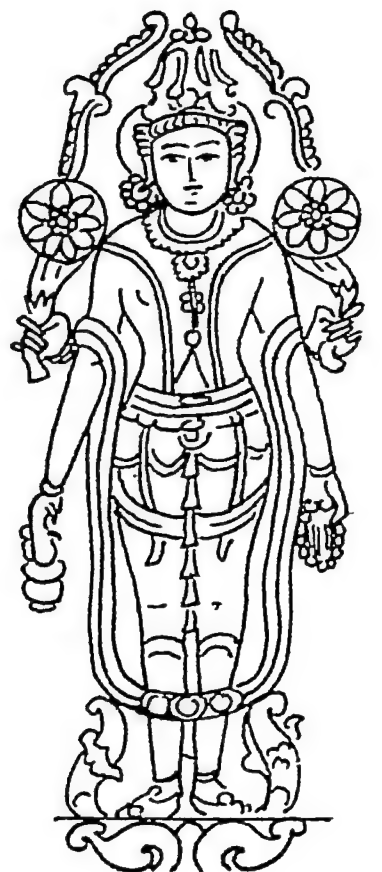
ARYAMAN
आर्यमणि



४ रुद्र
Rudra



५ वरुण
Varuna



६ सूर्य
Surya



BHAG
भग



VIVASWAN
विवस्वान



PUSPA
पुषा



SAVITA
सविता



TWASHTA
त्वष्टा



VISHNU
विष्णु

आदित्य स्वरूप (दीपार्णव) *Different Forms of Sun (Deeparnava)*


ADITYA
आदित्य


RAVI
रवि


GAUTAM
गौतम


BHANUPTAN
भानुप्तान


SHACHITTA
शाचित्त


DIVAKARA
दिवाकर



७ धूमकेतु *Dhumketu*



८ सभव *Sambhava*



९ भास्कर *Bhāskara*



SURYADEV
सूर्यदेव



SANTUSTADEV
सतुष्टदेव



SUVARNA KETU
सुवर्णकेतु



RATHARUDHA MARKAND
रथारुढमार्कंड

लिंगप्रकार

जलाधारी के प्रकार

देवांगना के स्वरूप

देवानुचर

व्यालस्वरूप

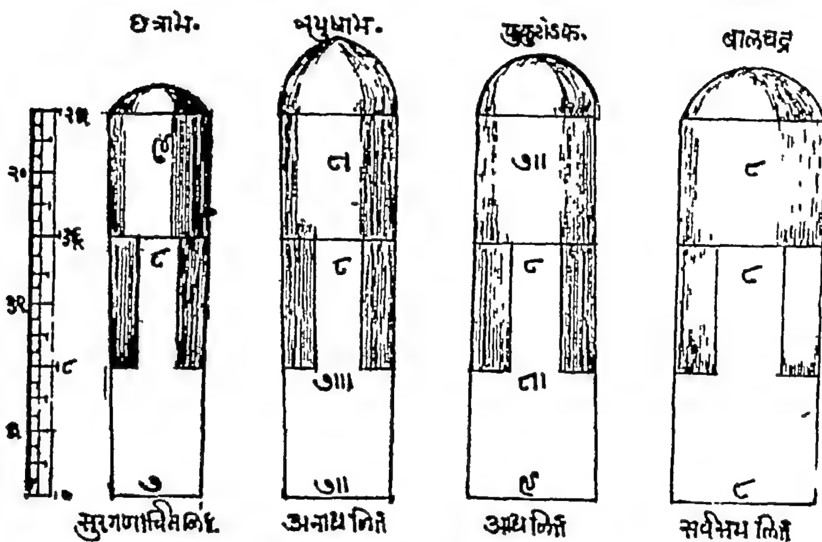
Various Forms of Lingas

Various Forms of Jaladhari

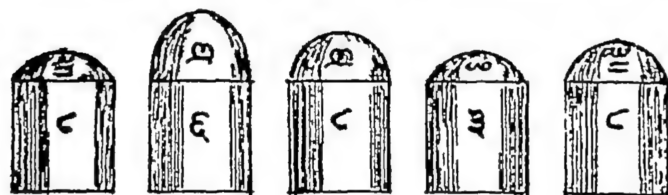
Devanganas (Celestial Nymphs)

Demi-Gods and Genii

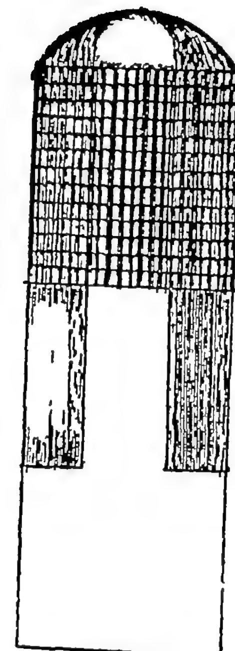
Different Forms of Griffins (Vyala)

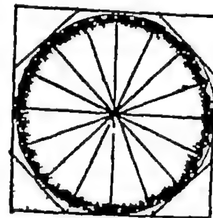


राजलिंग उदयमाने नामाभिधान *Rājalinga named according to its top*

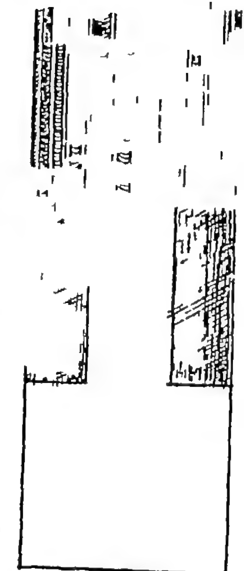


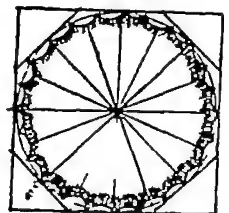
Rājlinga (5 Forms of Shirovartan)



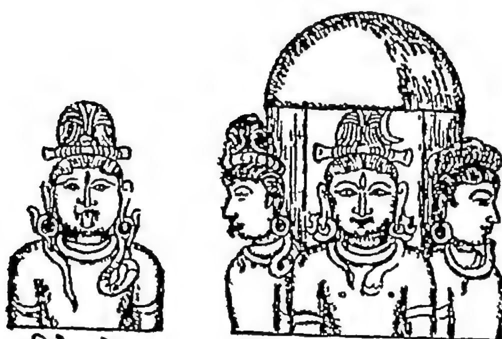


सहस्रलिंग शतलिंग
Sahasralinga Shat Linga

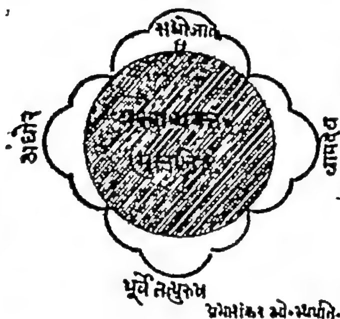


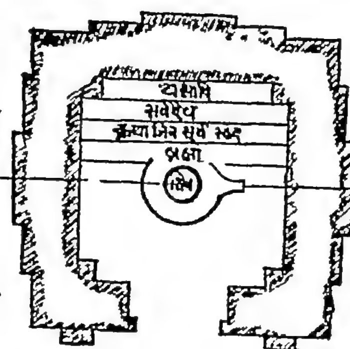


धारालिंग
Dhārā Linga

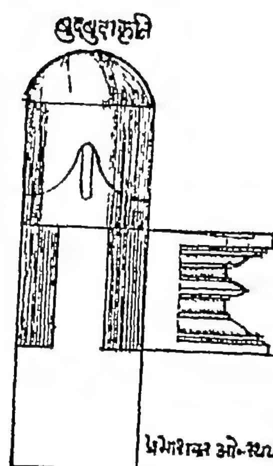






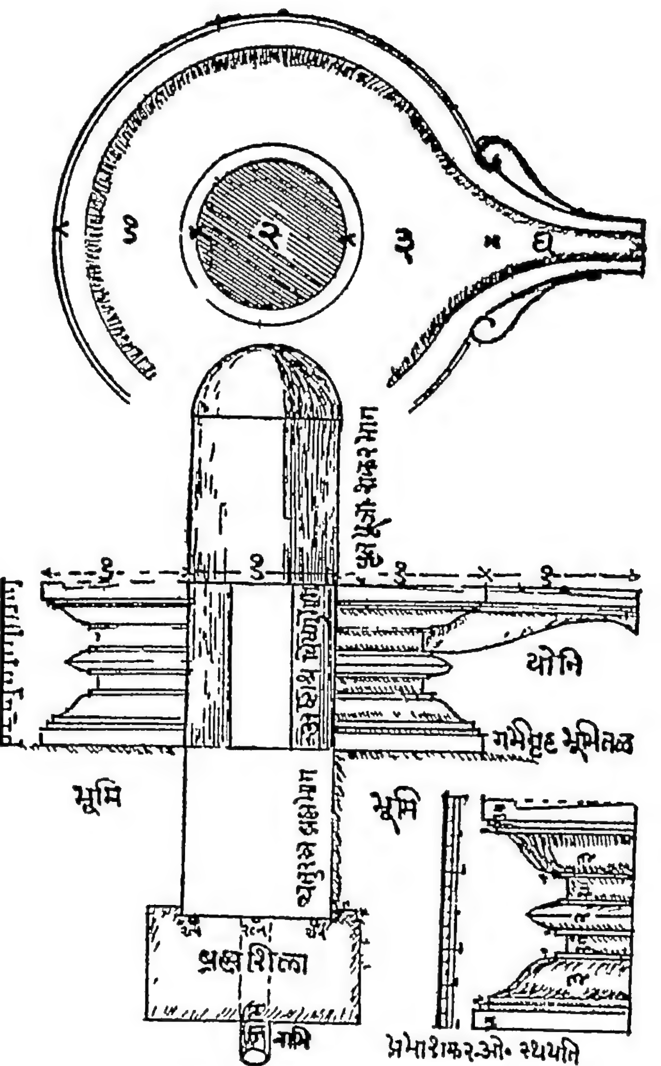


व्यक्तलिंग या मुखलिंग *Vyakta linga or Mukha Linga*

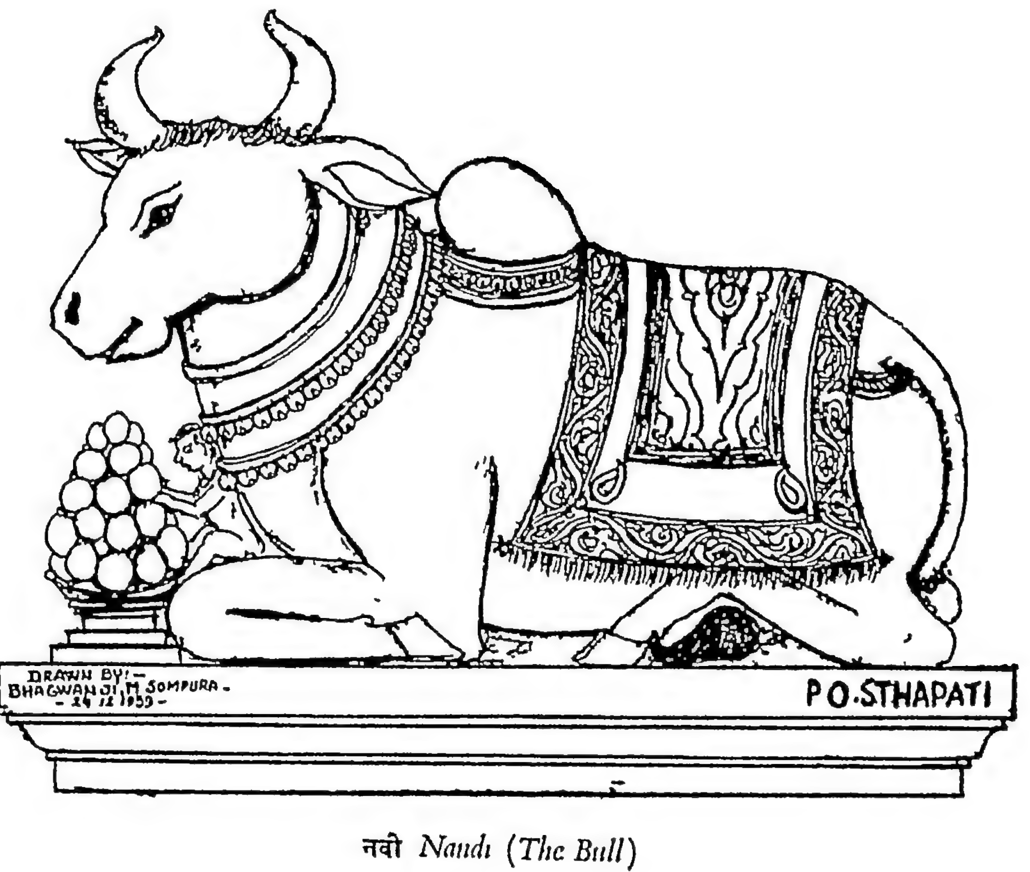




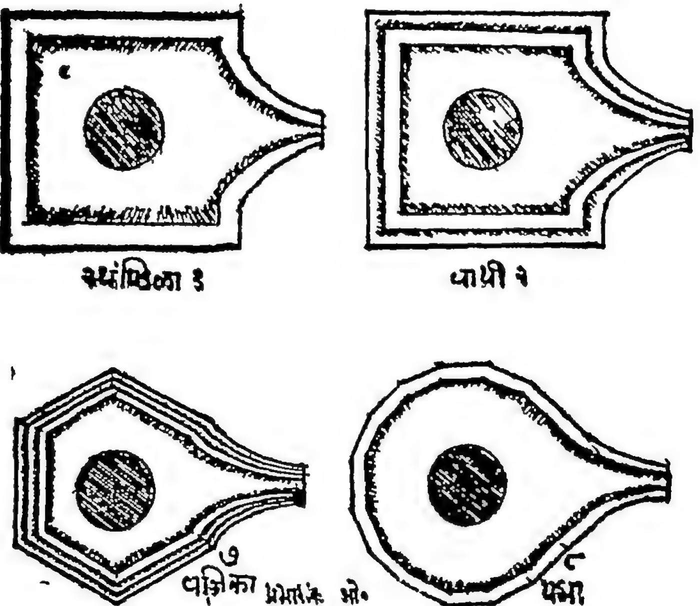
लिंग और नदि *Linga and Nandi*

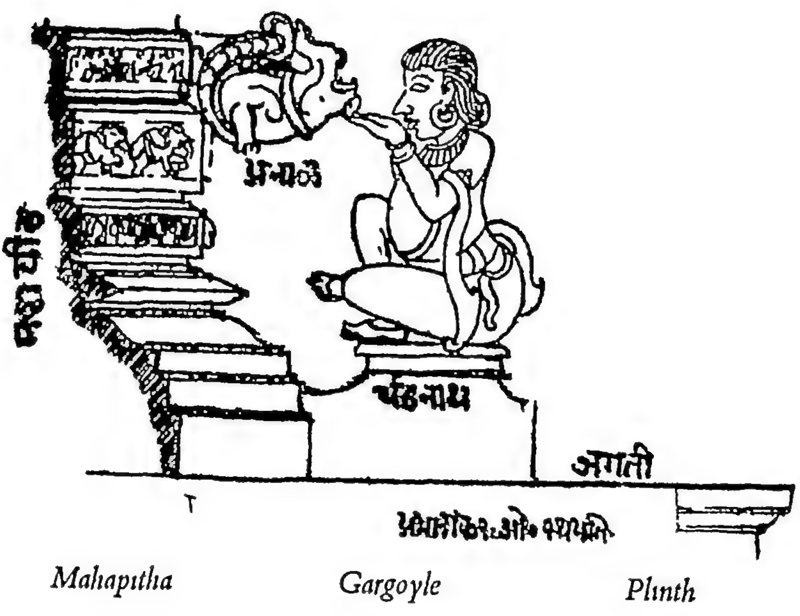


राजलिंग, घटितलिंग और जलाधारी
Rajlinga, Forged Linga and Jalādhari

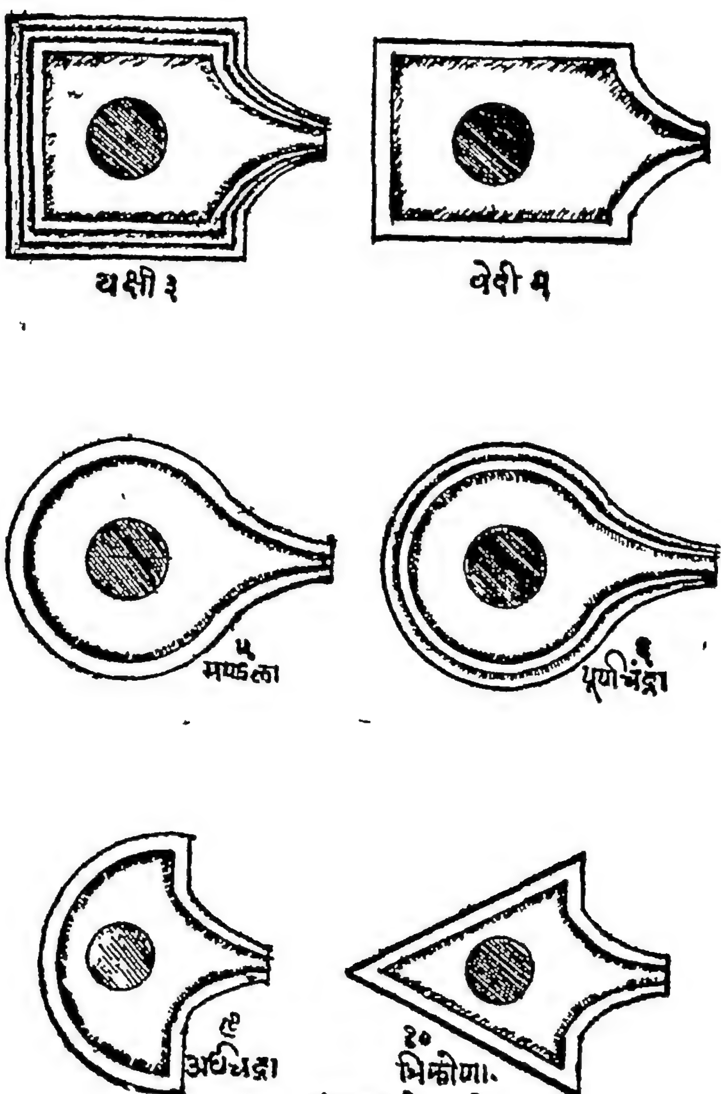


नंदी *Nandi (The Bull)*





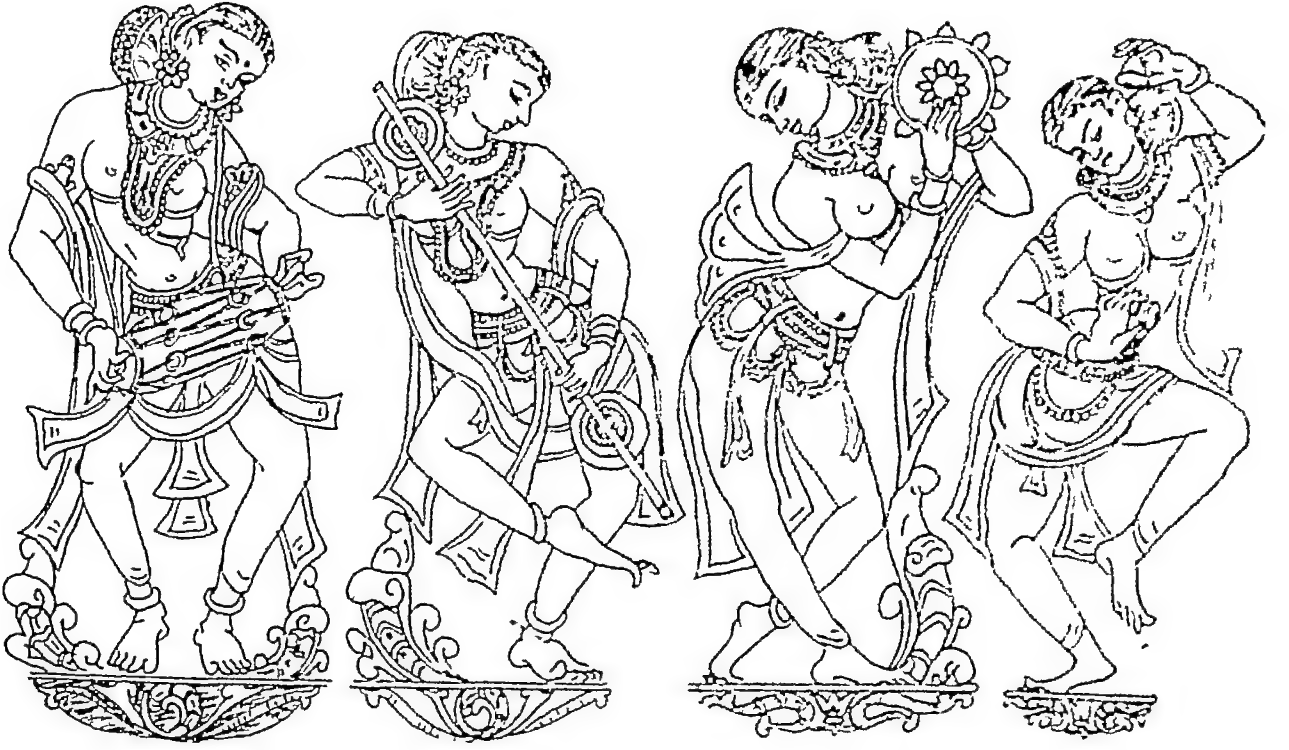
Mahapitha *Gargoyle* *Plinth*

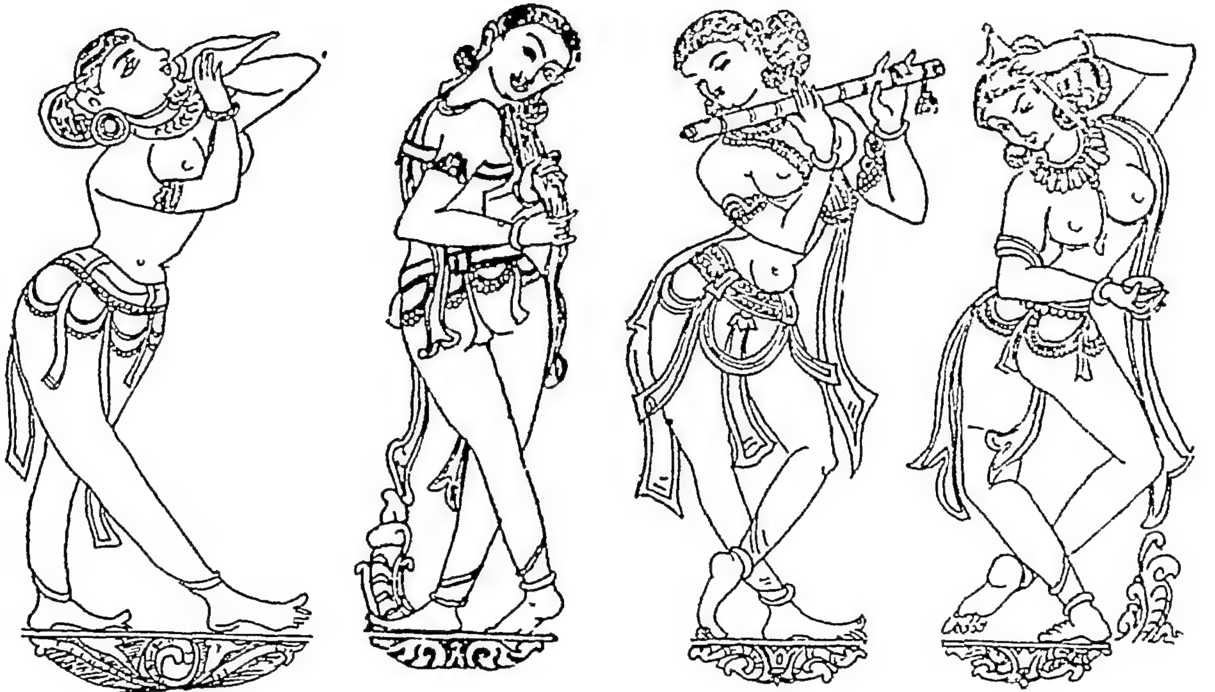


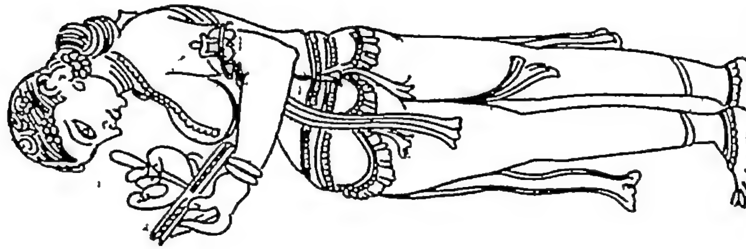
जलाधारी के प्रकार

Dfferent Forms of Jalādhārı (Pedestals of lıngas)

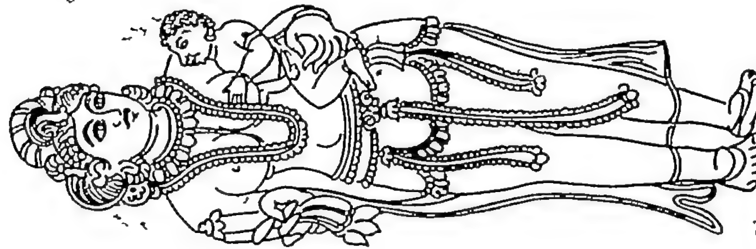
संगीत–वाद्ययुक्त विविध देवागना Nymphs with Musical Instruments



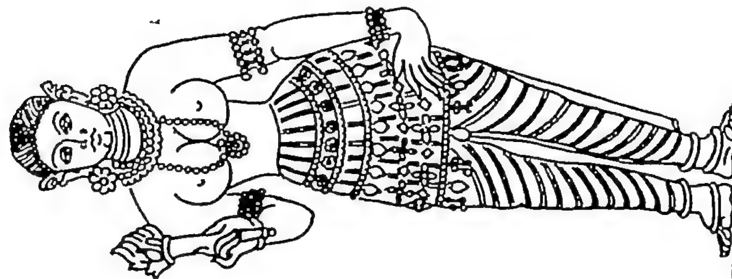




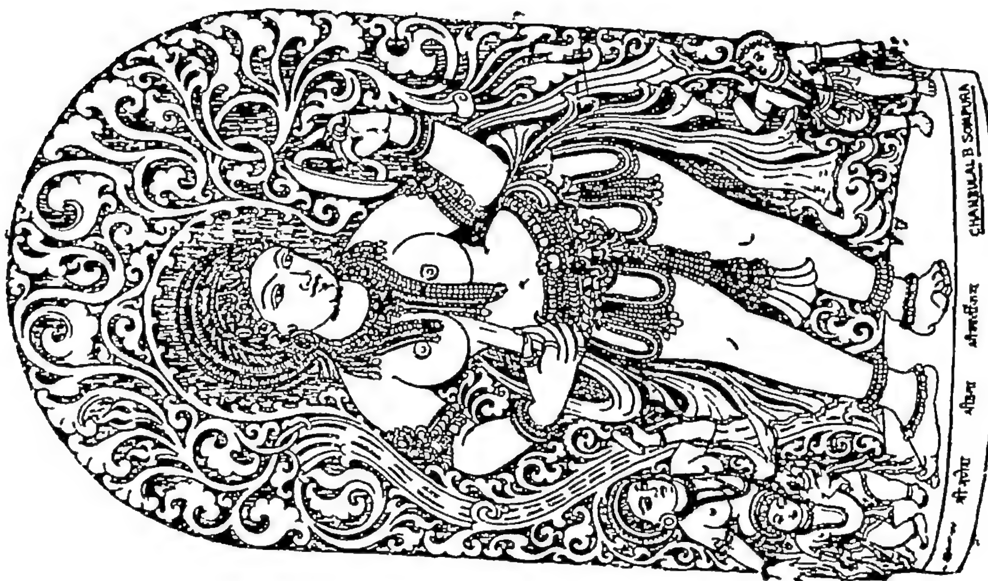
पत्रलेखिनी
Nymph writing Letter



पुत्रवल्लभा
Mother with Child

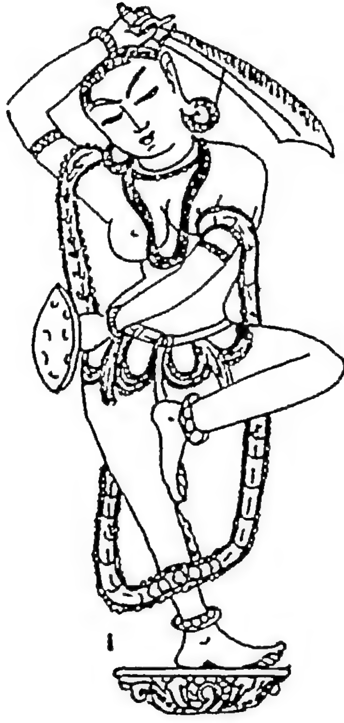


चामर धारिणी
Damsel with fly whisk

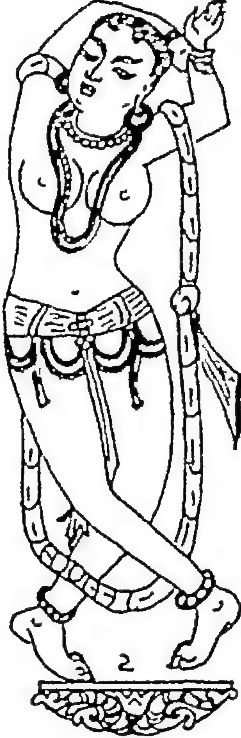


विधिचित्ता देवांगना कर्नाटक शैली
Vidhchita in Karnataka Style

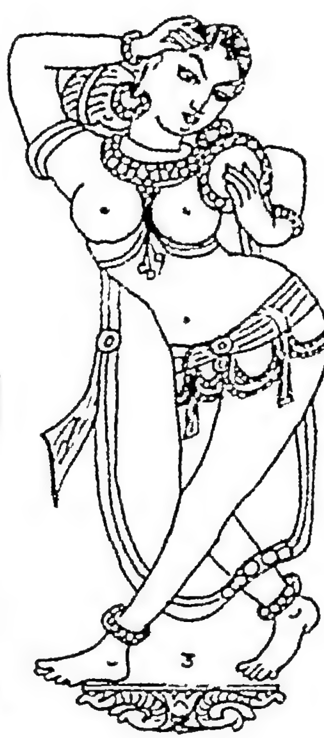
देवांगना स्वरूप Celestial Nymphs



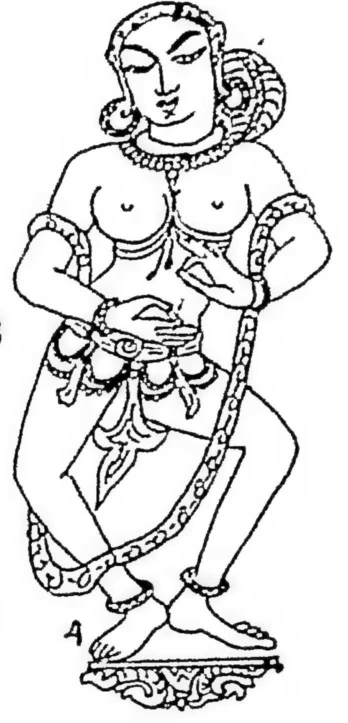
मेनका
Menaka



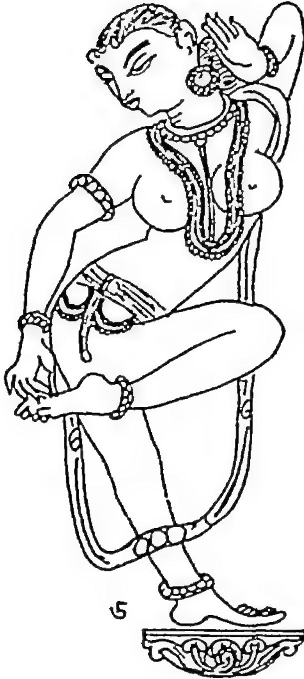
लीलावती
Lilavati



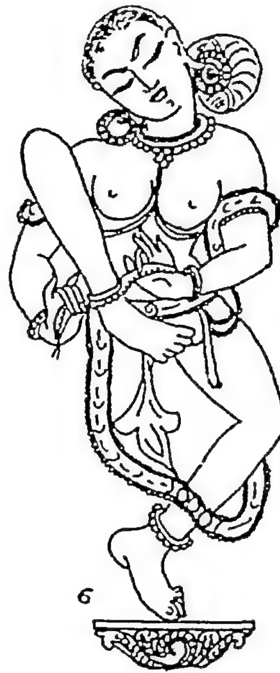
विधिचिता
Vidhichita



सुन्दरी
Sundari



शुभगामिनी
Shubhagamini



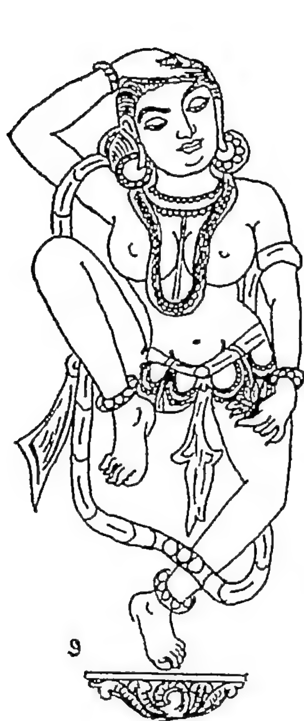
हसावली
Hansavali



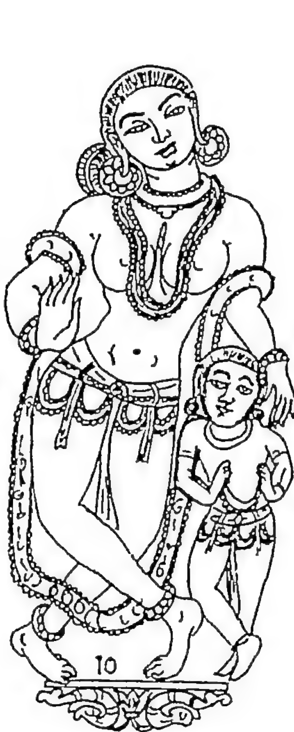
सर्वकला
Sarvakala



कर्पूरमजरी
Karpurmanjari



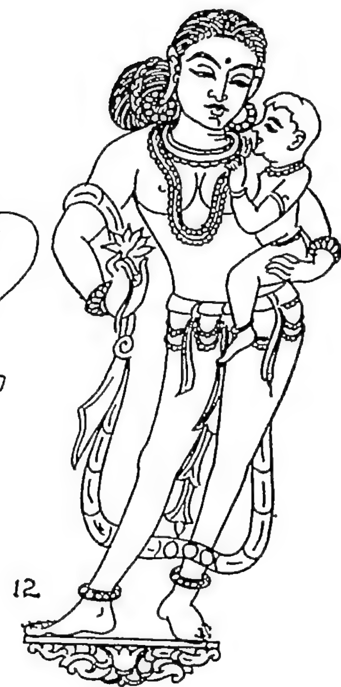
पद्मिनी
Padmini



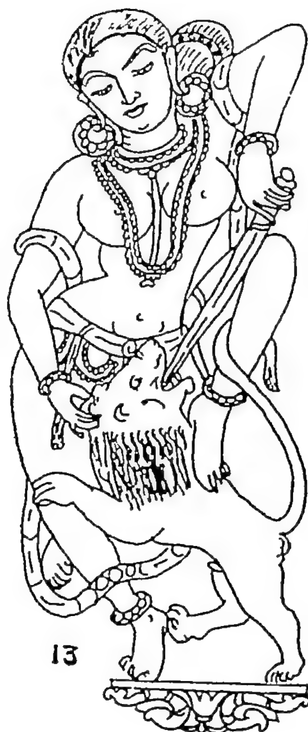
पद्मनेत्रा
Padmanetra



चित्रिणी
Chitrini



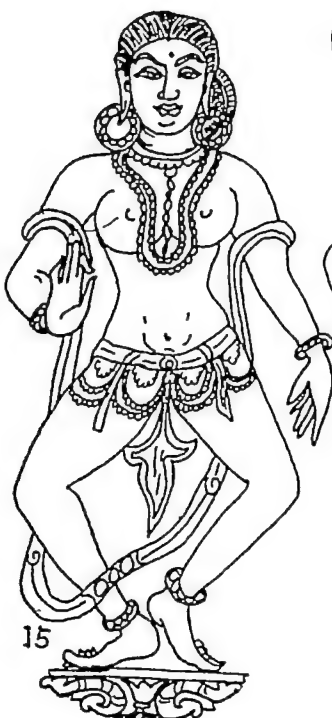
पुत्रवल्लभा
Putravallabha



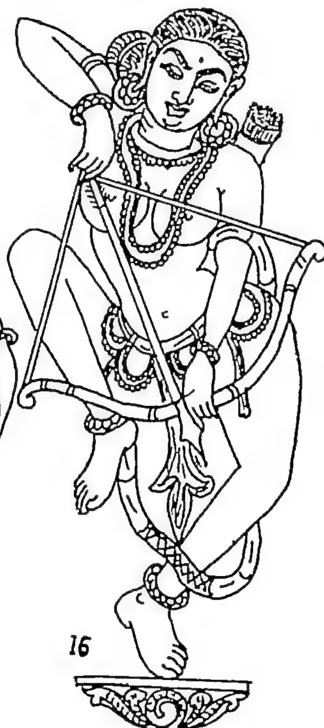
गौरी
Gauri



गाधारी
Gandhari



देवज्ञा
Devagna



मारिचिका
Marichika



चद्रावली
Chandravali



पत्रलेखा
Patralekha



सुगधा
Sugandha



शत्रुमर्दिनी
Shatrumardini



मानवी
Manavi



मानहसा
Manhansa



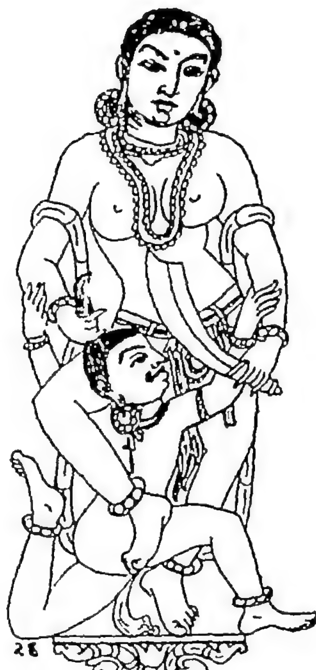
सुस्वभावा
Susvabhava



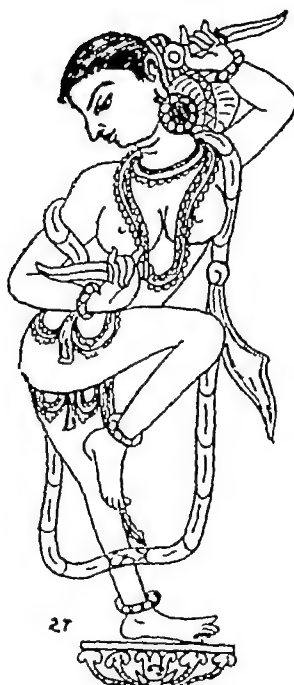
भावमुद्रिका
Bhavamudrika



मृगाक्षी
Mrugakshi



उर्वशी
Urvashi



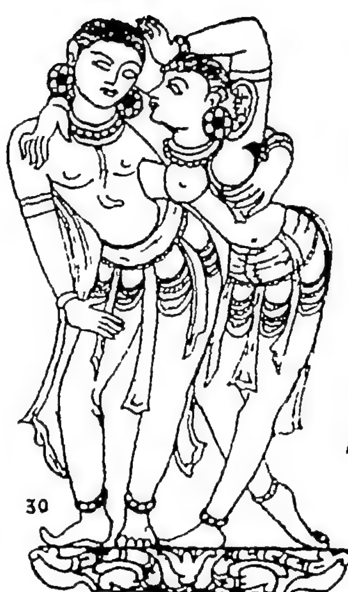
रंभा
Rambha



मंजुघोषा
Manjughosha



जया
Jaya



मोहिनी-विजया
Mohini-Vijaya

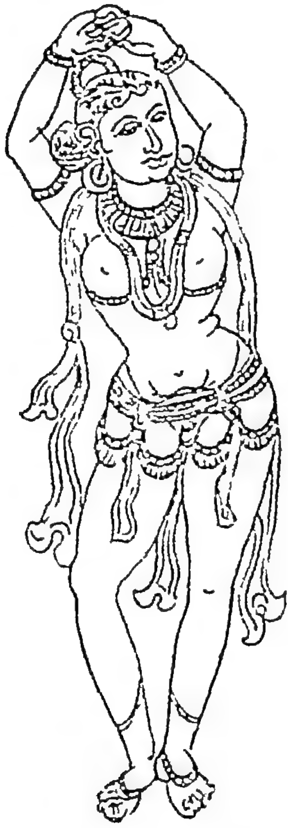


चंद्रवका
Chandravaka

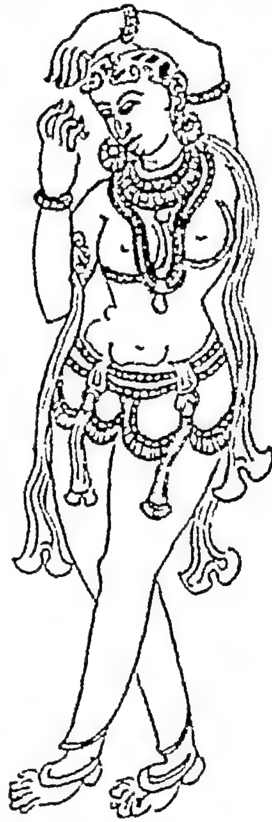


कामरूपा
Kamaroopa

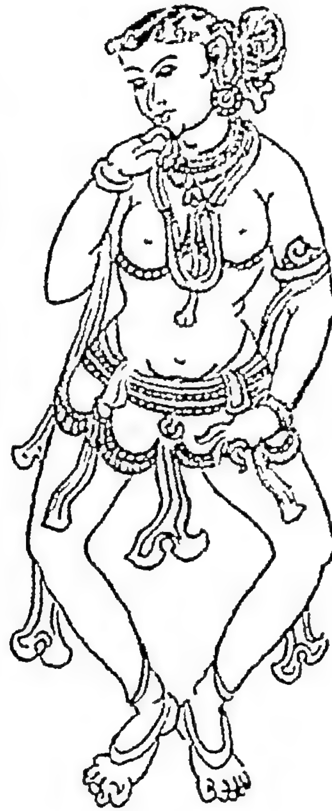
देवागना (कलिंग–उड़िसा) Nymphs (Kalinga-Orissa)



१ आलस्या *Alasya*



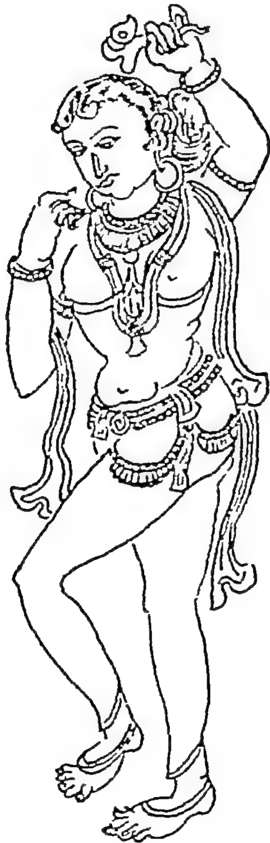
२ तोगणा *Toganā*



३ मुग्धा *Mugdha*



४ मानिनी *Manini*



५ जलमालिका *Jalamālika*



६ पद्मगंधा *Padmagandha*



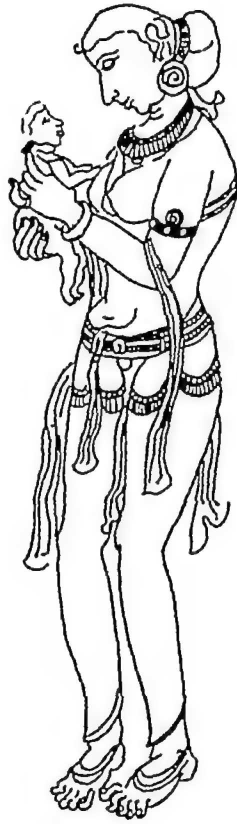
७ दर्पणा *Darpana*



८ विन्यासा *Vinyasa*



९ केतकी भारणा
Ketakı-Bhāranā



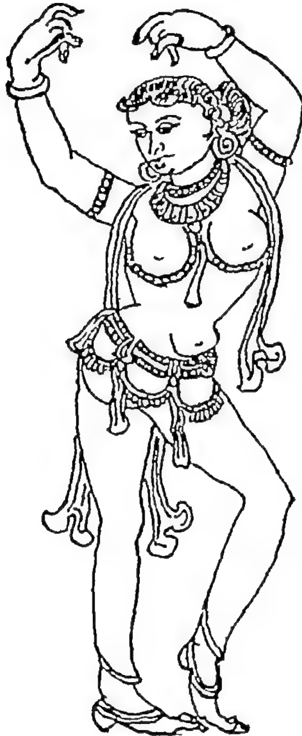
१० मातृमूर्ति
Matru Murtı



११ चामरा
Chāmara



१२ गुठना
Gunthanā



१३ नर्तकी
Nartakı



१४ शुकसारिका
Shukra Sārıkā



१५ नूपुर पादिका
Nupura Pādıkā



१६ मर्दला
Mardalā

देवानुचर – Demi-Gods



क्षेत्रपाल
KSHETRAPAL



पितृ
PITRU



दानव
DANAV



असुर
ASUR



विद्याधर–मालाधर
VIDYADHAR — MALADHAR



गाधर्व युगल
GANDHARVA—UGAL



यक्षिणी
YAKSHINI



ऋषि
Rishi (Sear)



नाग वासुक
Nāga Vasuka



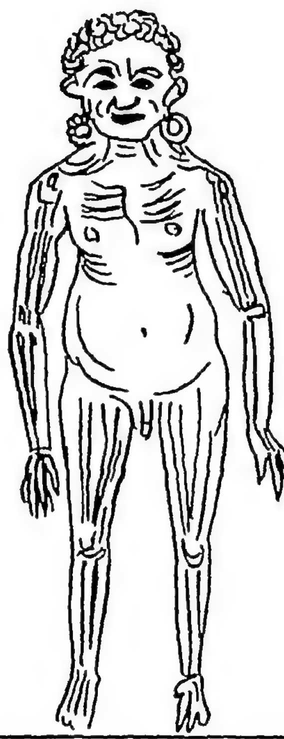
किन्नर
Kinnar



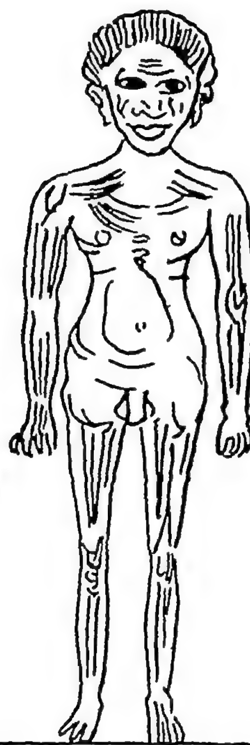
यक्ष
Yaksha



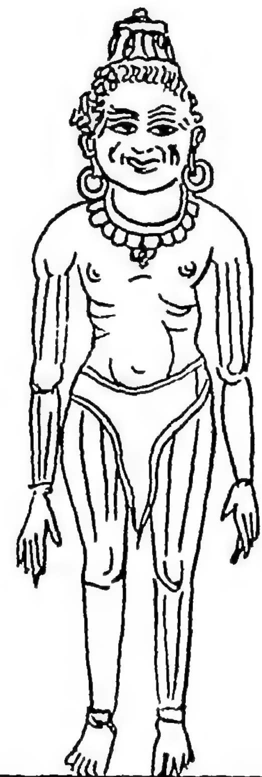
शाकिनी
SHAKINI



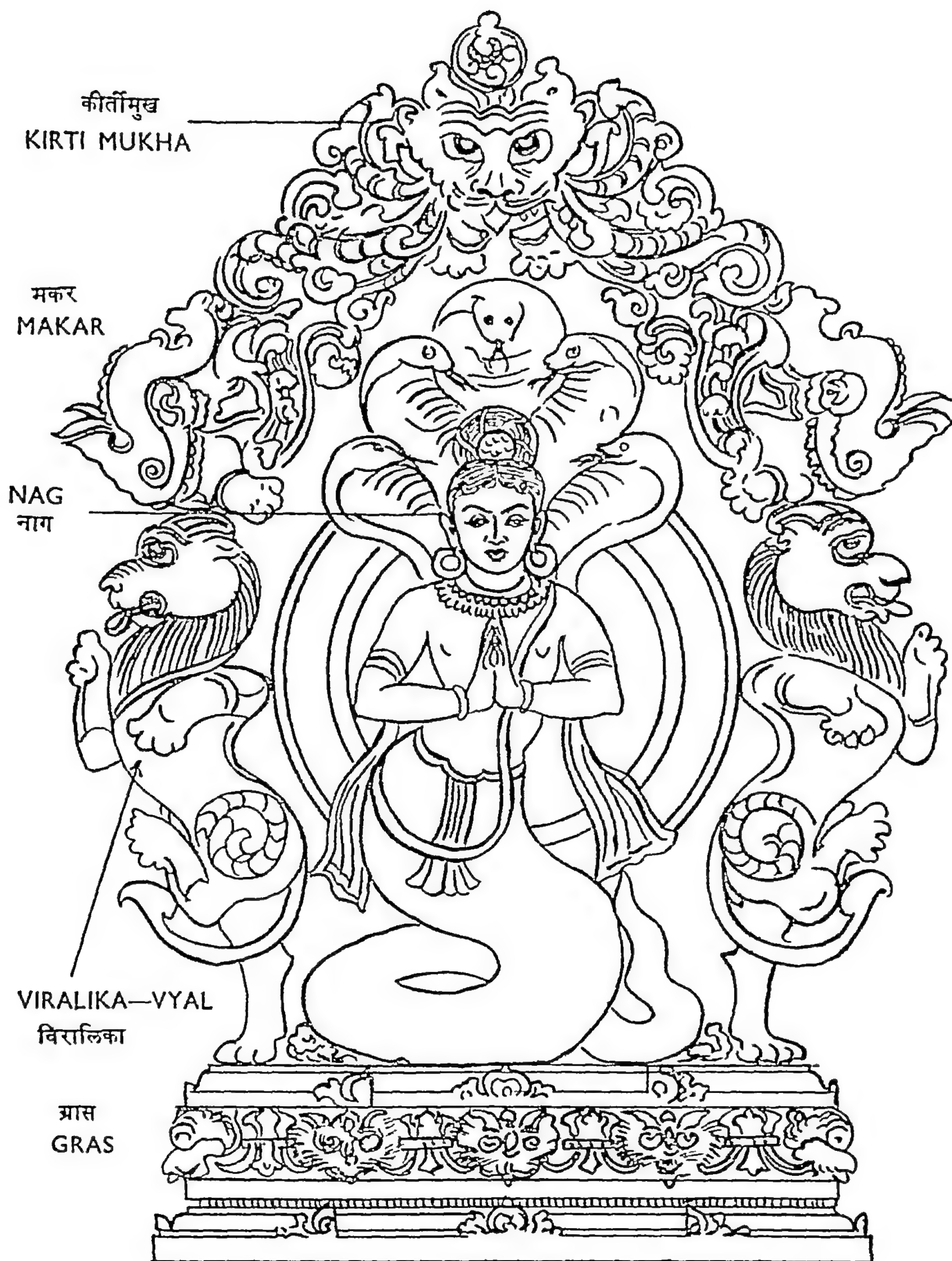
प्रेत
PRET



पिशाच
PISHACH



वेताल
VAITAL



पचजीव *Pancha Jiva*

व्याल स्वरूप Forms of Griffins



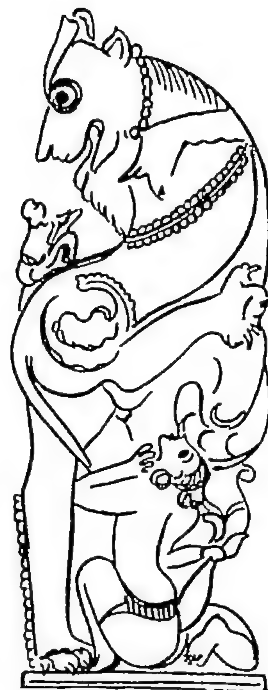
LION
सिंह



ELEPHANT
हाथी



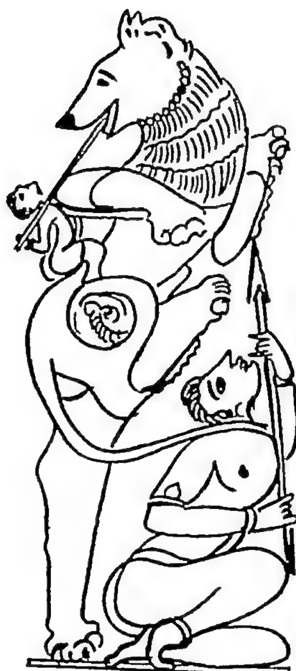
MAN
मानव



GRAS
ग्रास



तोता
PARROT



श्वान
DOG



वराह
VARAH



सिंह
LION

जैनमूर्ति और अंग विभाग

चौदह स्वप्न

अष्ट प्रतिहार

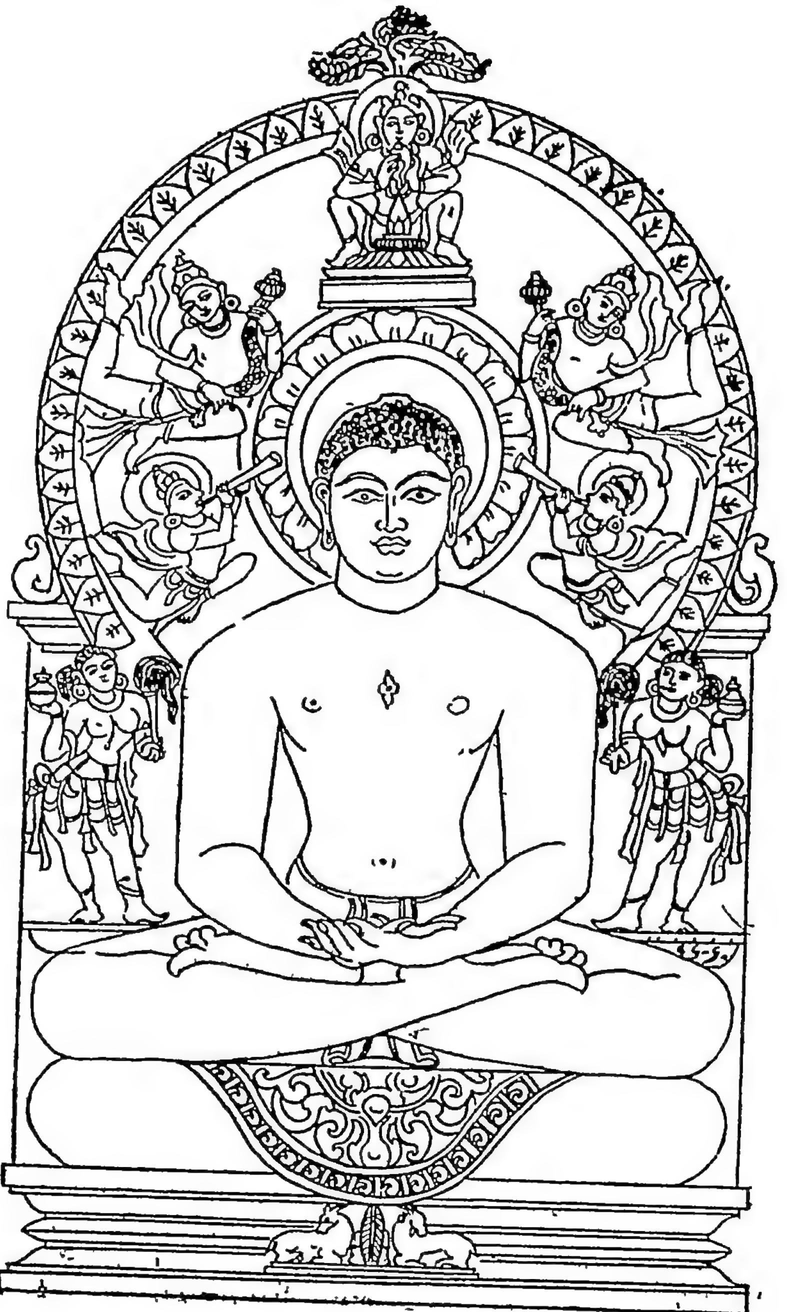
मंदिरो के सन्मुख दर्शन

Jain Moorti and Divisions of Jain Images

Fourteen Dreams

Ashta Pratihar

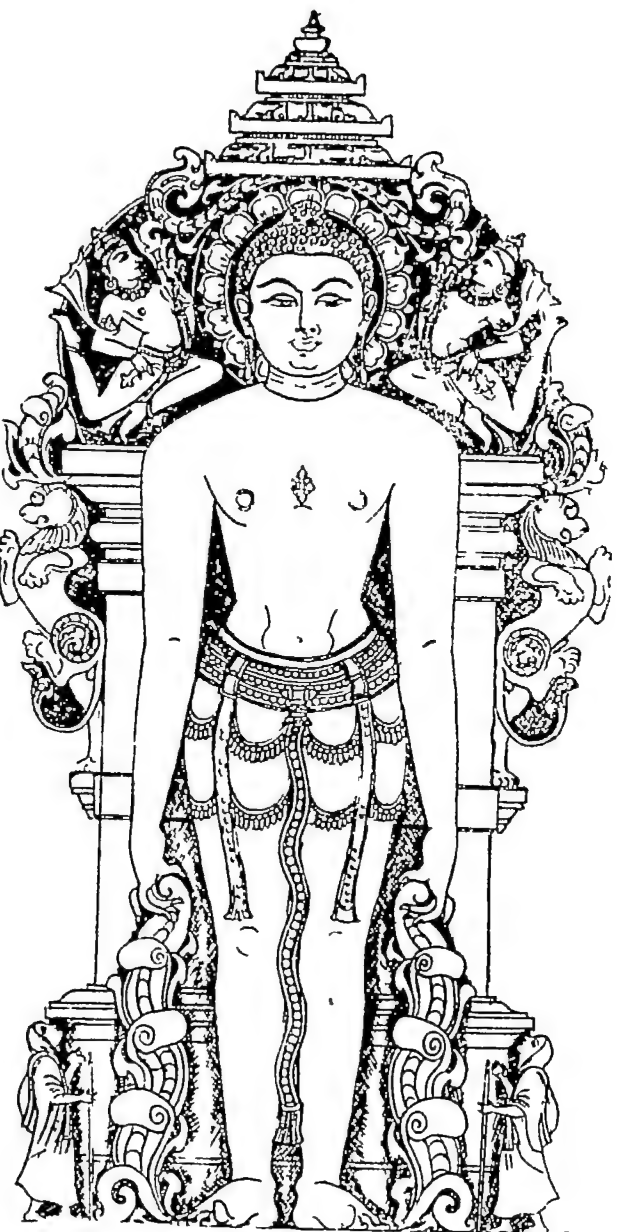
Front Elevations of Temples



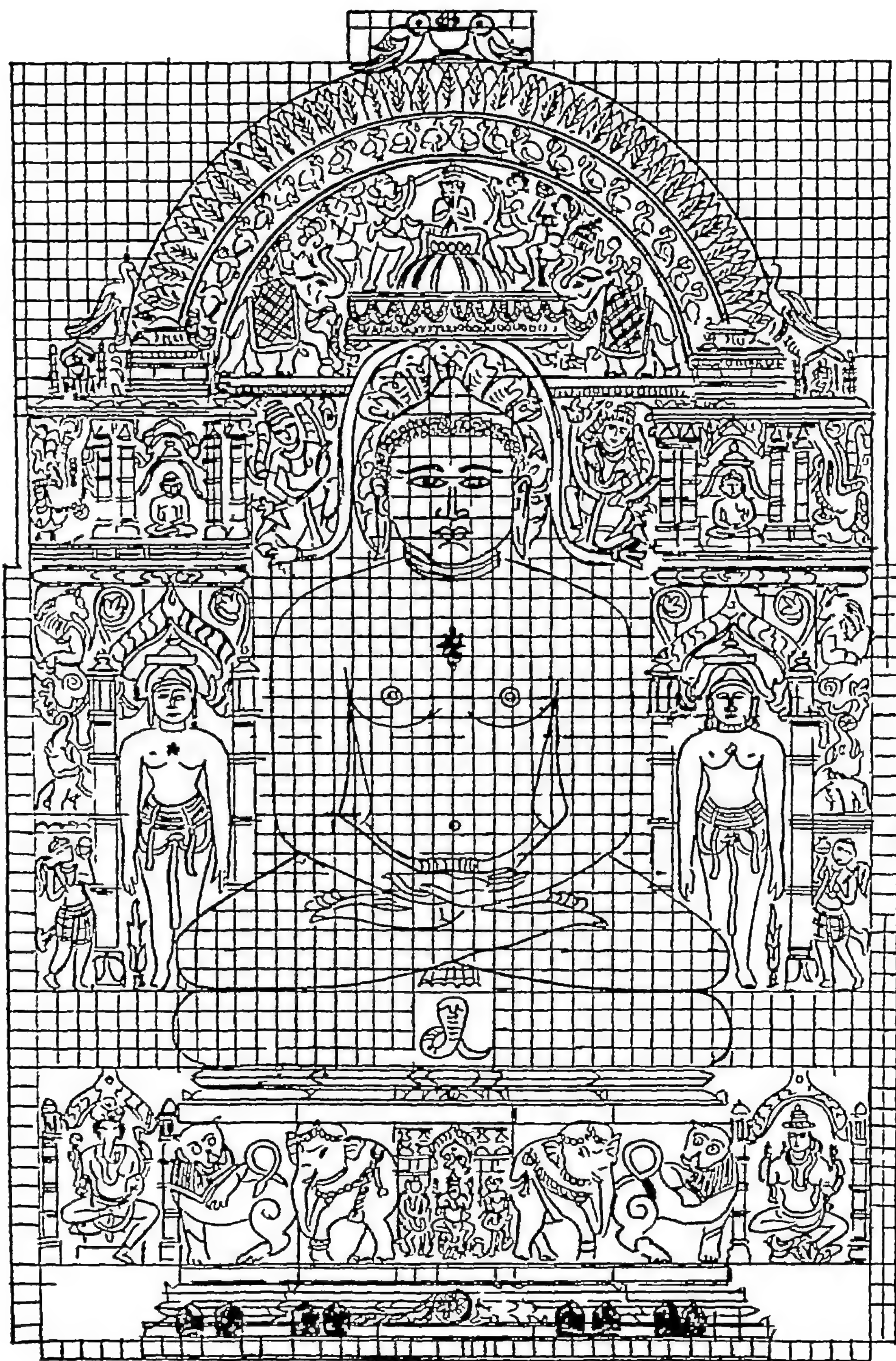
गुप्तकालीन जैन परिकर *Jain Parikara of Gupta Period*



बुद्ध *Buddha*



कायोत्सर्ग *Kayotsarga*



जैन मूर्ति परिकरसह
Jain Image with Parikara

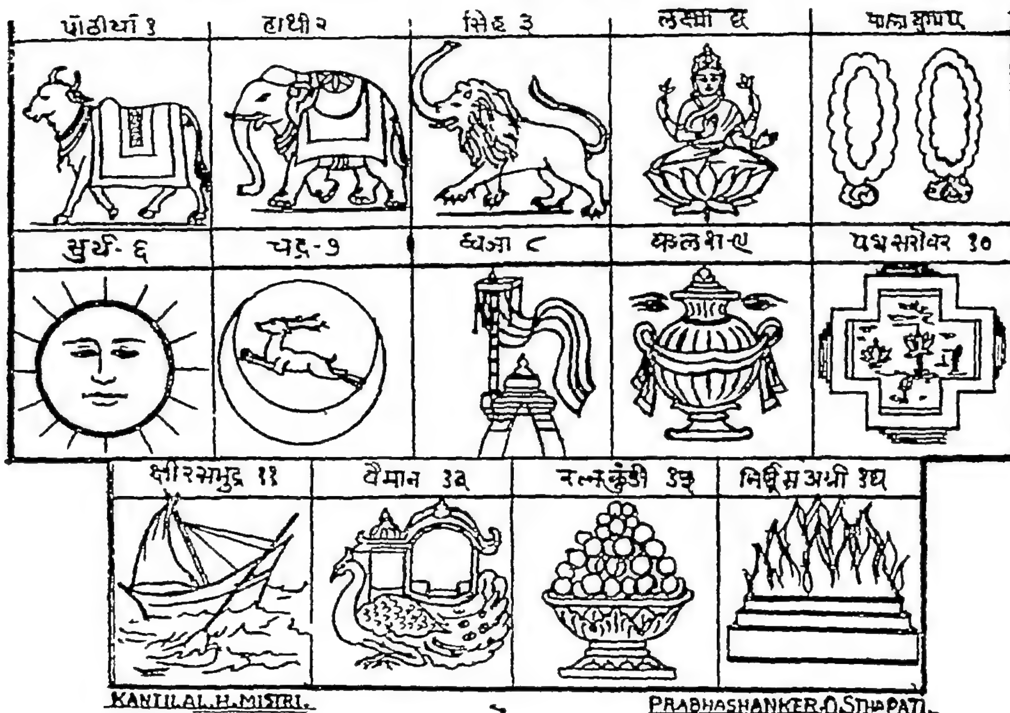


जैन मूर्ति का परिकर—पक्षदर्शन *Side Elevation of Jain Image and Parikara*

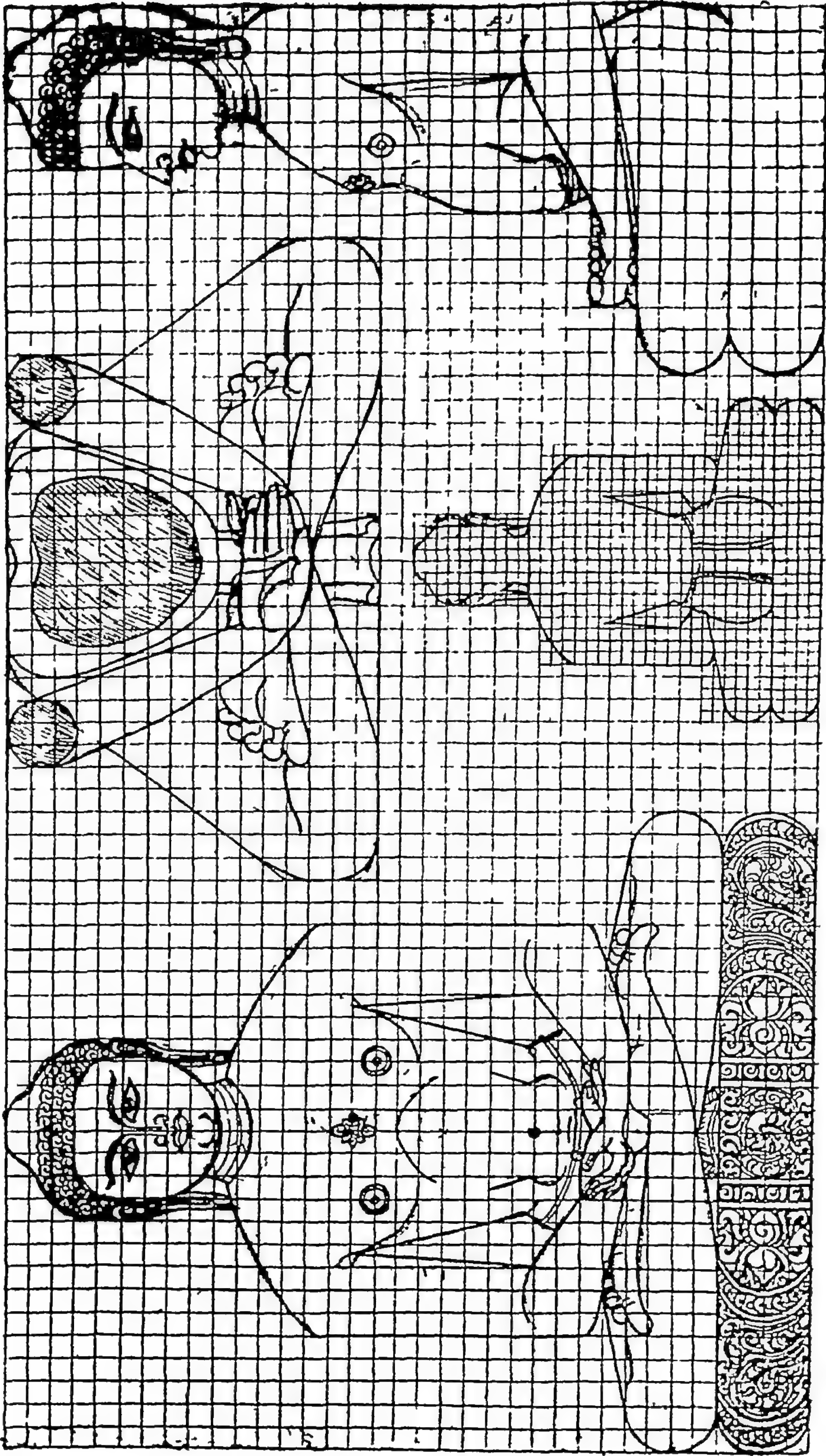
जैनमूर्ति का परिकर *Jain-Parikara, Ornamental Frame*



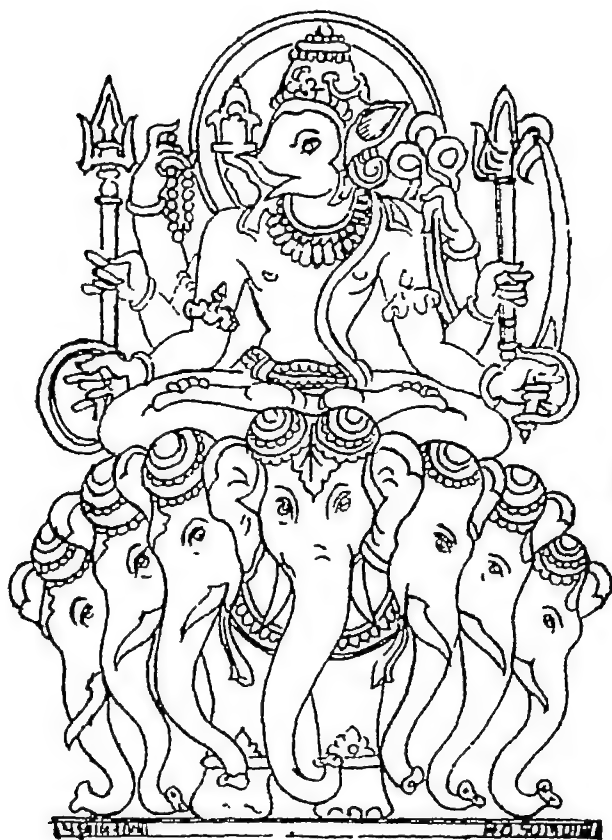
जैन तीर्थंकरो के लाछन *Identification of Jain Tirthankaras*



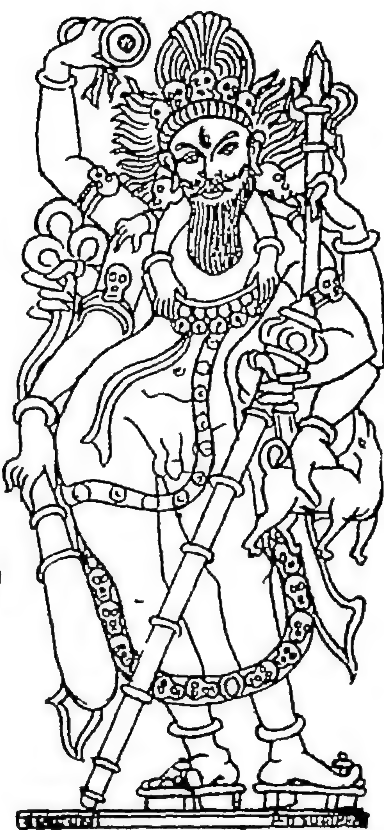
चौदह-स्वप्न *Fourteen Dreams*



जैन प्रतिमा का अंग विभाग
Divisions and Proportions of Jain Images



मणिभद्र *Manibhadra*



भैरव *Bhairava*

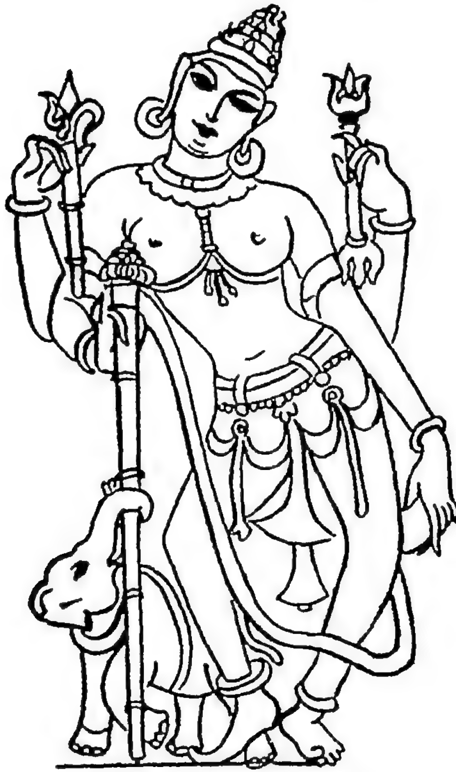


अपराजिता *Aparajita*

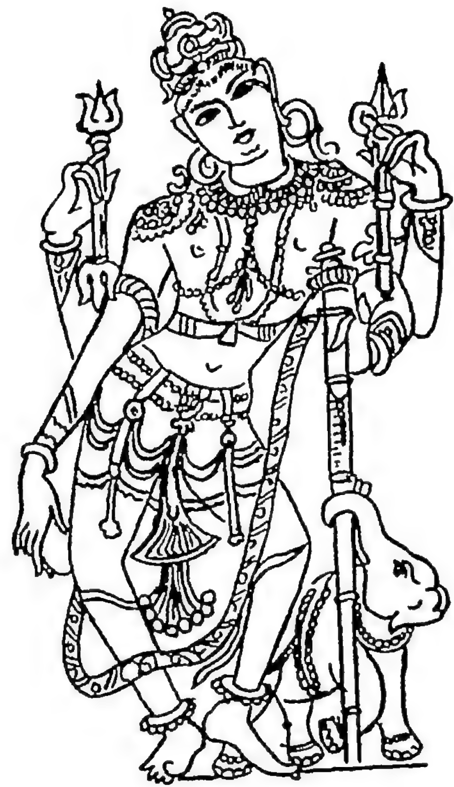


श्रुतदेवी सरस्वती *Saraswati*

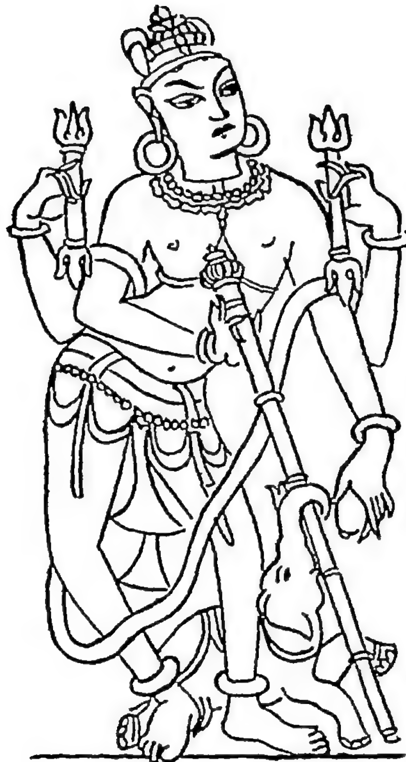
जैन अष्ट प्रतिहार *Jain Door Guardians*



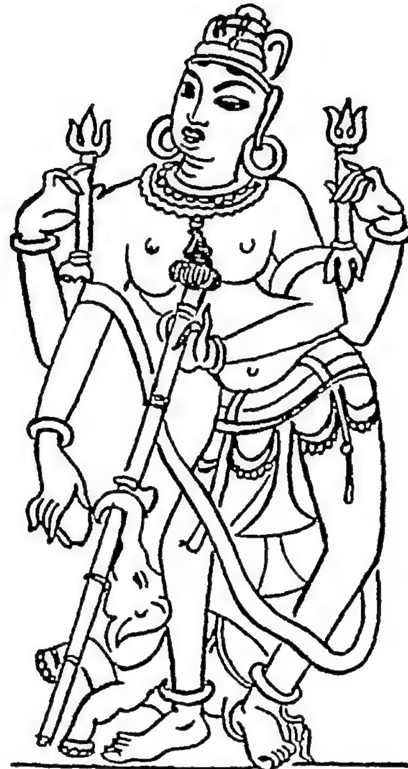
पूर्वे इन्द्रजय INDRAJAYA



पूर्वे इन्द्र INDRA



दक्षिणे विजय VIJAYA

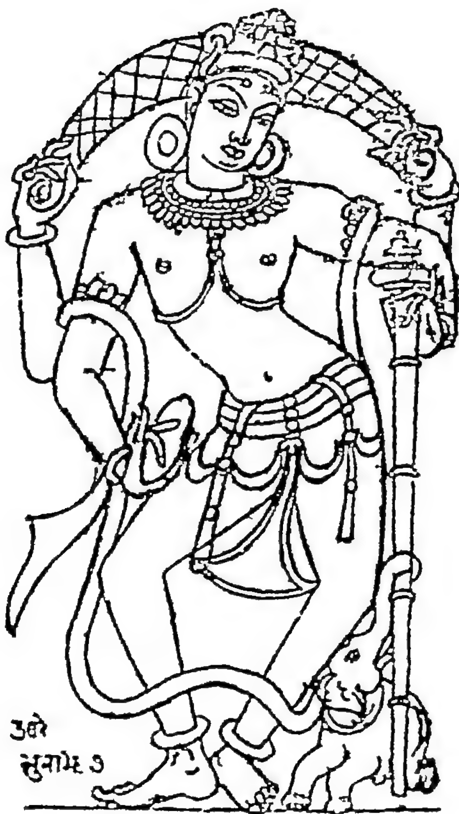


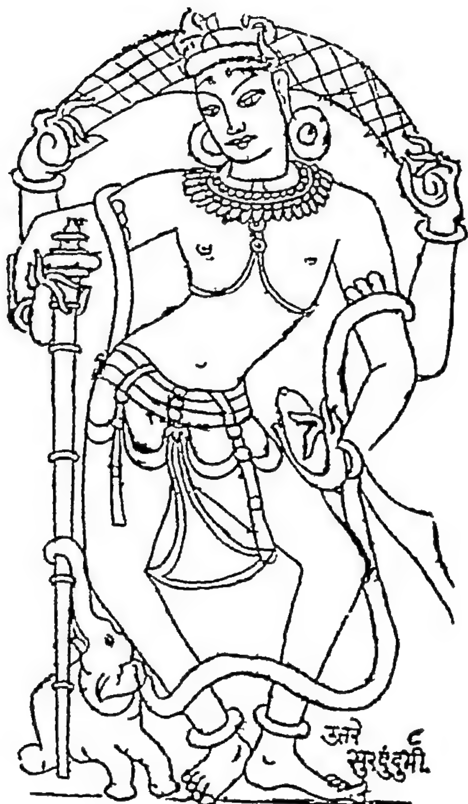
दक्षिणे माहेंद्र MAHENDRA



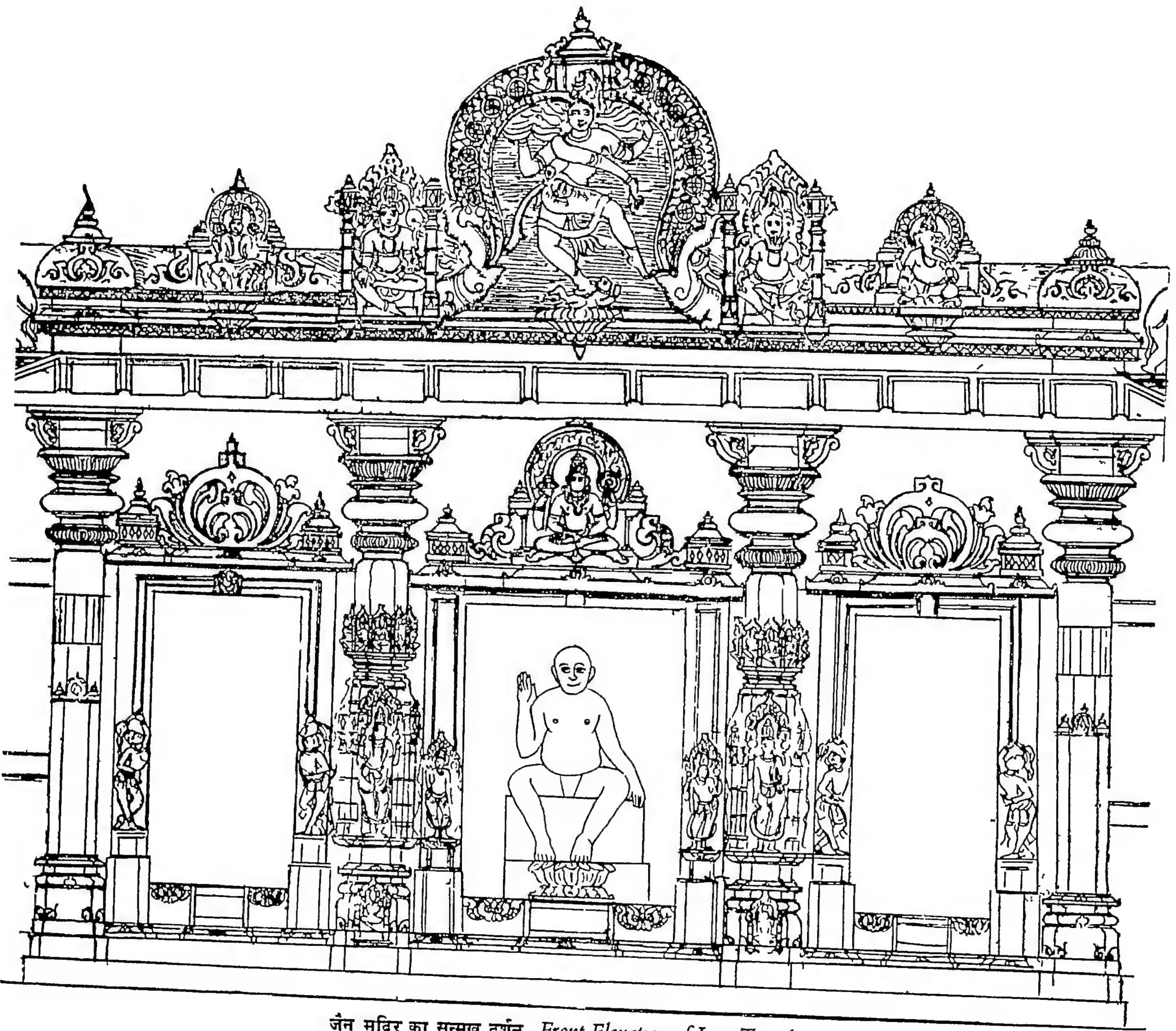


धरणेंद्र *Dharanendra* पश्चिम *West* पद्मक *Padmaka*

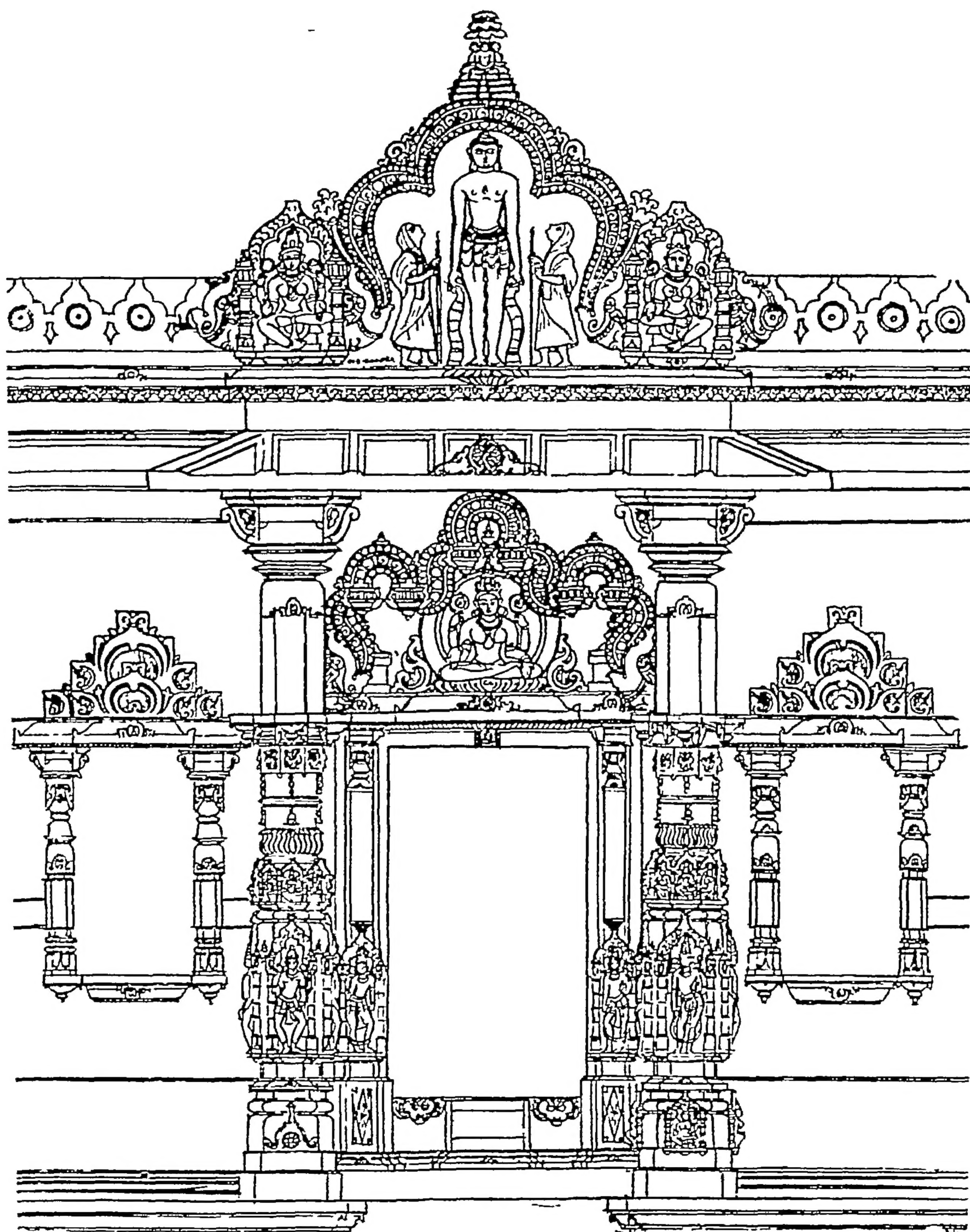




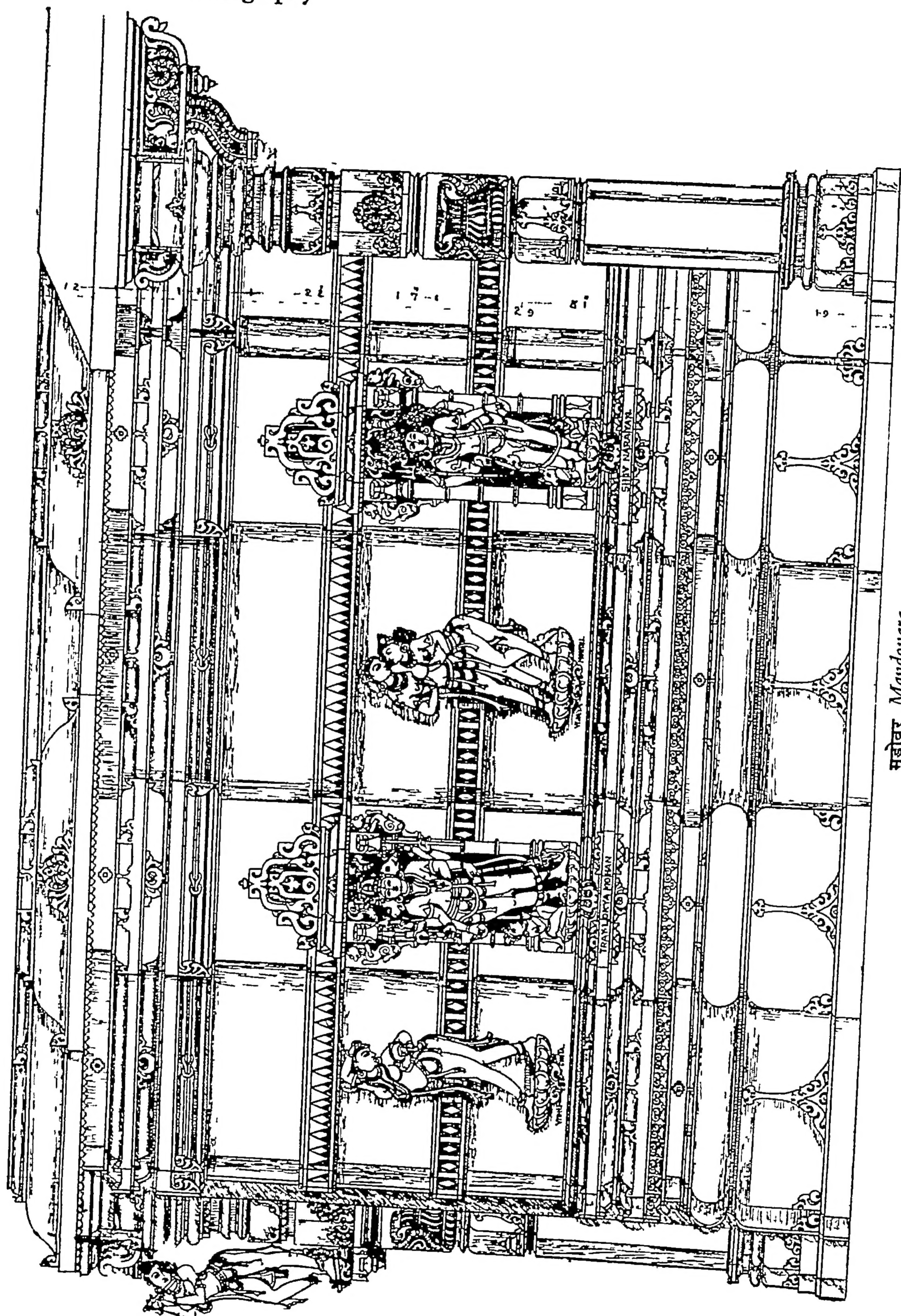
सुनाभ *Sunabha* उत्तर *North* सुरदुदुभि *Suradundubhi*



जैन मदिर का सन्मुख दर्शन *Front Elevation of Jain Temple*



जैन मदिर का सन्मुख दर्शन
Front Elevation of Jain Temple



मण्डोवर *Mandovara*

प्रज्ञश्री प्रभाशंकर ओ. सोमपुरा, शिल्पविशारद
प्रकाशित ग्रंथ

१	दीपार्णव (पूर्वार्ध)-गुजराती (*Deparnava*, Part I—Gujarati)	Rs 50
२	दीपार्णव (उत्तरार्ध)-गुजराती (*Deparnava*, Part II—Gujarati)	Rs 20
३	क्षीरार्णव (हिंदी-गुजराती) (*Ksheerarnava*—Hindi-Gujarati)	Rs 25
४	प्रासादमजरी-गुजराती अनुवाद (*Prasadamanjari*—Gujarati)	Rs 7
५	प्रासादमजरी-हिंदी अनुवाद (*Prasadamanjari*—Hindi Translation)	Rs 7
७	वास्तुसार-गुजराती (*Vastusara*—Gujarati)	Rs 15
८	वास्तु कलानिधि-हिंदी-अग्रेजी (*Album of Indian Architectural Designs*)	Rs 60
९	प्रतिमा कलानिधि-हिंदी-अग्रेजी (*Album of Hindu Iconography*)	Rs 45
१०.	वेदवास्तु प्रभाकर–हिंदी-गुजराती (*Veda Vastu Prabhakar*—Hindi-Gujarati)	Rs 10
११	जिन दर्शन शिल्प-गुजराती (*Jina Darshan Shilpa*—Gujarati)	Rs 10
१२	भारतीय दुर्गविधान-गुजराती (*Bharatiya Durga Vidhan*—Gujarati)	Rs 35
१३	भारतीय शिल्पसहिता-हिंदी (*Bharatiya Shilpa Samhita*—Hindi) (The above two books are available from Somaiya Publications Pvt Ltd., 172, Naigaum Cross Road, Dadar, Bombay-14)	Rs 125
१४	वृक्षार्णव (*Vrikshamava*)	
१५.	वास्तुशास्त्र जयपृच्छा (*Vastushastra Jayapruchchha*)	
१६	वास्तुविद्या (*Vastuvidya*)	
१७	वास्तु निघटु (शब्दकोश) (*Vastunighantu*)	